दुनिया की मज़म्मत

(कुरान व अहादीस की रौशनी में)

दुनिया मलऊन है
दुनिया ज़लील है
दुनिया हक़ीर है
दुनिया ग़लीज़ है
दुनिया कमीनी है
दुनिया व माल फ़ित्ना है
दुनिया मुर्दार की मिस्ल है
दुनिया हलाकत का घर है
दुनिया आज़माइश का घर है



मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

दुनिया की मज़म्मत

(कुरान व अहादीस की रोशनी में)

मुअ़ल्लिफ़
डा०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
09897626182

नाम किताब– **दुनिया की मज़म्मत**

मुअल्लिफ़–**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअत–जुलाई– **2022**

कम्पोज़िंग–**जुनैद अ़ली क़ादरी सफ़वी &**
ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी सफ़वी

क़ीमत– **170/-** रुपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

–:तम्हीद:–

अल्लाह तबारक व तअ़ाला की तख़लीक़ कर्दा तमाम अशया में माल व दुनिया सबसे बुरी और क़ाबिले मज़म्मत शैः है दुनिया मलऊ़न है, दुनिया ज़लील है दुनिया ग़लीज़ है और फ़ित्ना–ए–अ़ज़ीम है सिवाये उसके जो अल्लाह तअ़ाला के लिये है और दुनिया राहगुज़र के लिये एक पुल की मिस्ल हैसियत रखती है अल्लाह तबारक व तअ़ाला और उसके हबीब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के नज़दीक दुनिया व मताअ़े दुनिया बदतरीन शैः और बड़ी आज़माइश है इसकी मुहब्बत व रग़बत इन्सान को यादे खुदा से ग़ाफ़िल और आख़िरत से बे ख़ौफ़ कर देती है और ये जन्नत से दूर और जहन्नम के क़रीब ले जाती है और अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ बना देती है।

ऐ इब्ने आदम तुझे तो जन्नत का तलबगार होना चाहिये था मगर तू तो दुनिया की मुहब्बत में मुब्तिला हो गया और तुझे तो अल्लाह तबारक व तअ़ाला की और उसके हबीब (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत और उनके दीदार का मुश्ताक़ व तलबगार होना चाहिये था मगर तू इस मलऊ़न, ज़लील व फ़ानी और बेवफ़ा दुनिया की मुहब्बत व ख़्वाहिश में गिरफ़्तार हो गया और उसकी ज़ैबो ज़ीनत व आराइश में ग़र्क़ हो गया हत्ता कि अपनी मौत व अ़ज़ाबे क़ब्र और अ़ज़ाबे

क़यामत और दोज़ख़ के दर्दनाक व सख़्त तरीन अ़ज़ाब को भूल गया और ना फ़रमान व ना शुक्रा हो गया ऐ इब्ने आदम तू उन बेशुमार नेअ़मतों व राहतों को भूल गया जो अल्लाह तआ़ला ने तुझे अ़ता कीं क्या तुझे इस दुनिया को छोड़कर जाना नहीं है क्या तुझे अल्लाह तआ़ला को अपने सब आअ़मालों का हिसाब देना नहीं है और क्या तुझे दोज़ख़ की दहकती हुई आग के शोअ़लों से डर नहीं लगता क्या तुझे क़ब्र के अंधेरों और क़ब्र में मुसल्लत होने वाले दर्दनाक अ़ज़ाब से डर नहीं लगता क्या अल्लाह का ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से क्या तेरा माल तुझे बचा सकेगा और क्या क़ब्र के ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब से तेरा माल तुझे तहफ़्फ़ुज़ दे सकेगा क्या क़यामत के रोज़ तेरे बुरे आअ़माल के सबब मुसल्लत होने वाले ख़ौफ़नाक व दर्दनाक अ़ज़ाब से तेरा माल तुझे निजात दिला सकेगा।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तेरे लिये जन्नत को आरास्ता किया और तू उसे ठोकर मार रहा है और दोज़ख़ की आग में खुद को ढकेल रहा है माल व मताअ़ की मुहब्बत और तेरे बुरे आअ़माल के सबब तेरी क़ब्र इंतिहाई ख़ौफ़नाक होगी और तुझे कोई बचाने वाला न होगा और सफ़रे बरज़ख़ दूर का होगा और तेरे पास उस सफर को तैः करने के लिये न कोई माल होगा न कोई सामान होगा तो फिर तू उस तवील सफ़र को कैसे तैः करेगा रोज़े क़यामत पुलसिरात बारीक होगी जिसे तू कैसे पार करेगा व दोज़ख़ की आग

सख़्त गरम होगी और तेरा जिस्म कमज़ोर होगा और तू वहाँ से जन्नत को देखेगा जो कि इंतिहाई हसीन व जमील और बहुत खूबसूरत होगी मगर तू वहाँ तक पहुँच न सकेगा रोज़े क़यामत सूरज बहुत नज़दीक होगा जिसके सबब इंतिहाई सख़्त गर्मी व शिद्दत की तेज़ धूप होगी जिसके सबब तेरा जिस्म फटने के क़रीब होगा और तेरा दिमाग़ खौलता होगा और वहाँ पर अल्लाह तआ़ाला की रहमत के साये के सिवा कोई साया न होगा कि जिसके नीचे तू खड़ा हो सके इसलिये अभी भी वक़्त है कि माल व दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को दिल से निकाल फेंक और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत से दिल को आरास्ता व मुज़य्यन कर और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार और कसरत से नेक आअ़माल कर

ऐ इब्ने आदम माल व दुनिया की मुहब्बत व रग़बत व ख़्वाहिशात की पैर'वी तमाम गुनाहों की जड़ है और तेरे गुनाह और सरकशी को अल्लाह तआ़ाला खूब जानता है कहीं तेरे गुनाहों के सबब तुझे दोज़ख़ में दाख़िल न कर दिया जाये और तू उस दोज़ख़ की आग में जलता रहे और चिल्लाता रहे और वहाँ तेरी कोई मदद न कर सकेगा पस तू छोड़ दे हर उस शैः को जो तेरे रब को पसंद नहीं और उस शैः से मुन्सलिक हो जा जो तेरे रब को पसंद हो और तौबा कर और दुनिया व-

मताअ़े दुनिया की तलब, व मुहब्बत व रग़बत और ख़्वााहिश को अलविदा कह दे और अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के हुक्म के ताबैअ़ हो जा और अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त में तू अपनी तमाम ज़िन्दगी को सर्फ़ कर दे ताकि तेरी आख़िरत बेहतर और-उ़म्दाह हो जाये और आख़िरत के सफ़र के लिये नेक आअ़माल जमाअ़ कर जो सफ़रे आख़िरत में तेरे काम आयें और अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर अल्लाह तबारक व तअ़ाला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है अल्लाह तअ़ाला हम तमाम उम्मते मुस्लिमा के दिलों में दुनिया से बे रग़बती और आख़िरत की तरफ़ रग़बत और तेरे और तेरे हबीब की इताअ़त और कसरत से नेक आअ़माल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये। -आमीन

फ़क़ीर
डा० आज़म बेग क़ादरी
सफ़वी 09897626182

-: दुनिया की ताअ़रीफ़ :-

दुनिया का लुग़वी माअ़ना है तमाम ज़मीन और ज़मीन पर मौजूद हर एक शैः व आ़लम, जहान और मौजूदा ज़िन्दगी और लोग और सोना, चाँदी, हीरे, मोती और माल दौलत व जायदाद व ज़रुरी और ग़ैर ज़रुरी तमाम अशया और माल व सोना चाँदी वग़ैराह से ख़रीदी जाने वाली तमाम ज़रुरी व ग़ैर ज़रुरी चीज़ें दुनिया में दाख़िल हैं दुन्यावी चीज़ों की तीन क़िस्में हैं।

1-वो चीज़ें जो अल्लाह तआ़ला के लिये हों और वो चीज़ें जिससे इन्सान आख़िरत में नफ़अ़ उठाये जैसे इ़ल्म और नेक अ़मल के लिये इस्तेअ़माल होने वाली चीज़ें और हलाल व जाइज़ तरीक़े से कमाया गया माल जिसके हुक़ूक़ और जक़ात अदा की गई हो और वो माले हलाल जो राहे खुदा में ख़र्च हो और दीनी किताबें जिससे लोग दुनिया व आख़िरत में नफ़अ़ उठायें और अल्लाह तआ़ला और उसके हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इताअ़त और तबलीग़े दीन के इस्तेअ़माल में होने वाली तमाम अशया वग़ैराह और हर वो शैः जो अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब बन्दों से वाबस्ता हों वो हर शैः उ़म्दाह व बेहतर और अज्रो सवाब का बाइस हैं।

2-वो चीज़ें जिनका फ़ायदा सिर्फ़ दुनिया तक ही-

महदूद हों यानी आख़िरत में उससे कोई नफ़ाअ़ हासिल न हो और लज़्ज़ात, शहबात व नफ़्सानी ख़्वाहिशात के बाइस गुनाह के काम करना और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और हिर्स व लोगों से सबक़त हासिल करने की गरज़ से ज़रुरत से ज़्यादा सोना, चाँदी, माल, दौलत, ज़मीन, जायदाद व दीगर अशया से मुहब्बत व रग़बत और इनका जमाअ़ करना वग़ैराह ये सब दुनिया की क़ाबिले मज़म्मत क़िस्म में शामिल है।

3–वो चीज़ें जो अस्ल ज़रुरत की हों और नेकियों पर मदद देने वाली हों जैसे ज़रुरी गिज़ा, ज़रुरी कपड़े, ज़रुरी ताअ़मीरात ज़रुरत के मुताबिक़ माल व सोना चाँदी वग़ैराह और वो माल जो कारे ख़ैर में ख़र्च हो या वालिदैन और अह्ल व अ़याल पर ज़रुरत के मुताबिक़ ख़र्च हो और बच्चों की दीनी ताअ़लीमो तरबियत पर ख़र्च हो दुनिया ये क़िस्म अच्छी है लेकिन अगर इससे सिर्फ़ दुनिया का फ़ायदा उठाना और लज़्ज़त मक़सूद हो तो अब ये दुनिया भी क़ाबिले मज़म्मत कहलायेगी।

-: माल फ़ित्ना है :-

दुनिया की मुहब्बत तमाम फ़ित्नों की जड़ है और इसकी रग़बत व इससे दोस्ती तमाम गुनाहों का सर चश्मा है और नफ़्से इन्सानी का दुनिया की मुहब्बत व दोस्ती की तरफ़ रग़बत व मैलान अल्लाह तआ़ला से दूरी और शैतान की कुर्बत का सबब है और अल्लाह तआ़ला के दुश्मनों से दोस्ती की अ़लामत है क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला की तमाम तख़्लीक़ कर्दा मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा ज़लील तरीन चीज़ दुनिया है जो अल्लाह तआ़ला की दुश्मन है

और बिल फ़र्ज़ अगर सारी दुनिया पूरी की पूरी अगर किसी शख़्स को दे दी जाये तो फिर भी वो दुनिया से उतना ही हासिल कर सकेगा जो कि उसका पेट भरने और तन ढकने के लिये काफ़ी हो इससे ज़्यादा वो अपने जिस्म के लिये हरगिज़ इस्तेअ़माल न कर सकेगा यहाँ तक कि जब वो दुनिया से रुख़सत होगा तो वो मुफ़लिस व मोहताज होगा दानाओं का क़ौल है कि लालची शख़्स से ज़्यादा कोई शख़्स मुब्तिला-ए-रंजो ग़म और मुफ़लिस नहीं होता और लालच के सबब वो सरकशी व गुनाहों में मुब्तिला हो जाता है और अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ हो जाता है और साबिर से ज़्यादा ऐश किसी को मयस्सर नहीं होती और हासिद से ज्यादा रंजो गम व मुसीबत व बेक़रारी

किसी को बर्दाश्त नहीं करनी पड़ती और आ़लिमे बदकार से ज़्यादा नादिम और परेशान कोई नहीं होता और दो चीज़ें लोगों की हलाकत का बाइस होती हैं एक ये कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे मारे मारे फिरना व दूसरी अपनी ताअ़रीफ़ सुनने को महबूब रखना और माल व दौलत और जाह (रुतबा, मर्तबा) की मुहब्बत व रग़बत मुसलमान के दिल को तारीक और वीरान कर देती है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जान लो कि तुम्हारे माल व तुम्हारी औलाद तो बस फ़ित्ना ही हैं और ये कि अल्लाह ही है जिसके पास अज्रे अ़ज़ीम है (सू०–अनफ़ाल–8/28)

अल्लाह तआ़ला ने माल व दौलत और औलाद की जो नेअ़मतें हमें अ़ता फ़रमाई हैं वो हमारे लिये अ़ज़ीम फ़ित्ना और बड़ी आज़माइश हैं और अल्लाह तआ़ला इन्हीं के ज़रिये हमें आज़माता है और देखता है कि तुम अल्लाह तआ़ला के हुकूक़ किस तरह अदा करते हो और अल्लाह तआ़ला के अहकामात पर अ़मल करने में मालो दौलत व औलाद की मुहब्बत तुम्हारे लिये रुकावट बनती है या नहीं और मेरे बन्दे मेरी बेशुमार नेअ़मतो पर मेरा शुक्र अदा करते हैं या नहीं और वो मेरी इताअ़त करते हैं या नहीं या फिर वो माल और औलाद की मुहब्बत में फंसकर अल्लाह तआ़ला के अहकामात व उसकी इताअ़त से हट जाते हैं बसा औक़ात माल व औलाद की मुहब्बत में बन्दा

ख़्वाहिशाते नफ़्स को अल्लाह तबारक व तअ़ाला के अहकामात व इताअ़त पर तरजीह देते हैं मगर अ़क़्लमंद आदमी अल्लाह तअ़ाला की मुहब्बत व इताअ़त को माल व औलाद पर तरजीह देता है क्योंकि वो जानता है कि दुनिया फ़ानी व ख़त्म हो जाने वाली लज़्ज़त है और अल्लाह की मुहब्बत व उसकी इताअ़त के सबब आख़िरत में मिलने वाली नेअ़मतें अब्दी व दायमी हैं और उस पर अल्लाह का फ़ज़्ले अ़ज़ीम और बेशुमार अज्रो सवाब जो कि ला महदूद है इसलिये अ़क़्लमंद शख़्स पाकीज़ा और बेहतरीन और कभी भी ख़त्म न होने वाली नेअ़मतों को तरजीह देता है

और जब इन्सान पर बीवी व औलाद की मुहब्बत का ग़लबा हो जाता है तो उसकी तवज्जो सिर्फ़ बीवी बच्चों की तरफ़ रहती है और उसके तमाम आअ़माल बीवी बच्चों के लिये ही अन्जाम पाते हैं और उनकी मुहब्बत व इताअ़त के सबब वो हराम व हलाल और नेकी व शर में इम्तियाज़ नहीं करता और वो उन्हीं के लिये अपनी तमाम ज़िन्दगी को वक़्फ़ कर देता है हत्ता कि अल्लाह तआला और उसके अहकामात पर ग़ौरो फ़िक्र भी नहीं करता और आख़िरत में मिलने वाले दर्दनाक अज़ाब व निहायत सख़्त मसाइबो आलाम को भूल जाता है और वो ग़ाफ़िल हो जाता है और बाअ़ज़ औक़ात तो वो ये भी भूल जाता है कि उसे मरना भी है क़ब्र में दफ़न होना भी है क़ब्र में अ़ज़ाब भी मिलना है फिर क़यामत के दिन आअ़माल का

हिसाब भी होना है और बुरे आअ़माल के सबब दोज़ख़ की दहकती हुई आग में दाख़िला इन सब बातों से वो बे फ़िक्र और बे पर‘वाह हो जाता है बस उसे तो अपनी और अपने बीवी बच्चों की हर वक़्त फ़िक्र रहती है

इसलिये उसकी ज़िन्दगी का एक ही मक़सद रह जाता है कि सिर्फ़ ज़्यादा से ज़्यादा माल व दौलत कमाना और उसे अपनी और अपने बीवी बच्चों की ऐशो इशरत पर ख़र्च करना और खुद पर फ़ख़्र व तकब्बुर करना और ज़्यादा से ज़्यादा माल को जमाअ़ करना व उससे ज़मीनो जायदाद ख़रीदना और सोना चांदी ख़रीदना और फिर उस माल की मुहब्बत का उस पर ग़लबा हो जाता है जो उसके लिये फ़ित्ना और बड़ी आज़माइश होता है और वो अल्लाह तआ़ला से तआ़ल्लुक़ तोड़ लेता और शैतान की राह इख़्तियार कर लेता है और शैतान के जाल में फंस जाता है और वो माल की मुहब्बत के सबब अपने माल को बढ़ाने में मशगूल हो जाता है और फिर वो अपने माल में मज़ीद इज़ाफ़ा करता रहता है हत्ता कि वो ये भी भूल जाता है कि कसीर माल के बावजूद जब वो मरकर दुनिया से रुख़सत होगा तो वो मुफ़लिस व मुहताज होगा व जो माल उसने जमाअ़ किया और उसमें से राहे खुदा में ख़र्च नहीं किया तो वो ही माल उसके लिये वबाले जान होगा।

इस आयत में माल से मुराद रुपया पैसा

सोना चाँदी, हीरे मोती, ज़मीन जायदाद वग़ैराह हैं और औलाद से मुराद बेटा बेटी, पोता पोती और नवासा नवासी हैं और फ़ित्ने से मुराद आज़माइश व आफ़त और बला है क्योंकि इन्सान इन्हीं की वजह से अल्लाह व रसूल से ग़ाफ़िल व नाफ़रमान हो जाता है और अक्सर माल व औलाद गुनाहों व ग़फ़लतों का सबब बनते हैं।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला इन्सान को माल व औलाद देकर परख लेता है कि माअ़सियत में मुब्तिला होने वाले कौन हैं और इताअ़त गुज़ार कौन हैं तो रब तअ़ाला के पास जो अज्रे अ़ज़ीम है उस पर निगाह रखो और दुनिया से ज़रुरत के मुताबिक़ ही लो और बाक़ी को छोड़ दो सलफ़े सालिहीन ने हमेशा मालो मताअ़ से किनारा कशी इख़्तियार की और औलाद से भी दायरा-ए-हुदूद तअ़ाल्लुक़ी मुहब्बत की और हक़ीक़ी मुहब्बत सिर्फ़ रब तअ़ाला से की क्योंकि ये चीज़ें यादे इलाही से ग़ाफ़िल कर देती हैं इसीलिये हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो मेरे व मेरे अह्ले बैत से बुग्ज़ रखता हो और मेरी दाअ़वत कुबूल नहीं करता हो तो ऐ अल्लाह तू उसके माल व औलाद में कसरत अ़ता फ़रमां तो अगर तुम अपने माल व औलाद की पर‘वाह न करते हुये रब को राज़ी करोगे तो तुम बड़ी आज़माइश में कामयाब होगे और उसके पास बड़ा अज्र पाओगे अगर तुम इस आज़माइश में फेल हुये तो नुक़सान में रहोगे तो दोंनों रास्ते तुम्हारे लिये वाज़ेह हैं सो तुम जो चाहो इख़्तियार

करो और माल व औलाद के मुक़ाबले में रिज़ाए इलाही हासिल करो क्योंकि अल्लाह के पास अ़ज़ी मुश्शान दायमी अज्रो सवाब तुम्हारे लिये मौजूद है और इस बात पर कामिल यक़ीन रखो कि अपने माल व औलाद में जितना तुम अल्लाह तआ़ला के अहकाम के मुताबिक़ आअ़माल करते हो उसका सवाब अल्लाह तआ़ला के पास है लिहाज़ा तुम अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करो ताकि आख़िरत में तुम्हें बेशुमार अज्र दिया जाये।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक बड़ी आज़माइश है और अल्लाह ही है कि जिसके पास बड़ा अज्र है। (सू०–तग़ाबुन–64/15)

इस आयते करीमा में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अह्ले ईमान को तम्बीय फ़रमाई है कि माल व औलाद एक बड़ी आज़माइश हैं क्योंकि इन्सान इन्हीं की मुहब्बत में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की नाफ़रमानी करता है और माल व औलाद की मुहब्बत के सबब बन्दा अल्लाह तबारक व तआ़ला के ख़ौफ़ और अपनी आख़िरत के अन्जाम से बे–पर‘वाह और बे फ़िक्र हो जाता है और गुनाह व माअ़सियत में मुब्तिला होकर ग़फ़लत के अंधेरों में ग़र्क़ होता चला जाता है और माल व जाह की तलब व ख़्वाहिश उसे अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर देती है और इस आयत में रब तआला ने–

अहले ईमान को अपने अहकामात की ताअ़मील, आख़िरत के सवाबे अ़ज़ीम और माल व औलाद पर रब तआ़ला की रिज़ा को मुक़द्दम रखने और इस अम्र की तरग़ीब दी है कि वो आख़िरत को ख़त्म हो जाने वाली फ़ानी दुनिया पर तरजीह दें।

दुनिया दर हक़ीक़त मैले कुचैले मुर्दार की मानिन्द है तुम देखते नहीं कि इसके लज़ीज़ खाने थोड़ी देर में बदबूदार और गन्दगी बन जाते हैं और इसकी ज़ैबो ज़ीनत वाली चीज़ें ख़राब और फ़ना और माअ़दूम हो जाती हैं मगर रब तआ़ला ने इसके ज़ाहिर को खुश्बूदार मुज़य्यन कर दिया है सो ग़ाफिल इसके ज़ाहिर को देखकर धोके में आ जाते हैं मगर अ़क्लमंद लोगों ने इससे किनारा कशी इख़्तियार की है और वो लोग दुनिया को बहुत माअ़मूली और बा क़दरे ज़रुरत इस्तिअ़माल करते हैं मक़सूद ये कि फ़िज़ूल, ज़ायद और ग़ैर ज़रुरी अशया से इजतिनाब करना हर शख़्स के लिये दुनिया व आख़िरत में बेहतरी और अज्रे अ़ज़ीम का बाइस है।

➡ हज़रत काअ़ब (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़ित्ना होता था और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/194-ह०–2336)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/252-ह०–10309)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/305-ह०–3223)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/179-ह०–404)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे कि हज़रत हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आये उन दोंनों शहज़ादों ने सुर्ख़ कपड़े पहन रखे थे और गिरते गिराते (यानी बचपन की उ़म्र की वजह से) चले आ रहे थे उन दोंनों शहज़ादों को देखकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने खुत्बा रोक दिया और मिम्बर से उतरकर उन्हें उठा लिया और फिर दोबारा मिम्बर पर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया "बेशक तुम्हारे अमवाल व औलाद बस फ़ित्ना ही हैं" कि देखो मैंने इन दोंनों को देखा कि वो अपने कुर्तों में गिरते चले आ रहे हैं तो मैं सब्र न कर सका (यानी मुझे घबराहट हुई कि गिरकर इन्हें कहीं चोट न लग जाये और मैंने खुत्बा मौकूफ़ करके इन्हें उठा लिया)
(इब्ने माजा–सुनन–3/163-ह०–3600)
(अबू दाऊद–सुनन–1/784-ह०–1109)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1092-ह०–3774)
(नसाई–सुनन–3/456-ह०–4993)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/127-ह०–6039)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मीठी सर सब्ज़ है और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल को जानने वाला है कि तुम कैसे आअ़माल करते हो सो तुम दुनिया व औ़रतों के फ़ित्नों से बचो।

(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6511)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/251-ह०–10301,10304)

जब क़ल्ब अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत से मुज़य्यन होने की बजाये जब माल व औलाद की मुहब्बत से लबरेज़ होता है और जब माल व औलाद की शदीद मुहब्बत अपनी इन्तिहां को पहुँचती है तो फिर ये मुहब्बत उसके लिये आफ़त व हलाकत बन जाती है फिर वो नफ़्स का ताबेअ़ हो जाता है जो उसे शर व गुनाह की तरफ़ माइल करती है और वो गुनाहों के दलदल में फंस जाता है और वो अपनी आख़िरत तबाह व बर्बाद कर लेता है।

हालाँकि बीवी व औलाद से मुहब्बत करना नाजाइज़ नहीं है बल्कि उनके साथ मुहब्बत, रहम दिली व शफ़क़त व अफ़्व व दर गुज़र के साथ पेश आओ और उनसे ऐसी मुहब्बत व तआ़ल्लुक़ न हो जो तुम्हें यादे इलाही और मुहब्बते इलाही से ग़ाफ़िल कर दे और हक़ीक़ी मुहब्बत तो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला और उसके रसूल के लिये मुख़्तस हो और ये मुसलमान के ईमान के लिये शर्त और निजात का बाइस है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ नबी मुकर्रम आप फ़रमा दें अगर तुम्हारे बाप, दादा और तुम्हारे बेटे (बेटियाँ) और तुम्हारे भाई

(बहन) और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे दीगर रिश्तेदार और तुम्हारे अमवाल जो तुमने मेहनत से कमाये और तिजारत व कारोबार जिसके नुक़सान से तुम डरते हो और वो मकानात जिन्हें तुम पसंद करते हो तो तुम्हारे नज़दीक अल्लाह व उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद से ज़्यादा महबूब हैं तो फिर इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह तअ़ाला अपना हुक्मे (अ़ज़ाब) ले आये और अल्लाह तअ़ाला नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (सू०–तौबा–9/24)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्जे कुदरत में मेरी जान है कि तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसकी जान से उसके माल से और उसकी औलाद से और उसके वालिद से और दुनिया के तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।
(बुख़ारी–सहीह–1/86-ह०–14)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53-ह०–67)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया आअ़माल में से अफ़ज़ल अ़मल अल्लाह के लिये मुहब्बत करना और अल्लाह के लिये बुग्ज़ रखना है।
(अबू दाऊद–सुनन–5/500-ह०–4599)

औलिया किराम व सूफ़िया इज़ाम (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहिम) फ़रमाते हैं दुनियावी हर नेअ़मत फ़ित्ना है यानी जिसका तअ़ाल्लुक़ दुनिया से हो और दुनिया में मसाइबो आलाम का मिलना और माल व असबाब का न मिलना ये अल्लाह तअ़ाला की नेअ़मत व रहमत है और उख़र'वी नेअ़मतों का मिलना ये अल्लाह का फ़ज़्ल है यानी दुनिया में मसाइबो आलाम व माल की कमी व बीमारियों से दो चार होना और दीगर तकालीफ़ में अल्लाह तआला की ऐ़न रहमत होती है क्योंकि इसके दो अ़ज़ीम फ़ायदे हैं एक ये कि इनके सबब से रब तअ़ाला तुम्हें ग़फ़लत से निकाल कर बेदारी की तरफ़ ले जाना चाहता है और दूसरा ये कि हर मुसीबतो तकलीफ़ के ज़रिये इन्सान के गुनाहों को मिटाया जाता है

और दुनियावी नेअ़मतों का हुसूल जिसे लोग नेअ़मत तसव्वुर करते हैं मगर वो फ़ित्ना है क्योंकि माल व औलाद व दीगर नेअ़मतों के ज़रिये इन्सान को आज़माइश में डाला जाता है अगर वो उस आज़माइश में कायमाब हो गया तो ठीक है वरना दुनियावी नेअ़मतें उसे हलाक व तबाह और बर्बाद कर देती हैं और उसे जहन्नम में ले जाने के लिये काफ़ी होती हैं और उख़र'वी नेअ़मतें व सअ़ादतें ये अल्लाह तअ़ाला का अ़ज़ीम फ़ज़्ल है क्योंकि इसके सबब बन्दा क़ब्र व क़यामत के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ व मामून हो जाता है और वो जन्नत व उसकी नेअ़मतों का मुस्तहिक़ हो जाता है।

हुज़ूर की मुहब्बत के बग़ैर कोई मोमिन नहीं हो सकता

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई उस वक़्त मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक उसकी औलाद और उसके वालिद और तमाम लोंगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।
(बुख़ारी–सहीह–1/86-ह०–15)
(मुस्लिम–सहीह–1/142-ह०–169)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53-ह०–67)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/142-ह०–1374)
(मुस्नद अहमद–5/162-ह०–2148)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–7/6-ह०–3895)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसको मेरी मुहब्बत अपनी औलाद और अपने वालिदैन और तमाम लोगों से ज़्यादा न हो और तुममें से कोई भी शख़्स साहिबे ईमान नहीं हो सकता जब तक कि वो मुझसे अपने घर व माल व जायदाद और लोगों से ज़्यादा मुहब्बत न करे।
(नसाई–सुनन–3/469-ह०–5019,5020)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक ईमान की हलावत (मिठास) को नहीं पा सकता जब तक कि उसके नज़दीक अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत हर शैः से ज़्यादा न हो और वो जिससे भी मुहब्बत करे तो सिर्फ़ अल्लाह के लिये करे। (बुख़ारी–सहीह–5/601-ह०–6041)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसमें ये तीन ख़सलतें पाई जायें वो ईमान की मिठास (लज़्ज़त) को पा लेता है ये कि उसके नज़दीक अल्लाह व उसके रसूल हर शैः से ज़्यादा महबूब हों और वो किसी से भी मुहब्बत करे तो सिर्फ़ अल्लाह के लिये करे और ये कि उसे कुफ़्र में लौट जाना इतना बुरा लगे जैसे वो आग में डाले जाने का बुरा ख़्याल करता है। (मुस्लिम–सहीह–1/140-ह०–165)
(बुख़ारी–सहीह–1/87-ह०–16 व 6/311-ह०–6941)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/408-ह०–2624)
(इब्ने माजा–सुनन–3/310-ह०–4033)
(नसाई–सुनन–3/405-ह०–4992,4993)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/402-ह०–237)
(मुस्नद अहमद–3/103-ह०–12021)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हुजूर (सल्लल्लाह तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि या-रसूलल्लाह मेरी जान के अ़लावा आप मुझे हर शैः से ज़्यादा महबूब हैं तो आपने फ़रमाया नहीं-नहीं मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं हो सकता जब तक मेरी ज़ात तुम्हें अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब न हो जाये तो हज़रत उ़मर ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम आप मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा महबूब और प्यारे हैं तो आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया ऐ उ़मर अब (तेरा ईमान मुकम्मल हुआ)
(बुख़ारी-सहीह-6/143-ह०-6632)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करो उन नेअ़मतों की वजह से जो उसने तुम्हें अ़ता फ़रमाई और मुझसे अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत की ख़ातिर मुहब्बत करो और मेरे अह्ले बैत से मेरी ख़ातिर मुहब्बत करो।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1107-ह०-3789)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/295-ह०-4716)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-3/46-ह०-2639)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-1/356-ह०-408)

अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत ऐसी हो कि दुनिया की किसी चीज़ से उस क़दर मुहब्बत न हो माँ-बाप, औलाद व बीवी व तमाम इन्सानों से हत्ता कि अपनी जान से भी बढ़कर मुहब्बत हो और दुनिया, मालो मताअ़ तो कोई चीज़ ही नहीं है मगर अफ़सोस हम सिर्फ़ और सिर्फ़ नाम के मुसलमान हैं काम के नहीं दुनियावी मालो दौलत बीवी बच्चों की मुहब्बत में इस क़दर मुब्तिला हो गये हैं कि हमनें हराम व हलाल का इम्तियाज़ तक खो दिया न फ़राइज व वाजिबात अदा करने की तरफ़ रग़बत रही और न सुन्नतों पर अ़मल करने के लिये तवज्जो रही।

अल्लाह व रसूल से सच्ची व ख़ालिस मुहब्बत रखने वाला शख़्स तो वो होता है जो कि अल्लाह व रसूल के अवामिर व नवाही पर अ़मल पैरा हो व ताअ़ते इलाही के लिये हत्तल इमकान कोशिश करे और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी से इजतिनाब करे और अल्लाह तआ़ला व उसके हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की मुहब्बत में खुद को मुस्तग़रक़ कर दे और अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह व उसके रसूल के हुक्म के मुताबिक़ गुज़ारे अल्लाह तआ़ला हम मुसलमानों को अपने व अपने हबीब से हर शैः बढ़कर मुहब्बत करने व कामिल इताअ़त करने व दुनिया से बे रग़बत और आख़िरत की तरफ़ राग़िब होने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये-आमीन

माल औलाद दुनिया की ज़ीनत और नेक आअ़माल आख़िरत की ज़ीनत

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
माल व औलाद (तो सिर्फ़) दुन्यावी ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं और हक़ीक़त में बाक़ी रहने वाली (तो) नेकियाँ (हैं जो) आपके रब के नज़दीक सवाब के लिहाज़ से भी बेहतर हैं और आरज़ू (उम्मीद) के लिहाज़ से भी बेहतर हैं।. (सू०–कह्फ़–18/46)

माल व औलाद की मुहब्बत में इन्सान की दुन्यावी उम्मीदें लम्बी हो जाती हैं जो कि नेकी व ताअ़त की राह मे रुकावट और हर फ़ित्ने व शर और ग़फ़लत का सबब बनती हैं इन्सान की लम्बी उम्मीदें एक ला इलाज मर्ज़ है जो लोगों को मज़ीद मुख़्तलिफ़ अमराज़ में मुब्तिला करती हैं कि लम्बी उम्मीदें तर्के ताअ़त में ज़्यादती व इसकी अदायगी में सुस्ती पैदा करती हैं और इस मर्ज़ मे मुब्तिला शख़्स बद आअ़माली का शिकार हो जाता है और माल को जमाअ़ करने की हिर्स में इन्सान अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और जब उम्मीदें लम्बी होती जाती हैं इताअ़त का जज़्बा कम होता जाता है हत्ता कि तौबा का ख़्याल दिल से निकल जाता है और गुनाहों की कसरत हो जाती है हिर्स बढ़ जाता है और उसका दिल सख़्त हो जाता है फिर वो अपना बुरा अंजाम भूल जाता है और वो अपनी आख़िरत को तबाह व बर्बाद कर लेता है।

यही दो चीज़ें यानी माल व औलाद आख़िरत के लिये ज़ादे राह भी बन सकती हैं क्योंकि अगर माल को राहे खुदा में ख़र्च किया जाये या माल से कोई ऐसा काम किया जाये जो उसके लिये सद्क़ा-ए-ज़ारिया बने तो यही माल निजात का ज़रिया बन जाता है इसी तरह अगर औलाद को दीनी ताअ़लीम व अच्छी तरबियत दी और उसे नेकी की राह व कारे ख़ैर की तरफ़ लगाया तो उसे उस औलाद की नेकियों का भी सवाब मिलेगा और औलाद की दुआऐं भी मिलती रहेंगी और मरने के बाद औलाद जो इ़बादात व सद्क़ात को ईसाल करेगा उसका भी अज्रो सवाब और फ़ायदा उसको मिलता रहेगा।

माल व औलाद दुनिया की ज़ीनत हैं और जो चीज़ दुनिया की ज़ीनत हो वो अ़नक़रीब ज़ाइल होने वाली है यानी माल व औलाद अ़नक़रीब ज़ाइल होने वाले हैं और जो चीज़ फ़ना व ज़ाइल होने वाली हो उस पर फ़ख्र व तकब्बुर करना बहुत बड़ी हिमाक़त (बेवक़ूफ़ी) और अख़िरत के नुक़सान और अ़ज़ाबे अ़ज़ीम का बाइस है।

दुनिया की तमाम चीज़ों में तग़य्युर व तबद्दुल होता रहता है और हर चीज़ अपने अपने वक़्त पर फ़ना और ख़त्म होती जाती है और हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ों में बस नेक आअ़माल हैं जो तुम्हारे रब की बारगाह में तुम्हारे लिये बहुत ख़ैर व भलाई और अज्रे अ़ज़ीम का सबब होंगे।

सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि ऐ ग़ाफ़िलों ग़फ़लत की नींद से बेदार हो जाओ ऐ गुनाहों के आ़दियो गुनाहों से रुक जाओ दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत व रग़बत ने तुम्हें अन्धा कर दिया है जो माल व शोहरत वाले दुनिया से कूच कर गये वो क्या अपने साथ कुछ ले गये जो तुम ले जाओगे फिर तुम इ़बरत व नसीहत क्यों नहीं लेते कितने ही लोगों को तुमने अपने हाथों से क़ब्र में ख़ाक के सुपुर्द किया है फिर तुम नसीहत क्यों नहीं लेते तुम्हारी नफ़्सानी दुन्यावी ख़्वाहिशात तुम्हें इंतिहाई मुसीबत और सख़्त अ़ज़ाब और नारे दोज़ख़ की तरफ़ ले जा रही है और तुम्हारी जन्नत को तुमसे हमेशा के लिये दूर कर रही है और तुम खुद ही अपनी हलाकत का सबब बन रहे हो और उससे ज़्यादा नुक़सान उठाने वाला कौन है जो बेहतरीन आख़िरत को दुनिया के बदले और जन्नत को दोज़ख़ के बदले में बेच दे तुम इस बात पर ग़ौरो फ़िक्र क्यों नहीं करते

जब तुमसे दुनिया की थोड़ी सी मुसीबत व तकलीफ़ उठाई नहीं जाती तो ज़रा सोचो तुम आख़िरत में मिलने वाली इंतिहाई सख़्त व दर्दनाक तकलीफ़ो मुसीबत को कैसे उठायेगे क्या तुम नहीं देखते कि मौत तुम्हारे इन्तिज़ार में खड़ी है और तुम अपनी दुनिया बनाने और माल जमाअ़ करने में मसरुफ़ हो मौत की निगाहें तुम्हें ताक रही हैं बस वो अपने रब की इजाज़त की मुन्तज़िर हैं और जैसे ही रब तआ़ला उसे हुक्म व इजाज़त-

देगा तो वो तुम्हारी रुह क़ब्ज़ कर लेगी और तुम मुर्दा बेजान जिस्म के रह जाओगे क्या तुम बक़ा की उम्मीद लिये बैठे हो जो सिर्फ़ तुम्हें धोके में डाले रखे है अ़नकरीब तुम ख़ाक के सुपुर्द किये जाओगे और फिर दुनिया से तुम्हारा वुजूद हमेशा हमेशा के लिये ख़त्म हो जायेगा।

अ़क्ल वालों के लिये मौत बहुत अच्छी इ़बरत व नसीहत है और लोगों के लिये तीन चीज़ें बहुत नापसंद हैं मगर उनसे मुहब्बत करना बहुत बड़ी कामयाबी है यानी फ़िक्र, मर्ज़ और मौत तो तुम तवाज़ोअ़ पैदा करने के लिये फ़िक्र को पसंद करो और गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनने के लिये मर्ज़ को पसंद करो और अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात के लिये मौत को पसंद करो

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि आख़िरत में सबसे ज़्यादा ग़नी वो होगा जो दुनिया में सबसे ज़्यादा मुहताज है और आख़िरत में सबसे ज़्यादा हिस्सा उसे मिलेगा जो दुनिया में कम नसीब है और बहुत से लोग ऐसे भी हैं कि दुनिया में दूसरे लोग उनकी नेअ़मतों व खुशहाली व उनकी ऐशो इशरत को देखकर उन पर रश्क करते हैं मगर वो आख़िरत में हलाक व बर्बाद होने वाली जमाअ़त में शामिल होंगे और आख़िरत सआ़दत मंद लोगों का हिस्सा है और दुनिया बद बख़्तों की आरजू है।

माल व औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर देते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (कहीं) तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और जो शख़्स ऐसा करेगा तो वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं और तुम उस माल में से जो हमने तुम्हें अ़ता किया है राहे खुदा में ख़र्च करो क़ब्ल इसके कि तुममें में किसी को मौत आ जाये फिर वो कहने लगे ऐ मेरे रब तूने मुझे थोड़ी मुद्दत तक मुहलत क्यों नहीं दी कि मैं सद्क़ा ख़ैरात कर लेता और नेकोकारों में से हो जाता और अल्लाह तआ़ला हरगिज़ किसी शख़्स को मुहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाता है और अल्लाह तआ़ला उन कामों से खूब आगाह है जो तुम किया करते हो।
(सू०-मुनाफ़िक़ून-63/9 ता 11)

माल की मुहब्बत व औलाद की खुशी के लिये इन्सान यादे इलाही व ताअ़ते इलाही और इ़बादात व अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और ज़्यादा माल हासिल करने की हिर्स व मशग़ूलियत दीन को फ़रामोश कर देती है और फ़ानी दुनिया के लिये आख़िरत की बाक़ी रहने वाली अब्दी सआ़दत और दायमी नेअ़मतों की तरफ़ उसका ध्यान भी नहीं जाता है जबकि अल्लाह तबारक व

तआ़ला अपने मोमिन बन्दो को कसरत के साथ ज़िक्रे इलाही व ताअ़ते इलाही और नेक आअ़माल करने का हमें हुक्म देता है क्योंकि इसमें नफ़अ़, कामयाबी, फ़लाह और बेशुमार भलाइयाँ व अज्रो सवाब है अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने मोमिन बन्दो को माल व औलाद की मुहब्बत में मशगूल होकर अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल होने से रोकता है

इसलिये हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला का कसरत से ज़िक्र करें और नेक आअ़माल करें और कसरत से उसका शुक्र अदा करें कि जिसने हमें माल व औलाद की नेअ़मत अ़ता फ़रमाई है अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा माल को मौत आने से पहले अल्लाह की राह में ख़र्च करे ताकि वो हमारे लिये आख़िरत का सरमाया हो क्योंकि मौत जब आयेगी तो बन्दे के लिये मुम्किन नहीं कि वो ज़र्रा बराबर भी नेकी और भलाई कर सके बल्कि मौत के बाद सिर्फ़ नदामत और हसरत बाक़ी रह जाती है।

कि हमने अपने माल में से अल्लाह की राह में ख़र्च क्यों नहीं किया जो आज हमारा ज़ादे राह होता और आज हमारे काम आता और आज अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से हमें बचाता और मैं बेहतरीन अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ हो जाता और अब ये मुम्किन नहीं अब तो बस नेक और बुरे आअ़माल की जज़ा या सज़ा मिलने का वक़्त है।

जो शख़्स दुनिया की ज़ीनत और इसकी मुहब्बत व रग़बत में मुस्तग़रक़ हो जाये और अल्लाह के ज़िक्र और उसकी इताअ़त में सुस्त पड़ जाये वो अपना बहुत बड़ा नुक़सान खुद करता है क्योंकि मौत एक एक करके आयेगी और सबको ख़त्म कर डालेगी और इन्सान के पास कुछ भी बाक़ी नहीं छोड़ेगी सिवाय नेक या बद आअ़माल के और जब इन्सान को मौत की आमद का यक़ीन हो जायेगा तो वो कहेगा ऐ मेरे रब मुझे मुहलत दे दे ताकि मैं कसरत से नेक आअ़माल कर लूँ मगर फिर मुहलत नहीं मिलेगी हालांकि अल्लाह तआ़ला ने उसे बहुत मुहलत दी जब वो ज़िन्दा था मगर दुनिया की मुहब्बत व रग़बत ने उस मुहलत को ज़ाए कर दिया और अल्लाह तआ़ला मौत के बाद किसी नफ़्स को हरगिज़ मुहलत नहीं देता।

इन्सान जो भी अ़मल करता है अल्लाह तआ़ला उस पर ख़बीर है उसकी उसे सज़ा या जज़ा देगा अगर अ़मल नेक होगा तो जज़ा-ए-ख़ैर मिलेगी अगर अ़मल बुरा होगा तो सज़ा मिलेगी इसलिये ऐ मुसलमानों ख़ैर व भलाई में सबक़त करो और आने वाली मौत से पहले आख़िरत की तैयारी करो और अपने क़ल्ब को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से मुज़य्यन करो और माल को राहे खुदा में और नेक कामों में ख़र्च करो व अपनी तमाम ज़िन्दगी को अल्लाह व रसूल की ताअ़त में सर्फ़ करो और माल की मुहब्बत व रग़बत को तीन तलाक़ दे दो क्योंकि माल की मुहब्बत अल्लाह की

याद से ग़ाफ़िल कर देती है जो बुरे और वहशत नाक अन्जाम का सबब बनती है।

➡हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे ऊपर फ़क़्र व गुरबत का ख़ौफ़ नहीं है बल्कि मुझे तुम्हारे ऊपर इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम इस दुनिया की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाओगे जैसे तुमसे पहले के लोग हो गये थे फिर इसकी तरफ़ रग़बत करोगे जैसे तुमसे पहले के लोगों ने रग़बत की थी फिर ये दुनिया तुम्हें ग़ाफ़िल कर देगी जैसे तुमसे पहले के लोगों को ग़ाफ़िल कर दिया था और ये दुनिया तुम्हें इस तरह हलाक कर देगी जैसे इस दुनिया ने उन्हें हलाक किया था। (बुख़ारी–सहीह–4/197-ह०–4015) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/249-ह०–10291)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया हर एक दिन का सूरज जब तुलूअ़ होता तो उसके दोंनों पहलुओं के साथ दो फ़रिश्ते भेजे जाते हैं वो दोनों फ़रिश्ते जिन्न व इन्सान के सिवाय ज़मीन पर रहने वाली तमाम मख़लूक़ात को ऐअ़लान करते हैं और वो कहते हैं कि ऐ लोगो तुम अपने रब की इताअ़त तरफ़ आ जाओ बेशक जो चीज़ क़लील हो और किफ़ायत करे वो बेहतर होती है उस कसीर चीज़

से जो तुम्हें ग़ाफ़िल कर दे और हर एक दिन का सूरज जब गुरुब होता है तो उसके दोनों तरफ़ दो फ़रिश्ते भेजे जाते जो ऐअ़लान करते हैं और वो दुअ़ा करते हैं कि ऐ अल्लाह राहे खुदा में ख़र्च-करने वालों को ख़र्च करने के बाद मज़ीद अ़ता फ़रमां और रोक कर रखने वालों का माल ज़ाए़ कर दे। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/267-ह०-10373)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़राबी है बहुत माल वालों की क्योंकि अक्सर मालदार खुदा से ग़ाफ़िल हो जाते है मगर जो कोई अपने माल को उसकी तरफ़ लुटादे और इस तरफ़ और उस तरफ़ और इस तरफ आप ने चारों तरफ़ इशारा किया दाँये बाँये और आगे और पीछे।
(इब्ने माजा-सुनन-3/356-ह०-4129)

इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जब तू देखे कि अल्लाह तअ़ाला ने तुझसे दुनिया की नेअ़मतों को रोक रखा है या तेरे लिये कसरत से मसाइब व मुश्किलात पैदा कर रहा है तो यक़ीन रख कि ये बात अल्लाह तअ़ाला की बारगाह में तेरे लिये बा इ़ज़्ज़त और साहिबे मर्तबा होने की अ़लामत है और वो तुझे औलिया किराम के रास्ते पर चलाना चाहता है बेशक वो तेरे तमाम हालात से वाक़िफ़ है लिहाज़ा मसाइब व मुश्किलात के वक़्त तुझे रब तअ़ाला-

का एहसान मन्द होना चाहिये कि वो तुझे दुन्यावी लज़्ज़तों से दूर रखकर गुनाहों से महफ़ूज़ रखना चाहता है और तेरी इस्लाह करना चाहता है और तुझे कसीर अज्र व सवाब देना चाहता है और आख़िरत में नेक बन्दों व मुक़र्रबीन के दर्जों पर फ़ाइज़ करना चाहता है लिहाज़ा मोमिन बन्दे के हक़ में मसाइब व मुश्किलात और तकलीफ़ों का मिलना और माल व मताअ़ का न मिलना और दुनिया की लज़्ज़तों व नेअ़मतों के न मिलने का नतीजा निहायत ही अच्छा व रुहानी अ़ताओं का सर चश्मा है।

अल्लाह तआ़ला जब किसी क़ौम को अपना दोस्त बनाता है तो उसको मुख़्तलिफ़ आज़माइशों में डालता है। (मुस्नद अहमद–9/163-ह०–23702)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है मैं अपने दोस्तों को दुनिया की नेअ़मतों से इस तरह दूर रखता हूँ जिस तरह मेहरबान चर‘वाहा अपने ऊँटों को ख़ारिश ज़दा ऊँटों से दूर रखता है। (अहमद बिन हम्बल–अज़ जुहद–सफ़ा–99 हदीस न०–341,342)

दुनिया एक बाज़ार है जो अ़नक़रीब बन्द हो जायेगा इसलिये अपने कुलूब को आख़िरत के साथ और अपने बातिन को अल्लाह के साथ मुन्सलिक कर लो और अल्लाह व रसूल के अम्र व नही के मुताबिक़ अ़मल करो और अ़नक़रीब तू दुनिया से मुफ़लिस और मुहताज होकर निकलेगा क्या तू

अल्लाह तआ़ला का बन्दा है या तू अपने नफ़्स व ख़्वाहिशात और दिरहम व दीनार का बन्दा है ऐ-इब्ने आदम दुनिया व मताये दुनिया की मुहबत व रग़बत ने तुझे अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद से ग़ाफ़िल कर दिया यहाँ तक कि तूने अपनी आख़िरत बर्बाद करली और तूने माल के बदले अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत को ठुकरा दिया क्या तू अपने पर'वर दिगार के बेशुमार एहसानात व इनाअ़मात को भूल गया जो रब तआ़ला ने तुझे अ़ता किये ज़रा सोच कि जिसे तू भूल गया अगर वो तुझे भूल गया होता तो तेरा क्या हाल होता क्या तुझे जन्नत और दोज़ख़ की ख़बर नहीं क्या तुझे मौत और अंधेरी क़ब्र और योमे क़यामत की फ़िक्र नहीं क्या तुझे दोज़ख़ की आग से डर नहीं लगता या तेरा जिस्म इतना ताक़तवर है कि जो तू दोज़ख़ की आग को बर्दाश्त कर सकता है क्या अंधेरी क़ब्र में सांप और बिच्छुओं की बीच रात गुज़ार सकता है

क्या तुझे मरना नहीं है और क्या तुझे अपने आअ़माल का हिसाब देना नहीं है तेरी दुनिया से मुहब्ब्त व रग़बत ने तेरे दिल से ख़ौफ़े खुदा को ख़त्म कर दिया और हमेशा याद रखने वाली बातें तू भूल गया है क्या तुझे निसयान (पागलपन) की बीमारी है जो अपने रब के ग़ज़ब व जलाल और आख़िरत के इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब को भूल गया है और क्या तू बे पर'वाह हो गया है अगर सिर्फ़ तू क़ब्र अ़ज़ाब देख ले तो तेरी रातों की नींद उड़

जाये और तू हर वक़्त ख़ौफ़ के सबब बैचेन और बेहाल रहे और दुनिया सिर्फ ख़्वाब की मानिन्द है जब इन्सान नींद से बेदार होता है तो फिर उसका ख़्वाब सिर्फ़ एक तसव्वुर के सिवा कुछ नहीं होता और वो अपनी अस्ल हक़ीक़त में मुन्तक़िल हो जाता है और इन्सान की हक़ीक़ी की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ आख़िरत है और ये दुनिया महज़ ख़्वाब के सिवा कुछ भी नहीं है।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं दुनिया-ए-फ़ानी से बे रग़बती इख़्तियार करना सआ़दत मंदी की अ़लामत है और सबसे ज़्यादा सआ़दत मंद वो शख़्स है जो बाक़ी रहने वाली लज़्ज़ात के सबब फ़ानी लज़्ज़ात को छोड़ दे ऐ इब्ने आदम तुझे चाहिये कि दुनिया दारों की सुहवत से परहेज़ कर क्योंकि अगर तू तंग दस्त होगा तो वो तुझे हक़ीर समझेंगे और अगर तू मालदार होगा तो वो तुझसे हसद करेंगे बल्कि तुझे चाहिये कि फ़कीरों की सुहवत में बैठा कर ताकि तुझे रब तआ़ला की नेअ़मतों की क़दर माअ़लूम हो और उसकी शुक्र गुज़ारी में तेरे अन्दर कसरत पैदा हो और मालो दौलत बहुत बड़ी मुसीबत और वबाल है इसलिये दुनिया को छोड़ दे और नेक आअ़माल कर ताकि क़यामत के दिन अपनी जान बचा सके और सबसे ज़्यादा अ़क़्ल मंद वो शख़्स है जो दुनिया को अपना दुश्मन जाने और इससे अपनी उम्मीदें क़तअ़ कर दे।

माल की हवस ग़फ़लत का सबब है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
कसरते माल की हवस व फ़ख़्र ने तुम्हें (आख़िरत व अल्लाह की याद और इताअ़त व इ़बादात) से ग़ाफ़िल कर दिया यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे हरगिज़ नहीं माल व दौलत तुम्हारे काम नहीं आयेगी तुम अ़नक़रीब (इस हक़ीक़त को) जान लोगे फिर (आगाह किया जाता है) हरगिज़ नहीं अ़नक़रीब तुम्हें (अपना अन्जाम) माअ़लूम हो जायेगा हां हां काश तुम (माल व ज़र की हवस और अपनी ग़फ़लत के अन्जाम को) यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते (और तुम अपनी हिर्स के नतीजे में) दोज़ख़ को ज़रुर देख कर ही रहोगे फिर तुम उसे यक़ीन की आँख से देख लोगे फिर उस दिन तुम से (अल्लाह की) नेअ़मतों के बारे में ज़रुर पूछा जायेगा। (सू०-तकासुर-102/1 ता 8)

इस आयते करीमा में सिर्फ़ दुनिया की बेहतरी के लिये अ़मल करने की मज़म्मत बयान की गई कि ज़्यादा माल जमाअ़ करने की हिर्स व हवस ने लोगों को आख़िरत से और अल्लाह की याद और इताअ़ात व इ़बादात से ग़ाफ़िल कर दिया है और उनके दिलों में ज़्यादा माल हासिल करने की तलब व हिर्स बढ़ती रही हत्ता कि उन्हें मौत आ गई और वो क़ब्रों में पहुँच गये और नज़अ़ के वक़्त ज़्यादा माल जमाअ़ करने वालो को इसका अन्जाम

माअ़लूम हो जायेगा काश अगर वो इसका अन्जाम यक़ीनी इ़ल्म के साथ जानते तो वो माल से कभी भी मुहब्बत न रखते और न ही वो ज़्यादा माल जमाअ़ करने की हिर्स में मुब्तिला होते और वो लोग रोज़े क़ियामत जहन्नम को ज़रुर देखेंगे।

ये आयात कुफ़्फार व मोमिनीन दोंनों के लिये अ़ाम हैं क्योंकि अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है ''कि तुम में से हर शख़्स दोज़ख़ से गुज़रेगा ये वाअ़दा क़तई तौर पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा'' (सू०–मरयम–19/71)

मुजरिम लोग जहन्नम को देखकर यक़ीन कर लेंगे कि वो इसमें झोंके जायेंगे और इससे बचने की वो कोई जगह न पायेंगे (सू०–कह्फ़–18/53)

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने हमें जो बेशुमार नेअ़मतें अ़ता फ़रमाई हैं उन सब के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल होगा और किसी शख़्स के भी कसीर नेक आअ़माल अल्लाह तबारक व तअ़ाला की नेअ़मतों के मुक़ाबले में एक ज़र्रे बराबर भी हैसियत नहीं रखते मगर ये अल्लाह तअ़ाला का अ़ज़ीम फ़ज़्ल है कि वो हमारे तमाम गुनाहों को अपनी रहमत से बख़्श देता है और हमें नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है अगर इन्सान अपनी पूरी ज़िन्दगी सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करने में सर्फ़ कर दे और कसरत से उसका ज़िक्र व उसकी हम्दो सना करे फिर भी वो उसका शुक्र अदा नहीं कर सकता।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक तवील हदीस में फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है क़यामत के दिन तुमसे आज की नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जायेगा।
(मुस्लिम–सहीह–4/159-ह०–5313)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/210-ह०–2369)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि "तुमसे नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल होगा" (सू०–तकासुर–102/8) तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह किस नेअ़मत के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल होगा हमारे पास तो यही दो चीज़ें हैं खजूर और पानी और दुश्मन हमारे सर पर है और तलवारें हमारे कन्धों पर हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ तुमसे नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल ज़रुर होगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/880-ह०–3357)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा और अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे इ़ज़्ज़त व सरदारी और माल व बीवी व औलाद नहीं दिये थे तो वो कहेगा क्यों नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा–

क्या तुम ये समझते थे कि तुम मुझसे नहीं मिलोगे वो जवाब में कहेगा जी हाँ फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा आज मैं उसी तरह तुम्हें भूल जाऊँगा जिस तरह तुम मुझे भूल गये थे।
(मुस्लिम–सहीह–5/486-ह०–7438)
(अबू दाऊद–सुनन–6/590-ह०–4730)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़्यामत के दिन सबसे पहले बन्दे से जिस नेअ़मत के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जायेगा वो ये है क्या हमने तुम्हारे जिस्म को तन्दरुस्त नहीं बनाया और तुमको ठन्डे पानी से सैराब नहीं किया था।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/880-ह०–3358)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/506-ह०–7364)

➡हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान क़्यामत के दिन उस वक़्त तक अपने रब के पास खड़ा रहेगा जब तक कि उससे पाँच बातों के बारे में सुवाल न हो जाये (1) उसने अपनी ज़िन्दगी किस काम में गुज़ारी (2) अपनी जवानी को किन कामों में सर्फ़ किया (3) माल को किस तरह कमाया (4) अपने माल को कहाँ कहाँ ख़र्च किया (5) अपने इ़ल्म पर क्या अ़मल किया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/243-ह०–2416)

अल्लाह तआ़ला तुमसे उन नेअ़मतों के बारे में ज़रुर पूछेगा जिनसे तुम दुनिया की ज़िन्दगी में फ़ायदा उठाते रहे हो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुमने उन नेअ़मतों का शुक्र अदा किया और तुमने उन नेअ़मतों में अल्लाह तआ़ला का हक़ अदा किया तो वो जवाब देगा नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुमने अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियों में उन नेअ़मतों से मदद नहीं ली वो कहेगा जी हाँ फिर अल्लाह तआ़ला उसे सज़ा देगा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ''जिस दिन उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र किया जहन्नम के सामने पेश किया जायेगा (तो उनसे कहा जायेगा) तुम अपनी लज़्ज़ते अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में ही ख़त्म कर चुके और उनसे फ़ायदा उठा चुके हो पस दुनिया में जो तुम नाहक़ अकड़ते (और तकब्बुर करते) थे और ना फ़रमांनियां करते थे इसके बदले आज तुम्हें रुसवा कुन अ़ज़ाब दिया जायेगा''।
(सू०-अहक़ाफ़-46/20)

दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और दुनिया की हिर्स व मशगूलियत के सबब इन्सान दीन से दूर और कसरते गुनाह व शर में मुब्तिला हो जाता है जिसकी वजह से वो दोज़ख़ में डाला जायेगा और कसरते माल की तलब व हिर्स में मुब्तिला शख़्स उख़र'वी सआ़दतों से महरुम रहेगा।

➡ हज़रत मुतरफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं रसूले अकरम-

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप अल्हाकुमुत्तकासुर की तिलावत फ़रमां रहे थे फिर आप ने फ़रमाया कि बेशक बन्दा कहता है कि मेरा माल मेरा माल मगर उसका माल तीन तरह का होता है कि जो उसने खा लिया और हज़्म कर लिया और जो उसने पहन लिया उसे फाड़ लिया या बोसीदा हो गया और जो माल (सद्क़ा, ख़ैरात व राहे खुदा में) आगे भेज दिया और जो इनके अ़लावा माल है वो सब छोड़ने वाला है और अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ जाने वाला है।
(मुस्लिम–सहीह–5/477-ह०–7420,7422)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/197-ह०–2342)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6510)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तेरा माल वो है जो नेक आअ़माल की सूरत में तूने आगे भेजा और जो माल तू अपने पीछे छोड़ेगा वो तेरा माल नहीं है बल्कि तेरे वारिसों का होगा।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6509)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माल व असबाब की कसरत से मालदारी नहीं होती बल्कि अस्ल मालदारी तो दिल का ग़नी होना है अल्लाह की–

क़सम मुझे तुम्हारे बारे में मुहताजी का ख़ौफ़ नहीं है लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम माल की हवस में मुब्तिला हो जाओगे।
(बुख़ारी–सहीह–6/58-ह०–6446)
(मुस्नद अहमद–4/951-ह०–10971)

जिस माल के ज़्यादा होने में हिर्स की जाती है और जिस औलाद पर फ़ख़्र का इज़हार किया जाता है उनकी हक़ीक़त ये है कि उस वक़्त तक इन्सान के साथ रहते हैं जब तक उसके जिस्म में रुह बाक़ी है और जैसे ही रुह उसके जिस्म से जुदा होती है और उसे क़ब्र में दफ़न कर दिया जाता है तो वो माल व औलाद उसका साथ छोड़ देते हैं और क़ब्र में उसके साथ उसके आअ़माल जाते हैं लिहाज़ा हर अ़क्लमंद इन्सान को चाहिये कि वो माल व मताअ़ ज़्यादा होने की हिर्स करने और अपनी औलाद पर फ़ख़्र करने की बजाय नेक आअ़माल ज़्यादा करे ताकि वो क़ब्र में उसके बेहतरीन साथी हों।

➡हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रजि०) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर बन्दे के तीन दोस्त होते हैं एक कहता है जब तक तुम ज़िन्दा रहोगे मैं तुम्हारे साथ हूँ जब तुम मर जाओगे तो मेरा तेरा वास्ता ख़त्म हो जायेगा ये उसका माल है और एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ उस वक़्त तक हूँ जब तक तू क़ब्र तक न पहुँचे ये उसके अह्ल व अ़याल हैं और एक–

दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ हमेशा रहूँगा जहाँ तू जायेगा मैं भी तेरे साथ चलूँगा और जहाँ तू दाख़िल होगा मैं भी दाख़िल होऊँगा और जहाँ से तू निकलेगा मैं भी निकलूँगा ये उसके आअ़माल हैं
(कंजुल उ़म्माल–8/294-ह०–42742)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/745-ह०–1375)

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं एक उसके अ़ज़ीज़ अक़ारिब दूसरा उसका माल और तीसरा उसके आअ़माल फिर दो वापस लौट आते हैं और एक मुर्दे के साथ रह जाता है तो उसके घर वाले और माल वापस लौट आते हैं और मुर्दा अपने अच्छे व बुरे आअ़माल के साथ क़ब्र में रह जाता है। (नसाई–सुनन–1/630-ह०–1914)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2379)
(बुख़ारी–सहीह–6/90-ह०–6514)
(मुस्लिम–सहीह–6/469-ह०–7424)

जब इन्सान की दुन्यावी माल की ज़्यादा तलब और हिर्स और दुनिया के लिये मशगूलियत उस हद को पहुँचती है कि उसे इनके सिवा कोई चीज़ नज़र नहीं आती लेकिन जब वो मरकर क़ब्रिस्तान पहुँचता है तो सारे पर्दे उठ जाते हैं और अस्ल हक़ीक़त उसके सामने ज़ाहिर हो जाती है फिर वो हर चीज़ को कामिल यक़ीन के साथ जान लेता है जिन से वो दुनिया में ग़ाफ़िल था यानी मौत के–

बाद वो अ़ज़ाब का मुशाहदा करता है तो वो जान लेता है कि अल्लाह के रसूल जो कुछ भी लेकर आये हैं वो सब हक़ है काश अगर वो दुनिया में अपनी आख़िरत के अन्जाम को दिल के यक़ीन के साथ जानता तो ज़्यादा मालो मताअ़ हासिल करने की ख़्वाहिश के सबब ग़ाफ़िल नहीं होता और वो कसरत से नेक आअ़माल करता मगर यक़ीनी तौर पर उसके हक़ीक़ी इ़ल्म के माअ़दूम होने की वजह से वो अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल रहता है और इ़ल्मुल यक़ीन की ताअ़रीफ़ ये है कि किसी ख़बर को सुनकर या दलाइल में ग़ौरो फ़िक्र करने से जो यक़ीन हमें हासिल हो उसे इ़ल्मुल यक़ीन कहते हैं और किसी चीज़ का मुशाहदा करने के बाद जो यक़ीन हासिल होता है उसे ऐ़नुल यक़ीन कहते हैं और जो यक़ीन हमें तजरिबा से हासिल हो उसे हक़्क़ुल यक़ीन कहते है।

सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं तू दुनिया में इस तरह रह कि नफ़अ़ व नुक़सान और अ़ता व मनाअ़ के बारे में उन पर निगाह न डाल और मख़्लूक़ तेरे क़ल्ब से निकल जाये और हुक्मे इलाही और तक़दीर के नाज़िल होते वक़्त तू पुख़्तगी के साथ जमा रहे और मख़्लूक़ पर हुकूमत व रिफ़अ़त का तालिब न बन तेरा क़ल्ब अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस व तेरा बातिन उसके लिये साफ़ हो क्योंकि दुनिया की मुहब्बत और उसकी ज़्यादती पर हिर्स तुझे अल्लाह की माअ़रिफ़त से रोकती है पस तुम आख़िरत को याद करो और दुनिया को छोड़ दो।

माल व औलाद कुर्बे इलाही का ज़रिया नहीं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और न तुम्हारे माल इस क़ाबिल हैं और न ही तुम्हारी औलाद कि तुम्हें हमारे हुजूर कुर्ब व नज़दीकी दिला सकें मगर जो ईमान लाया और उसने नेक अ़मल किये पस ऐसे ही लोगों के लिये दो गुना अज्र है और उनके अ़मल के बदले में वो जन्नत के बाला ख़ानों में अमन व अमान से होंगे। (सू०–सबा–34/37)

मोमिन जो अपने माल को राहे खुदा में ख़र्च करे तो उसका माल कुर्बे खुदा का ज़रिया है इसी तरह वो औलाद जिसे दीनी ताअ़लीम व तरबियत दी गई हो और उसे नेकी के रास्ते की तरफ़ लगाया गया हो तो ऐसी औलाद कुर्बे खुदा का ज़रिया हैं इसके अ़लावा किसी का माल व औलाद कुर्बे खुदा के ज़रिये का सबब नहीं और नेक लोग जन्नत के बाला ख़ानों में अमन व चैन से होंगे और उन्हें वहाँ पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की लज़्ज़तें और दिल पसंद चीज़े अ़ता होंगी जिसे किसी आँख ने न देखा होगा और न किसी कान ने सुना होगा और न ही किसी के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा होगा और वो नेअ़मतें उनसे कभी भी छीनी नहीं जायेंगी बल्कि वो उन नेअ़मतों के मालिक बना दिये जायेंगे।

आज अक्सर मुसलमानों के हालात ये हैं कि माल व औलाद की कसरत को अल्लाह की कुर्बत और भलाई तसव्वुर करने का मर्ज़ आ़म है और अपनी औलाद को दीनी ताअ़लीम और नेकी के रास्ते पर लगाने की बजाय सिर्फ़ दुन्यावी उ़लूम व फुनून की ताअ़लीमो तरबियत पर भरपूर तवज्जो देने की वबा भी आ़म है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या लोग ये ख़्याल करते है कि हम जो (दुनिया में) माल व औलाद के ज़रिये उनकी इमदाद कर रहे हैं तो हम उनके साथ भलाइयाँ करने में जल्दी कर रहे हैं (ऐसा नहीं है) बल्कि उन्हें तो (अस्ल हक़ीक़त का) शऊ़र ही नहीं है।
(सू०-मु-मिनून-23/55,56)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

सो आपको न तो उनके अमवाल तआ़ज्जुब में डालें और न ही उनकी औलाद बस अल्लाह तो ये चाहता है कि उन्हें इन्हीं (चीज़ों) की वजह से दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वो काफ़िर हों।
(सू०-तौबा-9/55)

माल और औलाद की ज़्यादती लोगों के ख़ैर का पैमाना नहीं है क्योंकि बाअ़ज़ औक़ात अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को कसीर माल अ़ता करता है और माल व औलाद मुत्लक़न नापसंदीदा नहीं है-

जिस माल को कारे ख़ैर और राहे खुदा में ख़र्च किया जाये तो वो माल क़ाबिले रश्क है और जो औलाद नेक हो तो वो माँ बाप की मग़फ़िरत का ज़रिया बनती है और वो माल जिस पर ज़कात न निकाली गई हो या गुनाहों के कामो में ख़र्च किया गया हो वो माल आफ़त और वबाल व मज़मूम है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया सिर्फ़ दो आदमियों पर रश्क करना मुस्तहसन है एक वो कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वो उसको हक़ के रास्ते में ख़र्च करे और दूसरा वो शख़्स कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्म दिया हो और वो उस इ़ल्म के मुताबिक़ फ़ैसला करे और लोगों को ताअ़लीम दे। (बुख़ारी–सहीह–1/126-ह०–73)
(मुस्लिम–सही–2/149-ह०–1896)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अल्लाह की राह सिर्फ़ यही नहीं कि जो राहे खुदा में क़त्ल हो जाये बल्कि जिसने अपने वालिदैन के लिये सई़ (दौड़ धूप) की वो भी अल्लाह की राह में है और जिसने अपने नफ़्स के लिये सई़ की ताकि उसे पाक रखे वो भी अल्लाह की राह में है और जिसने सई़ की महज़ मालो दौलत बढ़ाने के लिये वो शैतान की राह में है। (अब्दर्रज़्ज़ाक़–5/271-ह०–39578) (शुअ़बुल ईमान–7/268-10377)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक दुनिया की ख़राबी की ये दलील है कि ये कभी एक हालत पर बाक़ी नहीं रहती यानी हालते तग़य्युर व तवद्दुल से ये दुनिया खाली नहीं है एक तरफ़ दुरस्त करती है तो दूसरी तरफ़ बिगाड़ देती है एक शख़्स को खुश करती है तो दूसरे को रंज में डाल देती है इस दुनिया पर एतमाद करना नादानी और इससे दिल लगाना बेवकूफ़ी और इस पर भरोसा करना गुमराही है और बेशक दुनिया सख़्ती व मसाइब के साथ मशहूर है और बेवफ़ाई के साथ मौसूफ़ है और इसमें भलाई कम और बुराई ज़्यादा है और इसकी लज़्ज़त क़लील और हसरत तवील और इसका बातिन हलाक कर देने वाला और ये अपनी ज़ीनत से फ़रेब देती है और ये ठहरने की जगह नहीं बल्कि सफ़र की जगह है और बेशक क़यामत दिन दुनिया से उन्हीं लोगों को सआ़दत मंदी और फ़ायदा हासिल होगा जो आज इससे भागते हैं।

बेशक अच्छा माल वो है जिससे लोगों में इ़ज़्ज़त हो और अल्लाह तआ़ला के यहां अज्र व सवाब हो और बेशक आदमी ने जो माल अल्लाह तआ़ला की राह में ख़र्च कर दिया वो उस माल से मिलने वाला है और जो छोड़कर मरा वो उस माल व दौलत पर नादिम व परेशान होगा क्योंकि माल इन्सान के लिये वबाले जान है मगर जो माल अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी के लिये ख़र्च किया वो माल तेरा दोस्त व मददगार है और सद्क़ा व

ख़ैरात एक ख़ज़ाना है जो तेरी क़ब्र व क़यामत में तेरे काम आयेगा और जो शख़्स राहे ख़ुदा में अपना माल ख़र्च नहीं करता तो गोया वो ऐसा है कि उसे कोई माल मिला ही नहीं

और तअ़ाज्जुब है उस शख़्स पर जो इस बात को जानता है कि अल्लाह तअ़ाला ही रोज़ी देता है और उसकी कोशिश से ज़र्रा बराबर भी उसके रिज़्क़ में ज़्यादती नहीं हो सकती फिर भी वो अपनी आख़िरत को भूलकर मालो मताअ़ की की तलब में हरीस और शब व रोज़ तकलीफ़ क्यों उठाता है ऐ इब्ने आदम क्या तू नहीं जानता कि तेरा रिज़्क़ तुझ से भी बढ़कर तेरा तलबगार है पस तुझे चाहिये कि तू मालो मताअ़ की तलब में शरीअ़त की सीधी राह चलता रह और कसरत से नेक आअ़माल कर ताकि तेरी आख़िरत बेहतर हो जाये और तू तक़दीर पर कामिल यक़ीन रख क्योंकि जब तक़दीर आ जाती है तो तदबीर व होशियारी धरी रह जाती है और हर इन्सान का रिज़्क़ उसकी मौत की तरह मुक़र्रर हो चुका है और जो शख़्स अल्लाह तअ़ाला की तक़दीर पर राज़ी होता है तो वो निहायत चैन व आराम की ज़िन्दगी बसर करता है और जो कुछ उसे मिल जाता है उस पर वो क़नाअ़त करता है।

माल जमाअ़ करने वालों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वईद

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(ख़राबी व तबाही है उस शख़्स के लिये) जो माल जमाअ़ करता है और गिन गिन कर रखता है (और) वो समझता है कि उसका माल उसके पास हमेशा रहेगा हरगिज़ नहीं वो ज़रुर हुतमा (यानी तोड़ फोड़ व चूरा चूरा कर देनी वाली आग) में डाला जायेगा और क्या तुम जानते हो कि हुतमा (तोड़ फोड़ व चूरा चुरा कर देने वाली) क्या है वो अल्लाह तआ़ला की भड़काई हुई आग है जो दिलों पर चढ़ जायेगी और वो आग उन पर हर तरफ़ से बन्द की हुई होगी और वो लोग (आग के) लम्बे चौड़े सुतनो में (घिरे हुये) होंगे।
(सू०-हुमाज़ाह-104/2 ता 9)

मज़कूरा आयात में उन लोगों की मज़म्मत बयान की गई जो दुनिया का माल जमाअ़ करने के ऐसे हरीस हैं कि जैसे उनको दुनिया में हमेशा रहना है और वो लोग अपने माल की ज़कात भी अदा नहीं करते और माल की मुहब्बत व रग़बत के सबब यादे इलाही और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं तो ऐसे लोगों को दोज़ख़ के उस तबक़े में फेंका जायेगा जिसकी आग उनके जिस्म के हर हिस्से को खा जायेगी व उनकी हड्डियों को चूरा चूरा कर देगी हमारे मुआ़शरे में ऐसे मालदारों की

कसीर ताअ़दाद है जो इस मर्ज़ में मुब्तिला हैं जो ये समझते हैं कि वो अपने माल के साथ दुनिया में हमेशा ज़िन्दा रहेंगे हालांकि न वो खुद दुनिया में हमेशा रहेगा और न उनका माल।

माल की शदीद मुहब्बत इन्सान को नेक आअ़माल की तरफ़ माइल नहीं होने देती बल्कि वो उसे शर व गुनाह की तरफ़ ले जाती है और उसे उस माल में से ज़कात अदा करने से रोकती है और इस तरह धीरे धीरे इन्सान के गुनाहों में इज़ाफ़ा होता रहता है बिल आख़िर वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता जो उसे दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी होते हैं और ऐसे लोगों को दोज़ख़ की आग जिस्म के ज़ाहिरी व अन्दरुनी हिस्सों को पूरी तरह से जकड़ लेगी और जलाकर ख़ाक कर देगी हत्ता कि उसकी हड्डियाँ चूर चूर हो जायेंगी और ऐसे लोगों को आग में डालकर दर'वाज़े बन्द कर दिये जायेंगे और फिर आग की लौ सुतूनो से मज़बूत कर दी जायेगी ताकि वो लोग उस आग से बाहर न निकल सकें और जब ''वो उस आग से बाहर निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिये जायेंगे''। (सू०–सज्दा–32/20)

ये आग जहन्नुम की दूसरी आग के मुक़ाबले ज़्यादा सख़्त होगी उन्हें वहाँ मौत नहीं आयेगी तो उस वक़्त उनका क्या हाल होगा जो एक लम्हें की दुनिया की आग को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो वो उस आग को कैसे बर्दाश्त करेंगे जो कि तीन

हजार साल तक दहकाई गई वो आग उन पर चारों तरफ़ से चढ़ जायेगी।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ की आग एक हज़ार बरस तक दहकाई गई हत्ता कि वो सुर्ख हो गई फिर एक हज़ार बरस तक दहकाई गई यहाँ तक कि वो सफ़ेद हो गई फिर वो एक हज़ार बरस तक दहकाई गई यहाँ तक कि वो सियाह हो गई और अब वो सियाह और अंधेरी है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/376-ह०–2591)
(इब्ने माजा–सुनन–3/409-ह०–4320)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारी ये आग जिसे तुम जलाते हो ये दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या–रसूलल्लाह क्या ये दुनिया की आग काफ़ी नहीं थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इससे उनहत्तर हिस्से ज़्यादा गर्मी दोज़ख़ में है और उसके हर हिस्से में इतनी गर्मी है।
(मुस्लिम–सहीह–6/385-ह०–7165)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है अगर ये दो बार पानी से बुझायी न जाती तो तुम इससे फ़ायदा न उठा सकते थे अब ये आग अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करती है कि दोबारा उस को दोज़ख़ में न डाला जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/411-ह०–4318)
(बुख़ारी–सहीह–3/482-ह०–3265)
(मुस्लिम–सहीह–5/347-ह०–7165)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/375-ह०–2589)
(दारमी–सुनन–2/515-ह०–2847)

हुतमा दोज़ख़ की आग का वो तबक़ा है कि जिसमें जो कुछ भी डाला जाये तो वो उसको तोड़ फोड़ कर चूरा चूरा कर देती है और वो लोग इसी आग में डाले जायेंगे जो लोग माल जमाअ़ करते और राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते और न ही पूरी ज़कात निकालते हैं और माल की मुहब्बत व रग़बत के बाइस यादे इलाही से ग़ाफ़िल और अपनी आख़िरत से बे पर‘वाह और बे फ़िक्र व कसीर गुनाहों के मुरतकिब हैं ये आग इन लोगों पर चारो तरफ़ से चढ़ जायेगी फिर उनके सीनों तक पहुँच जायेगी और फिर उनके दिल पर चढ़ जायेगी और इन्सान के जिस्म में दिल से ज़्यादा कमज़ोर कोई चीज़ नहीं होती कि थोड़ी सी भी अज़ियत दिल को बहुत तकलीफ़ पहुँचाती है पस उस वक़्त उनका क्या हाल होगा जब उन्हें दोज़ख़ में झोंका जायेगा।

सोना व चाँदी जमाअ़ करने वालों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग सोना और चाँदी जमाअ़ करके रखते हैं और उसमें से राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुनादें जिस दिन उस (सोना, चाँदी और माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा और फिर उस तपे हुये माल से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) कि ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम (आज उस माल का) मज़ा चख्खो जिसे तुम जमाअ़ करते थे।
(सू०–तौबा–9/34,35)

मुसलमानो को माल जमाअ़ करने और उसके हुकूक़ अदा न करने और उसकी ज़कात अदा न करने वालों को इस आयत में दर्दनाक अ़ज़ाब की वईद सुनाई गई कि हर तरह के माल को जहन्नुम की आग में तपाया जायेगा और फिर उससे उनकी पेशानियाँ व कर‘वटें और पीठें दाग़ी जायेंगी जब तपा हुया माल ठण्डा हो जायेगा तो फिर उसको दोबारा आग मे तपाया जायेगा और वो क़यामत का दिन पचास हज़ार साल का होगा जिसमें उन्हें ये अ़ज़ाब मुसलसल मिलता रहेगा यानी पूरे पचास हज़ार साल तक उन्हें अ़ज़ाब मिलेगा और उनसे–

कहा जायेगा कि ये वही माल है जिसे तुम जमाअ़ करते थे और राहे खुदा में ख़र्च नहीं करते थे।

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब ये आयत नाज़िल हुई तो उस वक़्त हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ सफ़र में थे तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह कि सोने और चांदी की मज़म्मत और उसका हाल हमें माअ़लूम हो गया लेकिन अगर हम जानते कि कौन सा माल बेहतर है तो हम उसी को जमाअ़ करते तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि बेहतर माल ज़िक्र करने वाली ज़बान है और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीवी जो आदमी के ईमान और आख़िरत के कामों पर मददगार हो (यानी नेक बीवी की सुहबत के सबब आदमी में ताअ़त व इ़बादत का शौक बढ़े)।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/971-ह०-3094)
(कंज़ुल उ़म्माल-2/128-ह०-4312,4313)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला आया उस काफ़िले में गन्दुम व आटे और खाने से लदे हुये सात सौ ऊँट थे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने शोर सुना तो इस बारे

में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हें बताया गया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला वापस आया है और उसमें गन्दुम, आटे और तुआ़म से लदे हुये सात सौ ऊँट है हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को इरशाद फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ जन्नत में घिसटते हुये दाख़िल होंगे जब ये बात हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ को माअ़लूम हुई तो आप ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से कहा कि ऐ मेरी मां मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैने अपने तमाम ऊँट अपने साज़ो सामान के साथ अल्लाह की राह में सद्क़ा कर दिये। (इब्ने असीर–उसदुल ग़ाबा फी माअ़रिफ़ तुस्सहाबा–अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़–2/438)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई सोने और चाँदी का मालिक है और वो उसकी ज़कात अदा नहीं करता तो क़यामत के दिन उसका माल तख़्तियों की शक्ल में दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उस तपे हुये माल से उसकी पेशानी व उसकी पीठ और उसकी कर‘वटों को दाग़ा जायेगा और जब वो ठन्डी हो जायेंगी तो उन तख़्तियों को दोबारा गर्म किया जायेगा उस दिन ये अ़मल उसके साथ बराबर किया जायेगा यहाँ तक

कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे और उस दिन की मिक्दार पचास हज़ार साल है और कोई उँटों वाला ऐसा नहीं जो अपने उँटों की ज़कात अदा नहीं करता मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटा दिया जायेगा और वो ऊँट अपने खुरों से उसको रौंधेंगे और जब उस पर आख़िरी ऊँट गुज़र जायेगा तो पहले वाला ऊँट आ जायेगा और दोबारा रौंधेंगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे और कोई बकरियों वाला ऐसा नहीं जो उनकी ज़कात अदा नहीं करता हो मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटाया जायेगा फिर वो बकरियाँ आयेंगी और वो अपने खुरों से उसको रौंधेंगी और सींगों से मारेंगी और जब उस पर आख़िरी बकरी गुज़र जायेगी तो पहले वाली बकरी आ जायेगी और दोबारा रौंधेंगी यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे (मुस्लिम–सहीह–3/21-ह०–2290)
(अबू दाऊद–सुनन–2/318-ह०–1658)
(बुख़ारी–सहीह–1/145-ह०–1402)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/375-ह०–617)
(नसाई–सुनन–2/120-ह०–2444)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग उस (माल और दौलत) में से राहे खुदा में ख़र्च करने से बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें

बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़-पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते हैं और अल्लाह ही आसमानों व ज़मीन का वारिस है और जो तुम अ़मल करते हो अल्लाह उससे बा-ख़बर है। (सू०-आले इमरान-3/180)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मालदार हो और माल की ज़कात अदा न करे तो वो माल रोज़े कयामत एक गंजे सांप की शक्ल में उसके गले का तौक़ होगा और वो उससे भागेगा और वो साँप उसका पीछा करेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते करीमा तिलावत फ़रमाई और जो लोग उस (मालो दौलत) में से राहे खुदा में ख़र्च करने से बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ इस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़ पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते है (सू०-आले इमरान-3/180)
(नसाई-सुनन-72/120-ह०-2445)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने ख़ज़ाना-

(माल) छोड़ा तो रोज़े कयामत वो माल गंजा सांप बनकर आयेगा जिसकी आँखों के ऊपर दो सियाह नुक़्ते होंगे माल का मालिक उससे भागेगा लेकिन वो सांप उसे पकड़ लेगा और कहेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जो तू अपने बाअ़द वालों के लिये छोड़ आया था अल्लाह की क़सम वो उसका पीछा करता रहेगा यहाँ तक कि ख़ज़ाने का मालिक अपना हाथ लम्बा करेगा तो वो साँप उसे अपने मुहँ का लुक़्मा बना लेगा और उसके सारे जिस्म को चबायेगा।

(बुख़ारी–सहीह–6/321-ह०–6957)
(नसाई–सुनन–2/143-ह०–2485)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/660-ह०–1392)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने माल की ज़कात नहीं देता वो माल क़यामत के दिन अज़दहा (बड़ा सांप) बन जायेगा और अपने मालिक के पीछे दोड़ेगा जिधर को वो भागेगा वो सांप भी उसके पीछे भागेगा फिर कहा जायेगा ये वही माल है जिसमें तू बुख़्ल करता था (यानी ज़कात, सद्क़ा ख़ैरात अदा नहीं करता था) फिर जब वो देखेगा कि ये अज़दहा मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा तो वो अज़दहे के मुँह में अपना हाथ डाल देगा फिर वो अज़दहा उसके हाथ को ऐसे चबा डालेगा जैसे ऊँट चबाता है।

(मुस्लिम–सहीह–3/27-ह०–2297)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो ऊँट बैल और बकरियाँ रखता हो और उनकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वो एक चटयल मैदान में खड़ा किया जायेगा और उसको जानवर अपने खुरों व सीगों से मारेंगे जो मालदार अपनी दौलत की ज़कात अदा नहीं करेगा तो क़यामत के दिन वो दौलत एक गंजे साँप की शक्ल में आयेगी वो उसको देखकर भागेगा और वो गंजा सांप उसके पीछे पीछे कहता हुआ भागेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जिससे तू दुनिया में कंजूसी करता था जब वो शख़्स देखेगा कि भागने से अब कोई फ़ायदा नहीं तो वो मजबूर होकर अपना हाथ उस गंजे सांप के मुँह में डाल देगा और वो अजदहा (बड़ा सांप) उसके हाथ को चबायेगा।
(नसाई–सुनन–2/133-ह०–2458)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला के अ़ता कर्दा माल में लोग कंजूसी करते और उनकी ये कंजूसी उन्हें ज़कात सदक़ात और माल के हुकूक़ अदा करने से रोकती है और माल के शरई हुकूक़ अदा न करने और उनकी कंजूसी और माल की मुहब्बत व रग़बत उनके लिये शदीद अ़ज़ाब का बाइस होगी और उनका माल उनके लिये आफ़त और वबाल होगा हालांकि उन पर वाजिब था कि जिस तरह अल्लाह तआ़ाला ने उन पर एहसान किया तो उन्हें भी हाजत मंद फुक़रा व मसाकीन और–

ज़रुरत मंद अ़ज़ीज़ व अक़ारिब को माल देकर उनके साथ भलाई करना चाहिये था।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तू उस दौलत में से जो अल्लाह तआ़ला ने तुझे दे रखी है (तू उससे) आख़िरत का घर तलब कर और दुनिया से भी अपना हिस्सा न भूल और तू लोगों पर वैसा ही एहसान (और भलाई) कर जैसा एहसान अल्लाह ने तुझ पर किया है। (सू०–क़सस–28/77)

पस जिस शख़्स को ये यक़ीन हो जाये कि उसके पास जो कुछ भी है वो सब रब तआ़ला का फ़ज़्लो करम है तो वो रब तआ़ला के फ़ज़्लो करम को दूसरों तक पहुँचाने से कभी नहीं रुकेगा और ये फ़ेअ़ल उसे दुनिया से बे रग़बत कर देगा और उसकी आख़िरत के लिये ये फ़ेअ़ल बाइसे निजात होगा व उसके ईमान में इज़ाफ़े के बाइस बनेगा और उसे आफ़ात से महफ़ूज़ रखेगा।

जो लोग माल के शरई हुक़ूक़ अदा नहीं करते ज़कात व दीगर वाजिबात, सद्क़ात नहीं देते और अ़ज़ीज़ व अक़ारिब की हाजत पर ख़र्च नहीं करते और फुक़रा व मसाकीन को उनका हक़ नहीं देते उनका अन्जाम निहायत ही बुरा और वहशतनाक होगा क़यामत के दिन उनका माल गंजे सांप की शक्ल में उनके गले का तौक़ बनकर उन्हें डसेगा जिससे उन्हें सख़्त तकलीफ़ होगी और जो लोग–

माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हैं तो सख़ावत के माल का नतीजा निहायत बेहतर और बुख़्ल के माल का अन्जाम उनके लिये आफ़त व वबाल है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर रोज़ फ़रिश्ते नाज़िल होकर दुआ़ करते हैं ऐ अल्लाह ख़र्च करने वालों को उसका बदला अ़ता फ़रमां और ख़र्च न करने वालों के माल को ज़ाए कर दे। (बुख़ारी–सहीह–2/170-ह०–1442)

➡ हज़रत उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इब्ने आदम अगर तू ख़र्च करे तो ये तेरे लिये बेहतर है और अगर तू बुख़्ल करे तो ये तेरे लिये बदतर है और अपने अह्ल व अ़याल से इब्तिदा कर और ऊपर वाला हाथ तेरे नीचे वाले हाथ से बेहतर है ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला होता है और नीचे वाला हाथ मांगने वाला होता है।
(मुस्लिम–सहीह–2/375-ह०–2388)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते है कि हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तुम सेर हो तो भूके को याद करो और जब तुम ग़नी हो तो फ़ुक़रा को याद करो। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/186-ह०–3393)

दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह देने वाला जहन्नमी

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

पस जब बड़ी आफ़त (क़यामत) आ जायेगी उस दिन इन्सान दुनिया में किये हुये अपने हर अ़मल को याद करेगा और फिर हर देखने वाले के लिये दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जायेगी फिर जिस शख़्स ने सरकशी की होगी और दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत पर तरजीह दी होगी तो बेशक दोज़ख़ ही उसका ठिकाना होगा और जो शख़्स अपने रब के हुजूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने अपने नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात व शहवात से रोका तो बेशक जन्नत ही उसका ठिकाना होगा। (सू०-नाज़िआ़त-79/34 ता 41)

रोज़े क़यामत जब इन्सान अपने आअ़माल नामे देखेगा तो उसे तमाम अच्छे व बुरे आअ़माल याद आ जायेंगे जो उसने दुनिया में किये होंगे और मख़्लूक़ पर दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जायेगी तो जिसने सरकशी की और नाफ़रमानी में हद से गुज़रा और दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी पर तरजीह दी यानी दुनिया के लह्व व लाअ़ब और ऐशो इशरत में मशगूल रहे और दीन व अहकामे इलाही को फ़रामोश कर दिया और अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी की तो बेशक उसका ठिकाना दोज़ख़ है और वो शख़्स जिसके-

दिल में ख़ौफ़े आख़िरत और ख़ौफ़े इलाही था और वो जानता था कि रोज़े क़यामत उसे अपने रब के हुजूर हिसाबो किताब के लिये खड़ा होना होगा और उसने अपने नफ़्स को बुरी चीज़ो की ख़्वाहिश से रोका व नेक काम के किये तो उसका ठिकाना जन्नत है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स दुनिया को हलाल तरीक़े पर तलब करे और सुवाल करने व भीक मांगने से बचने के लिये और अपने अह्ल व अ़याल की क़फ़ालत और अपने पड़ोसी पर शफ़क़त के लिये सई (दौड़ धूप) करे और हलाल माल हासिल करे तो वो क़यामत के दिन अल्लाह तअ़ाला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह रौशन होगा और जिसने दुनिया को हराम तरीक़े से तलब किया ताकि वो मालदार हो जाये और लोगों पर फ़ख़्र करे और वो उनको अपनी शान दिखाये तो वो अल्लाह तअ़ाला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआला उससे सख़्त नाराज़ व गज़ब नाक होगा (शुअ़बुल ईमान–10/266-10374,10375)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है। (मिश्कात–4/180--ह०–5212) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/300--ह०–10501)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं दुनिया पीठ फेरने वाली है और आख़िरत सामने आ रही है इन दोंनों (दुनिया व आख़िरत) में से हर एक के तालिब और चाहने वाले होते हैं सो तुम आख़िरत के तलबगार बनो दुनिया के चाहने वाले न बनो क्योंकि बिला शुबा आज अ़मल का मौक़ाअ़ है मगर हिसाब नहीं है और कल हिसाब होगा मगर अ़मल का मौक़ाअ़ नहीं मिलेगा।
(बुख़ारी–सहीह–किताबु र्रिक़ाक़–6/43)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरत की ज़िन्दगी के अ़लावा कोई ज़िन्दगी नहीं।
(बुख़ारी–सहीह–6/41--ह०–6413)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/237--ह०–10245)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी शख़्स में दुनिया से बेरग़बती और क़िल्लत कलाम देखो यानी कम बोलने बाला देखो तो उसका कुर्ब हसिल करो क्योंकि उसको हिकमत व फ़िरासत (दानाई) अ़ता की गई है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/306--ह०–10529)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते है कि जो शख़्स दुनिया से बे रग़बत हो–

जाये तो रब तआ़ला हिकमत व फ़िरासत उसके दिल में सब्त फ़रमा देता है और अल्लाह तआ़ला उसकी ज़बान को हिकमत व फ़िरासत (दानाई) के साथ बुलवाता है और उसकी नज़र को दुनिया के उ़यूब व उसकी बुराईयां दिखाता है व दुनिया की बीमारियां व उसका इलाज दिखाता है फिर दुनिया से उसे जन्नत की तरफ़ सहीह व सालिम उठाता है (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/306-ह०-10531,10532)

इन्सान माल व दुनिया की मुहब्बत व नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील के सबब बेशुमार गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है और अपने नफ़्स पर शैतान के ग़लबे को शिकस्त देने में कामयाब नहीं होता है बल्कि गुनाहों के दलदल में धंसता चला जाता है यहाँ तक कि वो अपनी मौत और अपने बुरे अन्जाम से बेपर‘वाह हो जाता है हालांकि जो माल उसने जमाअ़ किया उस माल से वो अपनी आख़िरत में कोई नफ़अ़ नहीं उठाता क्योंकि जो कुछ दुनिया में है वो दुनिया में ही रहेगा सिवाये नेक आअ़माल के और बेशक जो कुछ दुनिया में है वो सब एक दिन ख़ाक होने वाला है और जो ताअ़मीरात हैं वो सब फ़ना हो जायेंगी इन्सान के सिर्फ़ नेक आअ़माल उसकी क़ब्र व क़यामत के लिये राहत हैं और उसके बुरे आअ़माल क़ब्र व क़यामत के लिये सख़्त मुसीबत हैं और बेशक हम दुनिया में किसी भी चीज़ के मालिक नहीं बस हम इस्तेअ़माल करने के बाद हर चीज़ को छोड़ने वाले हैं और मिट्टी तले क़ब्र में रहने वाले है।

इन्सान अपनी उम्मीदों के पूरा होने का मुतमन्नी रहता है जबकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला की मर्ज़ी के मुताबिक़ ही उसकी उम्मीदें पूरी हो सकती हैं और इन्सान माल को नफ़अ़ बख़्श शैः समझता है जबकि तक़वा से बढ़कर कोई शैः उसके लिये नफ़अ़ बख़्श नहीं है साबिक़ा दौर में किसी नबी को अल्लाह तअ़ाला ने वही भेजी कि मेरा बन्दा अपनी दुनियावी वुसअ़त पर ये समझता है कि मैंने उसे माला माल कर दिया जबकि ये मुअ़ामला तो उसे मुझसे दूर करता है और मेरा मोमिन बन्दा अपनी तंगदस्ती पर रोता और परेशान होता है हालांकि उसे ख़बर नहीं कि इस तरह वो मेरे क़रीब तर होता है

अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने अपने बन्दों में से बाअ़ज़ बन्दों को दुनिया में माल व मताअ़ और दुनियावी शानो शौकत दे करे उन्हें आज़माया और उन्होंने समझा कि ये माल व मताअ़ और लज़्ज़तें हमने अपनी अ़क़्ल और मेहनत से कमाई हैं तो ऐसे लोग दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत और उसकी लज़्ज़ात व शहवात के चुंगुल में फंस गये और बाअ़ज़ लोग दुनिया को तलाक देकर फ़िक्रे आख़िरत में मशगूल रहे और तंगदस्ती में भी अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करते रहे तो वो आअ़ला मरातिब और बुलन्द दरजात के हामिल और मक़बूलाने खुदा हो गये क्योंकि वो जानते थे कि इस फ़ानी अशिया के हुसूल से कोई आअ़ला मक़ाम व मरातिब को नहीं पा सकता।

ख़्वाहिशात की मुहब्बत व मरग़ूब चीज़ें आज़माइश के लिये आरास्ता की गयीं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
लोगों के लिये (नफ़्सानी) ख़्वाहिशात (और उनकी मरग़ूब चीज़ों) की मुहब्बत को (ख़ूब) आरास्ता कर दिया गया है (जिनमें) औ़रतें और औलाद और सोने और चांदी के जमाअ़ किये हुये ख़ज़ाने और निशानदार खूबसूरत घोड़े और मवेशी और ख़ेती (बाग़ात वग़ैराह) ये सब दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है और अल्लाह तआ़ला के पास बेहतर ठिकाना है। (सू०–आले इमरान–3/14)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और आप दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ैब व आराइस की उन चीज़ों को हरगिज़ निगाह उठाकर न देखें जो हमने बाअ़ज़ लोगों को (आ़रज़ी तौर पर) मज़े उड़ाने के लिये दे रखी हैं ताकि हम उन्हीं चीज़ों में उनके लिये फ़ित्ना पैदा कर दें (यानी उनको बड़ी आफ़त व आज़माइश में डाल दें) और आपके रब की (उख़रवी) अ़ता बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाली है। (सू०–ताहा–20/131)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
आप हरगिज़ उन चीज़ों की तरफ़ निगाह उठाकर न देखें जो हमने बाअ़ज़ लोगों को ऐशो इशरत के लिये दे रखी हैं और न ही उन (की गुमराही)

पर अफ़सोस करें और अहले ईमान की दिलजोई के लिये अपनी शफ़क़त व तवज्जौ के बाजू फैला दें। (सू०–हिज्र–15/88)

मज़कूरा आयात में हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) से ख़िताब है लेकिन ये आयात तमाम मुसलमानों के लिये अ़ाम हैं और इनमें मुसलमानों के लिये बड़ी नसीहत और आअ़ला दरस है और इन आयात में जो बात क़ाबिले तवज्जौ है वो ये है कि एक आयत में अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि लोगों की मनपसंद चीज़ों की मुहब्बत को खूब आरास्ता किया गया जिनमें अ़ौरतें, माल व औलाद, सोना, चाँदी और बाग़ात, उ़म्दाह सवारियां और बेहतरीन मकानात और दूसरी आयात में अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि ऐ हबीब जो चीज़ें हमने दुनिया में लोगों के लिये आरास्ता की हैं आप उनकी तरफ़ नज़र उठा कर भी न देखें क्योंकि ये तमाम चीज़ें फ़ानी और अल्लाह तअ़ाला की याद से ग़ाफ़िल कर देने वाली हैं और इनकी बेजा मुहब्बत और रग़बत दोज़ख़ में ले जाने वाली और बुरे अन्जाम का बाइस हैं और इन्हीं के ज़रिये दुनिया परस्तों व खुदा परस्तों के दरमियान फ़र्क़ किया जाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

बेशक हमने ज़मीन पर मौजूद चीज़ों को इसलिये ज़ीनत दी ताकि हम (इन चीज़ों के ज़रिये) लोगों को आज़माये कि इन में से अ़मल के ऐतबार से कौन अच्छा है। (सू०–कह्फ़–18/7)

दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत और इसकी मरगूब चीज़ें ऐसी हैं कि इनकी रग़बत में लोग गुमराह और ग़ाफ़िल हो जाते हैं जबकि दुनिया के सामान को ऐसे कामों में लगायें जिससे आ़क़िबत की दुरस्तगी व आख़िरत की सआ़दतें हासिल हों नेक सालेह बन्दो का माल हमेशा दुनिया नहीं बल्कि दीन रहा है और रग़बत व मुहब्बत और हिर्स व तलब के क़ाबिल तो सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी और जन्नत है लिहाज़ा इनकी रग़बत करनी चाहिये और इन्हीं के हुसूल के लिये हत्तल इमकान कोशिश करनी चाहिये।

हम मुसलमानों की अक्सरियत दुन्यावी चीज़ों की मुहब्बत व रग़बत में मुब्तिला है अह्ले ख़ाना और औलाद की वजह से ज़्यादा से ज़्यादा माल कमाना और उसमें हलाल व हराम का इम्तियाज़ न रखना और माल व दौलत को अपनी ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद समझना और माल व दौलत की हिर्स व तलब में दिन रात कोशिश करना, बैंक बैलेंस बढ़ाना और दुन्यावी सामान में इज़ाफ़ा और बेहतरीन लिबास, उ़म्दाह मकानात और शानदार गाड़ी वग़ैराह का इहतिमाम करना और इन सब चीज़ों की वजह इन्सान अपनी आख़िरत व यादे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है और इस तरह वो अपनी आख़िरत तबाह व बर्बाद कर लेता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम किसी बद अ़मल पर किसी नेअ़मत की वजह से रश्क न करना क्योंकि तुम नहीं जानते कि मरने के बाद वो किस चीज़ से मिलने वाला है और अल्लाह तआ़ला के पास अज़्ज़ियत देने वाली ऐसी चीज़ है यानी दोज़ख़ की आग है जो फ़ना न होगी।
(इमाम बग़वी–शरह अस–सुन्ना–7/324)

दुनिया की खूबसूरती और आराइश और हसीन व जमील अ़ौरतें और माल व सोना चांदी वग़ैराह इन्सान की आज़माइश के लिये हैं और नाफ़रमान व सरकश लोग ही इसे मरगूब नज़र से देखते हैं और खुश होते हैं और इनकी तलब व ख़्वाहिश में कसरते गुनाह में मुब्तिला हो जाते हैं दुनिया से शदीद मुहब्बत व रग़बत रखने वाले लोग उस वक़्त नादिम होंगे जब नदामत उन्हें कोई फ़ायदा न देगी अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया को फ़ित्ना और आज़माइश बनाया है ताकि माअ़लूम हो सके कि कौन इसके पास ठहरता है और कौन इसके फ़रेब में मुब्तिला होता है और कौन इससे बचता है और कौन अच्छे अ़मल करता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो कुछ ज़मीन पर मौजूद है हमने उसको ज़मीन की ज़ीनत बनाया ताकि हम उनको आज़मायें कि उनमें कौन अच्छे अ़मल करता है फिर जो कुछ इस ज़मीन पर है हम उन सबको एक दिन चटयल मैदान बनाने वाले हैं। (सू०–कह्फ़–18/7,8)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

मगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह देते हो हालांकि आख़िरत की ज़िन्दगी बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाली है। (सू०-आअ़ला-87/16,17)

इन्सान जब देखे कि उसका नफ़्स सरकशी इख़्तियार करके दुनिया की ज़ैबो जीनत की तरफ़ माइल और मुतावज्जै है तो उसे चाहिये कि फ़ानी पर बाक़ी और हमेशाा रहने वाली ज़िन्दगी को तरजीह दे और जन्नत व उसकी कसीर नेअ़मतों की तरफ़ ग़ौर करे फिर दुनिया और आख़िरत की ज़िन्दगी के दरमियान मुवाज़ना करे और आख़िरत की ज़िन्दगी को तरजीह देते हुये कसरत से नेक आअ़माल करे और ताअ़ते खुदा व ताअ़ते रसूल में अपनी जिन्दगी गुज़ारे।

दुनिया की मरगूब चीज़ों में ये सिफ़त पाई जाती है कि वो अपनी तरफ़ माइल करती हैं और लोग दुन्यावी माल व मताअ़ की हिर्स व तलब में मशगूल होकर अपनी तख़लीक़ के मक़सद को भूल जाते हैं कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने इन्सान की तख़लीक़ नेक आअ़माल व इ़बादात के लिये की है दुनिया की मुहब्बत व रग़बत इन्सान के लिये फ़क़त मशक़्क़त व फ़ित्ना-ए-अ़ज़ीम है और जिसने इसकी हक़ीक़त और अपनी तख़लीक़ के मक़सद को समझ लिया तो दुनिया उसके नज़दीक हक़ीर, ज़लील और ग़लीज़ है और दुनिया लोगों के लिये फ़ित्ना और बड़ी आज़माइश है कि कौन-

अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स और दुन्यावी लज़्ज़ात पर अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व रिज़ा को तरजीह देता है चुनांचा अ़क़्लमंद और फ़रमां बरदार बन्दो ने इस दुनिया को आख़िरत के हुसूल का ज़रिया बनाया और वो इससे फ़ायदा तो उठाते हैं लेकिन इस तरह कि वो अल्लाह तबारक व तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी के हुसूल में मददगार साबित हो और उनके बदन तो इसके साथ होते हैं लेकिन दिल इससे दूर होते है और वो दुनिया में रहते हैं मगर दुनिया उनमें नहीं रहती तो ऐसे लोगों के लिये ये दुनिया उनके आख़िरत के सफ़र के लिये ज़ादे राह बन जाती है।

ऐसे लोग उख़र'वी नेअ़मतों के मुस्तहिक़ व सज़ावार हो जाते हैं यानी जन्नत और उसकी दायमी व अब्दी नेअ़मतें उन्हें हासिल होंगी जिनमें ऊँचे ऊँचे महल्लात और बेशुमार बुलन्द व बाला दरख़्तों के बाग़ात व तरह तरह के फलों व फूलों से लदे हुये दरख़्त और उनकी मर्ज़ी से चलने वाली नहरें और हर ऐ़ब व नक़्स से पाक बीविया और बेशुमार नेअ़मतों के साथ हमेशा की ज़िन्दगी और वो तमाम चीज़ें होंगी दिल जिनकी ख़्वाहिश करेगा वो सब जन्नत में मयस्सर होंगी और रब तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी और सबसे बड़ी नेअ़मत अल्लाह तआ़ला का दीदार अब ज़रा इस शानदार व खूबसूरत जन्नत का इस हक़ीर दुनिया से मुक़ाबला व मुवाज़ना करो फिर जो बेहतर हो उसका इन्तिख़ाब करो।

दुनिया इन्सान को अपनी ज़ैबो ज़ीनत व आराइश में इस तरह फंसा लेती है कि उसे आख़िरत के मुताअ़ल्लिक़ सोचने का वक़्त ही नहीं मिलता और दुन्यावी सामान खुसूसन मालो दौलत और बीवी व औलाद और ज़र व जायदाद की शदीद मुहब्बत व रग़बत उसे अन्धा कर देती है और इन चीज़ो का नशा उस पर चढ़ जाता है इस नशे की वजह से वो अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करता और अल्लाह व रसूल से बग़ावत करने पर आमादा हो जाता है और वो ये भूल जाता है कि उसे दुनिया में हमेशा नहीं ठहरना है और इन्सान इन चीज़ों में गिरफ़्तार होकर अपनी आख़िरत से बेफ़िक्र व कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है जो उसे अ़ज़ाबे आखिरत व दोज़ख की तरफ़ ले जाती हैं।

इन्सान इस दुनिया को अपनी हक़ीक़ी क़याम गाह समझता है और यहाँ से जाना ही नहीं चाहता इसी तरह जब वो अपनी माँ के पेट में था तो वो उसे ही अपनी हक़ीक़ी क़याम गाह समझता था और वहाँ से भी दुनिया में आना नहीं चाहता था फिर जब वो माँ के पेट से बाहर आया तो रो रो कर गुल मचाया फिर इस दुनिया में आकर उसने अपना मक़ाम समझ लिया फिर वो ऐसा आशिक़ हुआ कि यहाँ से जाना नहीं चाहता ये दुनिया भी उस माँ के पेट की तरह तंग व तारीक है और मशक़्क़तों व तकलीफ़ों की जगह है और जैसे तू मां के पेट न रहा ऐसी इसी तरह तू दुनिया में भी हमेशा नहीं रहेगा।

जायज़ तरीक़े से एअ़तदाल के साथ बीवी व माल व औलाद और ज़र व जायदाद और दुनिया की चीज़ों से मुहब्बत करना ममनूअ़ नहीं बल्कि अज्रो सवाब का बाइस है क्योंकि ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और इनकी मुहब्बत इस तरह हो कि इन्सान यादे इलाही व अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल न हो और इन सब की मुहब्बत ताअ़ते इलाही में रुकावट न बने और शर व बुराई की तरफ़ माइल न होने दे तो ऐसी मुहब्बत उसके लिये निजात का ज़रिया और आख़िरत की सआ़दत और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी का सबब होती है और इनसे बेजा मुहब्बत आख़िरत से गाफ़िल कर देने वाली और निहायत बुरी और तमाम गुनाहों की जड़ है इसी तरह से माल जमाअ़ करना बुरा नहीं है अगर नीयत व मक़सद बुरा न हो यानी अगर माल की पूरी ज़कात निकाली जाये और सद्क़ात व ख़ैरात की जाये व राहे खुदा में ख़र्च किया जाये और उस माल को आख़िरत का तोशा बनाया जाये और ऐसे कामों में ख़र्च किया जाये जिससे उसकी आक़िबत दुरस्त हो तो ऐसा माल अच्छा है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जो लोग अल्लाह की राह में शब व रोज़ अपने माल ज़ाहिर व पोशीदा ख़र्च करते हैं तो उनके लिये उनके रब के पास बेहतरीन अज्र है (रोज़े क़यामत) उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही कोई ग़म होगा। (सू०-बक़राह-2/274)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो भी माल तुम ख़र्च करते हो वो तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिये है अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के सिवा तुम्हारा माल ख़र्च करना मुनासिब नहीं है और जो माल तुम ख़र्च करोगे तो उसका अज्र तुम्हें पूरा पूरा दिया जायेगा।
(सू०-बक़राह-2/272)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ाबिले रश्क तो वो शख़्स है जिसे अल्लाह तआ़ला माल दे और वो राहे हक़ में ख़र्च करे।
(बुख़ारी-सहीह-2/149-ह०-1409)

➡ हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तुम ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सद रिज़ाये इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जोयगा हत्ता कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक़मा डालते हो उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जायेगा।
(बुख़ारी-सहीह-1/112-ह०-56)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/602-ह०-6555)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मर्द अपने ऊपर व अपनी बीवी पर और अपने बच्चों पर और अपने ख़ादिम पर जो

भी ख़र्च करे वो सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–1/112-ह०–55)
(इब्ने माजा–सुनन–2/127-ह०–2138)

➡ हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी का अपने घर वालों पर ख़र्च करना सद्क़ा है।
(मुस्लिम–सहीह–3/39-ह०–2322)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1053-ह०–1965)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे घर वालों का भी तुम पर हक़ है तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी जान (नफ़्स) का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। (मुस्लिम–सहीह–3/163-ह०–2743)
(अबू दाऊद–सुनन–2/841-ह०–2427)
(नसाई–सुनन–2/106-ह०–2401)
(अबू दाऊद–सुनन–2/101-ह०–1369)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि कहाँ हैं वो लोग जो मेरी बुजुर्गी और मेरी इताअ़त के–

लिये आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करते थे आज के दिन मैं उनको अपने साये में रखूँगा और आज के दिन मेरे साये के सिवा कोई साया न होगा। (मुस्लिम–सहीह–6/200-ह०–6548)

फ़रिश्तों में अ़क्ल है मगर शहवत नहीं है और जानवरों में शहवत है मगर अ़क्ल नहीं है मगर इन्सान में शहवत भी है और अ़क्ल भी है और जिस शख़्स की अ़क्ल शहवत पर ग़ालिब हो तो वो फ़रिश्तों से बढ़कर है और जिस शख़्स की शहवत अ़क्ल पर ग़ालिब हो तो वो जानवरों से भी बदतर है और अ़क्ल का तअ़ाल्लुक़ रुह से है व शहवत का तअ़ाल्लुक़ नफ़्स से है और बेवकूफ़ दुनिया की चीज़ों की मुहब्बत व रग़बत में फंसकर नीचे गिरता है और अ़क्ल मंद इन्ही चीज़ों के ज़रिये से अल्लाह तअ़ाला तक पहुँचता है और दुनिया दार शख़्स दुनिया की चीज़ों की मुहब्बत में डूबकर दीन व शरीअ़त के तक़ाज़ों को फ़रामोश कर देता है जबकि इस्लाम ने दीन व दुनिया दोनों के मुताअ़ल्लिक़ हिदायत व नसीहत की है।

दुनिया की ख़्वाहिशात इन्सान को तबाह व बर्बाद कर देती है अगर ख़्वाहिशात पर अ़क्ल ग़ालिब हो तो बच जायेगा और अगर ख़्वाहिशात अ़क्ल पर ग़ालिब आ जाये तो हलाकत ही हलाकत है जिसने अपने ज़िन्दगी की लगाम ख़्वाहिश के हाथों में थमा दी तो उसका हलाक होना यक़ीनी है और दुनिया में अ़क्ल से काम लेने वाला कामयाब है।

दुनियावी ज़िन्दगी चन्द रोज़ा मज़ा है फिर अल्लाह की तरफ़ जाना है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(उनके लिये) दुनिया में चन्द रोज़ा मज़ा है फिर उन्हें हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है फिर हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखायेगे उसके बदले में जो कुफ़्र वो किया करते थे।
(सू०–युनूस–10/70)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
हम उन्हें (दुनिया में) थोड़ा फ़ायदा पहुँचायेंगे फिर हम उन्हें बेबस करके सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ ले जायेंगे। (सू०–लुक़मान–31/24)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
दुनिया की ज़िन्दगी का थोड़ा सा फ़ायदा (उठा लो) बिल आख़िर तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है उस वक़्त हम तुम्हें उन आअ़माल से खूब आगाह कर देंगे जो तुम किया करते थे। (सू०–युनूस–10/23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ये चन्द रोज़ा ज़िन्दगी का मज़ा है फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वो बहुत बुरा ठिकाना है। (सू०–आले इमरान–3/197)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
तुम थोड़ा अ़रसा खालो और मज़ा उठा लो बेशक तुम मुजरिम हो। (सू०–मुरसलात–77/46)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
आप (ग़मगीन न हो और आप) उन्हें छोड़ दीजिये वो खाते (पीते) रहें व ऐश करते रहें और उनकी झूठी उम्मीदें उन्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखें फिर वो अ़नकरीब अपना अन्जाम जान लेंगे। (सू०–हिज्र–15/3)

दुनियावी माल व मताअ़ व ऐश व इशरत सिर्फ़ चन्द दिनों का है और माल व जाह और दुनिया की लज़ीज़ चीज़ों का मज़ा बहुत थोड़े दिनों के लिये है जो बहुत जल्द ख़त्म हो जायेगा और हर शख़्स इसे छोड़कर दुनिया से कूच कर जायेगा और सामान रह जायेगा और बरतने वाला चला जायेगा और दुनिया का नफ़अ़ आ़रज़ी नफ़अ़ है और उख़र'वी नेअ़मतें व राहतें दायमी हैं और दुनियावी दौलत व हुकूमत कामयाबी की अ़लामत नहीं है बल्कि ज़िन्दगी को ताअ़त व इ़बादात और नेक आअ़माल का मक़सद बना लेना कामयाबी है

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
जिसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिये पैदा किया कि वो तुम्हें आज़माये कि तुममें से कौन अ़मल के लिहाज़ से बेहतर है। (सू०–मुल्क–67/2)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और मैंने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ़ इसलिये पैदा फ़रमाया कि वो मेरी इ़बादत करें।
(सू०-ज़ारियात-51/56)

दुनिया में कुफ़्फ़ार अपनी ज़िन्दगी मज़ें से गुज़ारता है मगर वो मुक़र्ररा वक़्त तक ही दुनिया का मज़ा उठा सकेंगे उनके कुफ़्र और उनके बुरे आअ़माल का ख़ामयाज़ा उन्हें भुगतना होगा और उन पर सख़्त तरीन अ़ज़ाब मुसल्लत कर दिया जायेगा और उनको दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में घसीट कर फेंक दिया जायेगा और वहां फ़रिश्ते उनको आग के गुर्ज़ों से मारेंगे।

अफ़सोस बाअ़ज़ मुसलमान भी इस दुनिया के फ़ेरब में फंसे हुये हैं और अ़मली ऐ़तबार से उनके आअ़माल कुफ़्फ़ारों की तरह ज़्यादा माल व मताअ़ हासिल करने के लिये वो बहुत मेहनत व मशक़्क़त उठाते हैं और उनका जीना मरना सब दुनिया व मताअ़े दुनिया के लिये है और ख़ालिक़ की रिज़ा हासिल करने के बजाय मख़लूक़ की रिज़ा के तालिब हैं और वो ये भूल गये हैं कि दुनियावी ज़िन्दगी का फ़ायदा और मज़ा बहुत थोड़ा है बिल आख़िर उन्हें अपने रब से मिलना है और हिसाबो किताब के लिये खड़ा होना है मगर वो चन्द रोज़ा दुनिया की लज़्ज़ात व ऐशो इशरत में इतने मस्त हैं कि वो गुनाहों के सबब मिलने वाले उख़र‘वी अ़ज़ाब को भूल गये हैं और नेक आअ़मालों के-

सबब आख़िरत में मिलने वाली जन्नत व उसकी बेशुमार दायमी नेअ़मतों का ख़्याल भी उनको नहीं आता बस वो दुनिया के मज़े में मस्त हैं जबकि हर इन्सान को अपने अच्छे और बुरे आअ़माल का पता मरते ही लग जाता है फिर वो नदामत और पछताबे के सिवा कुछ भी नहीं कर सकेगा।

दुनिया के ऐशो आराम व दुनियावी लज़्ज़ात आख़िरत के मुक़ाबले में एक लम्हा भी नहीं हैं क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी ज़ुमूमन 60–70 साल के दरमियान होती और आख़िरत की ज़िन्दगी दायमी है जो कभी ख़त्म न होगी किसी शख़्स से कहा जाये कि चन्द लम्हे के लिये धूप में खड़ा हो जाये फिर उसे पूरी ज़िन्दगी एक शानदार बहुत बड़े महल में रखा जाये जहां ऐशो आराम के सारे सामान मौजूद हों और उसे वहां कोई मेहनत व मशक़्क़त भी न उठाना पड़े और उसकी ख़िदमात के लिये वहां ख़ादिम भी मौजूद हों और उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उस महल में उसकी हसीन खूबसूरत बीवियां हों तो बताओ उस शख़्स का चन्द मिनट धूप में खड़ा रहना बेहतर है या सारी ज़िन्दगी ऐशो आराम के साथ उस महल में रहना बेहतर है इसी तरह दुनिया की ऐशो इशरत है जो चन्द रोज़ा है और आख़िरत की ज़िन्दगी अब्दी व दायमी है जो कभी ख़त्म न होगी और आख़िरत की नेअ़मतों के मुक़ाबले दुनिया की तमाम नेअ़मतें हक़ीर हैं तो ऐ ग़ाफ़िल तू खुद फ़ैसला कर कि तुझे लम्हे भर की ज़िन्दगी का ऐशो आराम चाहिये

या फिर कभी भी ख़त्म न होने वाली ज़िन्दगी का ऐशो आराम चाहिये दुनिया की आ़रज़ी नेअ़मतें व लज़्ज़तें एक दिन फ़ना हो जायेंगी तो तुझे दुनिया की आ़रज़ी नेअ़मतें व लज़्ज़तें चाहिये या हमेशा बाक़ी रहने वाली नेअ़मतें व लज़्ज़तें चाहिये और तुझ पर ये वाजिब है तू इस पर ग़ौरो फ़िक्र कर।

दुनिया की तमाम नेअ़मतें और मालो मताअ़ क़लील है व इससे होने वाला फ़ायदा भी क़लील मगर इसका हिसाब तवील है और फिर हराम व नाजाइज़ तरीक़े से इसके हासिल करने का अ़ज़ाब भी तवील है और इसके सबब सरज़द होने वाले शर व गुनाहों का अ़ज़ाब भी निहायत शदीद है और इताअ़त गुज़ार नेक मोमिन का दुनिया में मसाइबो आलाम और मशक़्क़त का उठाना जन्नत में हमेशा रहने वाली नेअ़मतों, राहतों व ख़ुशियों और मर्सरतों के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है ये वो लोग हैं कि जिनके दिल अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से मुज़य्यन व दुनिया की रग़बत से पाक हैं ये अल्लाह तआ़ला के इताअ़त गुज़ार बन्दे हैं व इनके अक़वाल व अफ़आ़ल भी अच्छे हैं ऐसे लोगों को अल्लाह तबारक व तआ़ला आख़िरत में कसीर नेअ़मतों व लज़्ज़तों और ऐशो आराम से सरफ़राज़ फ़रमायेगा।

दुनिया हक़ीर व ज़लील है और आख़िरत की अब्दी चीज़ों के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी है जो हमें कुछ वक़्त के लिये मिली हैं और दुनिया की–

नेअ़मतें आफ़तों, हसरतों और तकलीफ़ों से घिरी हैं तो ऐसी आ़रज़ी चीज़ें जो आफ़तों, हसरतों व तकलीफ़ों का बाइस हों वो दिल लगाने के क़ाबिल कैसे हो सकती है

इन्सान जब अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों से फ़ायदा उठाता है मगर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करता व उसके हुकूक़ अदा नहीं करता तो उसको आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब का सामना करना होगा दुनिया का ऐशो आराम और लज़ीज़ व मरगूब चीज़ों को हासिल करना और ख़्वाहिशात को पूरा करना बहुत खुशगवार है लेकिन ये उस वक़्त है जब इन्सान अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाये और उसके अहकामात पर अ़मल करे तो उसकी दुनिया भी आराम देह होगी व आख़िरत भी और अगर वो अल्लाह की तौहीद की तस्दीक़ व उसके अहकामात पर अ़मल न करे तो आख़िरत में उसको सख़्त तरीन अ़ज़ाब दिया जायेगा अगर इन्सान को इस बात का कामिल यक़ीन होता कि दुनिया की फ़ानी व आ़रज़ी नेअ़मतों व लज़्ज़तों और अल्लाह तआ़ला के अहकामात पर अ़मल न करने सबब उसको कितना सख़्त अ़ज़ाब भुगतना होगा तो वो इन चीज़ों की तरफ़ कभी भी रग़बत न करता।

कुफ़्फ़ार दुनिया को कुछ दिन बरत लें फिर उनका दायमी ठिकाना दोज़ख़ होगा और दोज़ख़ बद तरीन बिस्तर है कि वहाँ की आग दोज़ख़ी–

को हर तरफ़ से ऐसे घेर लेगी जैसे बिस्तर सोने वाले को हर तरफ़ से घेर लेता है।

इन्सान अपनी ज़िन्दगी में लम्बी लम्बी उम्मीदें रखता है और तवील मन्सूबे बनाता है कि मैं ये काम करुंगा फिर ये काम करुंगा ज़मीन जायदाद बनाने व मालो ज़र हासिल करने के ज़राये और तिजारत व सफ़र और बच्चों की तालीम और मकान की ताअ़मीरात व शादी ब्याह बग़ैराह के मन्सूबे बनाता है उसके मन्सूबो का एक तसलसुल होता है मगर उसको ये पता नहीं होता कि कब अचानक मौत आ जायेगी और उसके सारे मन्सूबे धरे के धरे रह जायेंगे हालांकि इस तरह के मन्सूबे बनाना व उम्मीदें रखना मुत्लक़न ममनूअ़ नहीं है।

ममनूअ़ सिर्फ़ ये है कि इन्सान सिर्फ़ दुनिया कमाने और दुनियावी ज़ैबो ज़ीनत से लुत्फ़ अन्दोज़ होने में मशगूल रहे और आख़िरत की तरफ़ उसकी कोई तवज्जौ न हो अगर इन्सान का मक़सद सिर्फ़ आख़िरत हो और वो दुनियावी उमूर को उख़र‘वी कामयाबी के हुसूल का वसीला व ज़रिया बनाये और उख़र‘वी सवाब को हासिल करने के लिये दुनिया को हासिल करे और उसके लिये मन्सूबे बनाये और उसकी उम्मीदें रखे तो ये जाइज़ व मुस्तहसन व कारे सवाब है हज़रत उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान व हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) मालदार थे लेकिन वो अपने माल को दीन के लिये ख़र्च किया करते थे

दुनिया की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है और आख़िरत हमेशगी का घर है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सो तुम्हें जो कुछ भी (माल व मताअ़) दिया गया है वो दुनियावी ज़िन्दगी का चन्द रोज़ा फ़ायदा है और जो कुछ अल्लाह के पास है वो बेहतर और बाक़ी रहने वाला है ये उन लोगों के लिये है जो ईमान लाये और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं (सू०–शूरा–42/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप उन्हें फ़रमा दीजिये कि दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है और आख़िरत बहुत बेहतर है उसके लिये जो परहेज़गार बन जाये और वहाँ पर एक धागे के बराबर भी तुम्हारी हक़ तल्फ़ी नहीं की जायेगी। (सू०–निसा–4/77)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये दुनिया की ज़िन्दगी बस (चन्द रोज़ा) फ़ायदा उठाने के सिवा कुछ भी नहीं और बेशक आख़िरत हमेशा रहने वाला घर है। (सू०–मोमिन–40/39)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और ऐ लोगो जो कुछ भी तुम्हें अ़ता किया गया वो सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी का साज़ो सामान और उसकी ज़ीनत है और जो अल्लाह के पास है वो

इससे ज़्यादा बेहतर और दायमी (हमेशा बाक़ी रहने वाला) है तो क्या तुम इस हक़ीक़त को नहीं समझते। (सू०–क़सस–28/60)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और ये सब कुछ आ़रज़ी और हक़ीर मताअ़ है और आख़िरत (का हुस्न व आराइश) आपके रब के पास है जो सिर्फ़ परहेज़गारों के लिये है। (सू०–ज़ुख़रुफ़–43/35)

ऐ लोगो तुम्हें जो कुछ भी दुनियावी माल व मताअ़ दिया गया है वो आख़िरत का ज़ादे राह नहीं है बल्कि वो तो सिर्फ़ दुनियावी चन्द रोज़ा ज़िन्दगी का साज़ो सामान है और ये मालो मताअ़ तुम्हारे पास हमेशा बाक़ी भी नहीं रहेगा जबकि आख़िरत की नअ़मते व लज़्ज़तें और ऐशो आराम जो अल्लाह के पास है वो इससे बहुत ही ज़्यादा बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है

और ये उनके लिये है जो अल्लाह व रसूल के अहकामात पर अ़मल पैरा हैं और वो अपने रब पर भरोसा रखते हैं दुनियावी माल व मताअ़ व शानो शौकत और ऐशो आराम उख़र‘वी अज्रो सवाब व कसीर नेअ़मतों और राहतों के मुक़ाबले में एक ज़र्रा बराबर भी नहीं है अल्लाह तआ़ला ने दुनिया तर्क करने और आख़िरत को इख़्तियार करने की हमें नसीहत व तरग़ीब फ़रमाई है कि दुनिया की तमाम चीज़ें और माल व मताअ़ और

लज्जतें, शहवतें व ऐशो आ़फ़ियत सब मुनक़ताअ़ होने वाली शैः है और जो अल्लाह तआ़ला के पास है वो सबसे बेहतर और जलीलुल क़द्र है और उख़र'वी नेअ़मतों व दुनियावी नेअ़मतों के माबैन कोई निस्बत ही नहीं है क्योंकि उख़र'वी नेअ़मतें व लज़्ज़तें कभी ख़त्म होने वाली नहीं है और न कभी मुन्तक़िल होने वाली हैं और दुनिया के अमवाल, असबाब व औलाद व दीगर नेअ़मतें ये सब दुनिया का आ़रज़ी नफ़अ़ है

अगर इन्सान दुनियावी नेअ़मतों में मुन्हमिक (ज़्यादा मसरुफ़) और मुस्तग़रक होकर अल्लाह तआ़ला के अहकाम की इताअ़त व उसकी इ़बादत से ग़ाफ़िल रहे तो आख़िरत में वो सख़्त अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होगा और अगर इन्सान मालो मताअ़ और दीगर नेअ़मतों के हुकूक़ अदा करे और वो दुनिया व मताअ़े दुनिया से ज़्यादा दिलचस्पी न रखे और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व उसकी इ़बादात में ज़्यादा रग़बत रखे तो उसे उस पर अज्रो सबाब की सूरत बेहतरीन नेअ़मतें अ़ता की जायेंगी जो कभी ख़त्म न होगी और उसके पास हमेशा हमेशा बाक़ी रहेंगी।

दुनिया की नेअ़मतें व लज़्ज़तें अ़नक़रीब ज़ाइल हो जाने वाली हैं क्योंकि ये आ़रज़ी और फ़ानी हैं पस जो लोग इस हकीक़त को जानते हैं वो इस तरफ़ कभी राग़िब नहीं होते और उनके लिये अल्लाह तआ़ला की इताआ़त व इ़बादात में

मशक़्क़त उठाना उनके नुफूस के लिये बहुत ही आसान होता है क्योंकि वो जानते है जो मशक़्क़त वो बर्दाश्त कर रहे हैं वो तवील अ़रसे के लिये नहीं है तो उनके लिये उसको बर्दाश्त करना बहुत आसान हो जाता है और अगर इन्सान दुनिया व आख़िरत में मुवाज़ना करे तो वो जान लेगा कि जन्नत अपनी ज़ात व लज़्ज़ात और ज़मान के ऐतबार से निहायत ही बेहतर है और जन्नत की तमाम लज़्ज़तें हर क़िस्म की कुदूरतों से पाक हैं बल्कि लज़्ज़ात का जो तसव्वुर इन्सान के ज़हन में होता है जन्नत की लज़्ज़तें व नेअ़मतें उससे बहुत ज़्यादा खुशगवार और लुत्फ़ अंदोज़ हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
सो किसी को माअ़लूम नहीं जो आँखो की ठण्डक उनके लिये जन्नत में पोशीदा रखी गई है ये उन आअ़माले सालेहा का बदला होगा जो वो करते रहे थे। (सू०-सज्दा-32/17)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बन्दो के लिये जन्नत में वो सामान और लज़्ज़तें तैयार की हैं जिनको किसी आँख ने न देखा और न ही किसी कान ने सुना और न ही किसी शख़्स के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा। (बुख़ारी-सहीह-3/471-3244) (इब्ने माजा-सुनन-3/414-ह०-4328)

और दुनिया की लज़्ज़तें मुख़्तलिफ़ कुदूरतों से पाक भी नहीं होतीं और अगर दुनियावी लज़्जतों का मसाइबो आलाम और मशक़्क़तों से मुक़ाबला किया जाये जो दुनियावी लज़्ज़तों से वाबस्ता होती हैं तो जन्नतों की लज़्ज़तों व नेअ़मतों के साथ दनियावी लज़्ज़तों व नेअ़मतों का किसी भी लिहाज़ से कोई निस्बत ही नहीं क्योंकि दुनिया आख़िरकार ख़त्म हो जायेगी और इन्सान की उ़म्र दुनिया की निस्बत से निहायत माअ़लूमी सा अ़रसा है और उख़्र‘वी नेअ़मतें कभी ज़ाइल न होगी और हमेशा बाक़ी रहने वाली हैं और वहाँ के रहने वालों के लिये हमेशा की ज़िन्दगी है

जब अ़क़्ल मंद शख़्स दुनिया व आख़िरत इन दोनों घरों के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता है कि तो इनकी हक़ीक़त उस पर वाज़ेह और नुमायां हो जाती है और वो जान लेता है कि इन दोनों में से कौन सा घर ज़्यादा तरजीह देने का मुस्तहिक़ है और किस घर के लिये उसे ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिये और किस घर की तलब में उसे जद्दो जह्द करनी चाहिये।

तो यक़ीन कर लो कि दुनिया फ़क़त थोड़ा सा बरतने का सामान है और आख़िरत की नेअ़मतें व लज़्ज़तें व ऐ़शो आराम बाक़ी और हमेशा रहने वाली शैः है और दुनिया मशकूक है व आख़िरत यक़ीनी है और दुनिया आफ़तों और मुसीबतों से मख़लूत है और आख़िरत ऐशो आराम व राहतों–

और मशर्रतों से लबरेज़ व दायमी है और दुनिया में इन्सान की हर ख़्वाहिश पूरी नहीं होती और आख़िरत में ख़्वाहिश के मुताबिक़ हर चीज़ मिलेगी और दुनिया में दिल के साथ नफ़्स भी है जो बुरी चीज़ों को भी चाहता है और आख़िरत में नफ़्स न होगा लिहाज़ा वहाँ तुम्हारी हर ख़्वाहिश पूरी की जायेगी और दुनिया फिराक़ (जुदाई) की जगह है और आख़िरत विसाल की जगह है और दुनिया मज़मूम है और आख़िरत बेहतर व खूबसूरत और खुशगवार और क़ाबिले रश्क है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो माल अल्लाह ने तुझे दिया है उस के ज़रिये आख़िरत का घर तलब कर और दुनिया से अपना हिस्सा न भूल और एहसान कर जैसा कि अल्लाह ने तुझ पर एहसान किया और ज़मीन में फ़साद न कर बेशक अल्लाह तआ़ला फ़सादियों को पसंद नही करता। (सू०-क़सस-28/77)

अफ़सोस मुसलमानों की अक्सरियत भी आ़रज़ी दुनिया को आख़िरत पर तरजीह देने में ग़ैर मुस्लिमों की मिस्ल हो चुकी है और उनमें से बाअ़ज़ का हाल तो ऐसा है कि ज़्यादा से ज़्यादा मालो मताअ़ हासिल करने की वजह से वो हराम ज़राये से भी माल को हासिल कर रहे हैं और अल्लाह तआ़ला के अ़ता कर्दा माल के हुकूक़ भी अदा नहीं करते और ज़कात सद्क़ात देने में वो बुख़्ल करते है और दुनिया का माल और उसकी

ऐशो इशरत को हासिल करने को अपनी ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद समझते और इसी को सबसे ज़्यादा तरजीह देते हैं और इसे हासिल करने के लिये कबीरा गुनाहों से भी परहेज़ नहीं करते और आख़िरत के अन्जाम के मुताअ़ल्लिक़ उन्हें ज़र्रा बराबर भी पर'वाह नहीं है अल्लाह तआ़ला उन्हें हिदायत और अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाये।

अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल ने हमें दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करने की तल्क़ीन व नसीहत फ़रमाई और ख़बरदार किया कि अपनी आख़िरत से रग़बत रखो व इस दुनिया के धोके में न आओ और आख़िरत को अपना मक़सूद व मतलूब बनालो क्योंकि दुनिया में जो कुछ मख़्लूक़ को अ़ता किया गया मसलन सोना, चांदी, माल व मताअ़, खेती, मकान, व जायदाद व औ़रतें और बच्चे और लज़ीज़ चीज़ें ये सिर्फ़ दुनिया की चन्द दिनों की ज़ीनत है बन्दा इनसे सिर्फ़ थोड़े दिनों तक नफ़अ़ उठा सकता है और थोड़े वक़्त तक फ़ख़्र व रिया के तौर पर इस दुनिया से ख़ुद को आरास्ता कर सकता है फिर जल्द ही तमाम मालो मताअ़ उसे छोड़ना है फिर वो मालो मताअ़ दूसरे लोगों का होगा और वो इस फ़ानी दुनिया से सिर्फ़ हसरत, नदामत और नाकामी और अपने गुनाहों के बोझ के साथ ज़मीन के अन्दर क़ब्र में लिटा दिया जायेगा और इस दुनिया में जो कुछ उसने समेटा और जमाअ़ किया था वो उसे हलाकत व ख़सारे के सिवा उसे कोई नफ़ाअ़ न देगा।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
और बेशक तुम (रोज़े क़यामत) हमारे पास इस तरह तन्हा आओगे जैसे हमने तुम्हें पहली बार तन्हा पैदा किया था और अमवाल और औलाद में से जो हमने तुम्हें दे रखा है वो सब कुछ अपनी पीठ पीछे छोड़ आओगे। (सू०-अनआ़म-6/94)

लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि दुनिया की ऐशो इशरत व माल व दौलत की तरफ़ राग़िब न हों बल्कि वो इससे अपनी आख़िरत के लिये ज़ादे राह बनाये और ताअ़ात व इ़बादात के ज़रिये से अपनी बख़्शिश व जन्नत व उसकी नेअ़मतों की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करें।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
अपने रब की बख़्शिश और उसकी जन्नत की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ जाओ कि जिसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन की वुसअ़त की तरह है जो अल्लाह और उसके सब रसूलों पर ईमान लाने वालों के लिये तैयार की गई है ये अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे उसे अ़ता फ़रमां देता है और अल्लाह तअ़ाला बड़ा फ़ज़्ल वाला है।
(सू०-हदीद-57/21)

अल्लाह तअ़ाला हमें दुनिया की हक़ीक़त व उसकी हक़ारत को समझने और अहकामे इलाही व दीनी ताअ़लीम पर अ़मल करने और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक दुनिया ज़वाल और वबाल और इन्तिक़ाल का घर है और ये धोका व फ़रेब देने वाली है और ये जो कुछ भी देती है एक दिन सब छीन लेती है इस दुनिया के रंजोग़म का कोई इख़्तिताम नहीं और इसके मसाइबो आलाम से कभी सुकून व आराम नहीं और बेशक हम लोग दुनिया कमाने के लिये पैदा नहीं किये गये बल्कि हमें चाहिये कि दुनिया में रहकर अख़िरत के लिये तोशा बनायें और बेशक दुनिया ऐसा घर है कि जिसका अव्वल तकलीफ़ और इसका आख़िर फ़ना है और इसकी हलाल चीज़ों पर हिसाब होगा और इसकी हराम चीज़ों पर अ़ज़ाब होगा और जो शख़्स इसमें ग़नी है वो अक्सर फ़ित्ने में मुब्तिला है और जो ग़रीब व मुहताज है वो ग़म में मुब्तिला है

ये दुनिया इसके तलबगारों को दी गई है और बेशक अ़क्ल अन्धा है वो शख़्स जो दुनिया के लिये जमाअ़ करता है और वो शख़्स आंखो वाला अ़क़्ल मंद है जो आख़िरत के लिये तोशा तैयार करता है पस तअ़ाज्जुब है उस शख़्स पर जो कि इम्तिहान गाह को आराम गाह समझता है यानी दुनिया जो कि आज़माइश का घर है सफ़र की जगह है उसे वो मन्ज़िले मक़सूद समझता है और वो खुद को मुक़ीम समझता है जबकि वो दुनिया में मुसाफ़िर है फिर भी वो खुद को अ़क़्ल मंद समझता है जबकि वो सबसे बड़ा बेवक़ूफ़ है।

दुनिया की ज़िन्दगी धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम्हारे अज्र पूरे के पूरे तो क़यामत के दिन ही दिये जायेंगे पस जो कोई दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया तो वो कामयाब हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं। (सू०–आले इमरान–3/185)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा था और वो अपनी जानों के ख़िलाफ़ इस (बात) की गवाही देंगे कि वो काफ़िर थे। (सू०–अनआ़म–6/13)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ये वो लोग हैं जिनकी सारी जद्दो जह्द दुनिया की ज़िन्दगी में ही बर्बाद हो गई और वो ये ख़्याल करते हैं कि हम बड़े अच्छे काम अन्जाम दे रहे हैं। (सू०–कह्फ़–18/104)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ लोगो अल्लाह का वाअ़दा सच्चा है सो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ धोका न दे दे। (सू०–फ़ातिर–35/5)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हर जानदार पर मौत मुक़र्रर फ़रमां दी है और इस मौत से किसी को छुटकारा नहीं मिलेगा और कोई भी शख़्स इस मौत से भाग कर कहीं भी जा नहीं सकता और मौत की तकलीफ़ इन्तिहाई सख़्त तकलीफ़ और अज़िय़त के साथ होगी और उसकी तकलीफ़ दुनिया में बन्दे को पहुँचने वाली तमाम तकलीफ़ों से सख़्त तर होगी।

इरशादे बारी तआ़ला है:-
और मौत की सख़्ती हक़ के साथ आ पहुँची (ऐ इन्सान) ये वही चीज़ है जिससे तू भागता था।
(सू०-क़ाफ़-50/19)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे हल्की व आसान मौत की मिसाल ऐसी है कि कोई काँटे दार टहनी को ऊन में से खींचा जाये तो कुछ न कुछ ऊन भी खिंची चली आती है।
(कंजुल उ़म्माल-8/243-ह०-42174)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मल्कुल मौत को देखना सौ ज़रबों से ज़्यादा सख़्त होता है और बन्दे की जान इस हालत में निकलती है कि उसकी हर रग अ़लैहदा अ़लैहदा तकलीफ़ उठाती है।
(कंजुल उ़म्माल-8/241-ह०-42158)

तो अब हमें इस पर ग़ौर करना चाहिये कि जब आसान तरीन मौत इतनी सख़्त तकलीफ़ देती है तो ग़ैर आसान मौत की तकलीफ़ कितनी ज़्यादा होगी इसलिये हमें चाहिये कि मौत को कसरत से याद करें और दुनिया में रहकर मौत और उसके बाद की तैयारी करे और हक़ीक़ी कामयाबी दुनिया में कसीर माल व मताअ़ जमाअ़ करना नहीं है बल्कि हक़ीक़ी कामयाबी ये है कि अपने माल के हुक़ूक़ अदा करें और ताअ़त व इ़बादत में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करें और इसी को अपनी ज़िन्दगी का अहम मक़सद जानें ताकि दोज़ख़ से निजात मिले और जन्नत में दाख़िला नसीब हो।

जो लोग दुनिया की कामयाबी के लिये सब कुछ करें और आख़िरत की कामयाबी के लिये कुछ न करें तो वो यक़ीनन बहुत ज़्यादा नुक़सान और तकलीफ़ उठाने वालों में से हैं और दुनिया के मालो मताअ़ और उसकी लज़्ज़तें सिर्फ़ धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं क्योंकि इनका ज़ाहिर तो बहुत खूबसूरत नज़र आता है लेकिन इनका बातिन हक़ीर व ज़लील है दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत व ऐशो इशरत अगरचा कितनी ही ज़्यादा हो ये धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं है तो मुसलमानों को चाहिये कि दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत के धोके में हरगिज़ न आयें और ज़लील व हक़ीर दुनिया को हासिल करने के लिये अपनी हसीन व खूबसूरत और खुशगवार आख़िरत को तबाह व बर्बाद न करे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो जिस दिन कोई बाप अपनी औलाद के काम न आयेगा और न कोई बच्चा अपने बाप को कुछ नफ़अ़ दे सकेगा बेशक अल्लाह तआ़ला का वाअ़दा सच्चा है तो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाल दे और न ही फ़रेब देने वाला शैतान तुम्हें अल्लाह तआ़ला के मुताअ़ल्लिक़ धोके में डाल दे। (सू०-लुक़मान-31/33)

इमाम मुहम्मद गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो इस फुरसत के वक़्त में नेक आअ़माल कर लो और रब तआ़ला से डरते रहो और अपनी मौत को न भूलो और दुनिया की तरफ़ माइल न हो जाओ बेशक दुनिया धोके बाज़ है और ये दुनिया अपने धोके के साथ बन ठन कर तुम्हारे सामने आती है और अपनी ख़्वाहिशात के ज़रिये तुम्हें फ़ित्ने में डाल देती है और दुनिया की पैर‘वी करने वालों के लिये इस तरह सजती व संवरती है जैसे दुल्हन सजती व संवरती है इस दुनिया ने अपने बेशुमार आशिक़ों को हलाक कर दिया है और जिन्होंने इस दुनिया से इत्मिनान हासिल करना चाहा उन्हें ज़लील व रुसवा कर दिया है लिहाज़ा इसके बातिन पर ग़ौर करते हुये इसे हक़ीक़त की निगाह से देखो क्योंकि दुनिया तकलीफ़ों व मुसीबतों से घिरी हुई है और इसको बनाने बाले रब्बुल आ़लमीन ने खुद इसकी मज़म्मत फ़रमाई और इसका नया पुराना हो जाता

है और इसे चाहने वाला इसे छोड़कर चला जाता है इसलिये ग़फ़लत से बेदार हो जोओ और उससे पहले नीद से आँखें खोलो जब यूँ ऐअ़लान होगा कि फुलां शख़्स बहुत बीमार है और अब उसका आख़िरी वक़्त आ गया है फिर कहा जायेगा कि अब उसकी ज़बान भारी हो गयी है और वो बात भी नहीं करता और किसी को पहचान भी नहीं पा रहा है और फिर उसकी पेशानी पर पसीना आना शुरु हो जायेगा और उसकी रुह क़ब्ज़ होने का वक़्त क़रीब आ जायेगा फिर उसे मौत का यक़ीन हो जायेगा और उसकी पलकें झुकने लगेंगीं और ज़बान थरथरा रही होगी और वो बोलने की कोशिश करेगा मगर बोलने की कुव्वत न होगी और बिल आख़िर उसकी रुह उसके जिस्म से निकाल ली जायेगी और वो मुर्दार हो जायेगा और फिर घर में रोने चिल्लाने की आवाज़ बुलन्द होने लगेंगीं और फिर ऐअ़लान होगा कि फुलां शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया

फिर उसके घर वाले व उसके रिश्तेदार उसके लिये कफ़न वग़ैराह का इंतिज़ाम करेंगे और फिर लोग उसे गुस्ल करायेंगे और फिर वो कफ़न में लपेट दिया जायेगा और उसके घर वाले उसके माल की तरफ़ मुतवज्जै हो जायेंगे और वो अपने अच्छे व बुरे आअ़मालो के साथ ज़मीन के नीचे क़ब्र में अकेला छोड़ दिया जायेगा और क़ब्र पर मिट्टी डालकर क़ब्र को बन्द कर दिया जायेगा और वो अंधेरी क़ब्र में क़यामत तक तन्हा रहेगा

अल्लाह तबारक व तआ़ला हमारे हाल पर रहम फ़रमाये और हमें दुनिया की अस्ल हक़ीक़त को पहचानने और इसके धोके व फ़रेब से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

दुनिया अपनी ज़ाहिरी खूबसूरती से इन्सान को धोके में मुब्तिला कर देती है और फिर ये दुनिया इसमें रहने वालों से जुदा हो जाती है और इसमें रहने वाले आख़िरत की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाते है जहाँ इन्सान को उसके अच्छे बुरे आअ़माल का बदला दिया जाता है पस जिसे आग से बचाकर जन्नत में भेज दिया गया तो वो कामयाब हो गया और निहायत सख़्त अ़ज़ाब से निजात हासिल कर दायमी नेअ़मतों से लबरेज़ जन्नतों में पहुँच कर उसने बहुत बड़ी कामयााबी हासिल कर ली।

दुनिया की हर नेअ़मत व लज़्जत जिसे बरत कर छोड़ना है और शैतान इस ज़लील व हक़ीर दुनिया को इसकी ज़ाहिरी ज़ीनत व खूबसूरती के ज़रिये से इसके धोके में डालता है और लोग इसके धोके में आ जाते हैं और जब मौत आती है तो इसकी सारी हक़ीक़त खुल जाती और इसका हर आशिक़ खाली हाथ यहाँ से जाता है तब उसकी समझ में आता है कि वाक़ई दुनिया धोके के माल के सिवा कुछ भी नहीं है इस दुनिया की ज़िन्दगी ने अपनी ज़ीनत व आराइश और फ़ानी नेअ़मतों व लज़्ज़तों के ज़रिये धोका दिया और आख़िरत के बारे में ग़ाफ़िल रखा और कितने ही लोगों को इस फ़ानी

दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में रखा कि वो दुनिया की लज़्ज़तो व रग़बतों में मशगूल होकर अपनी आख़िरत को भूल गये।

दुनिया से शदीद मुहब्बत व रग़बत रखने वाले और दुनिया को हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझने वाले लोग ये समझते हैं कि वो जो कुछ कर रहे है वो सब काम मुफ़ीद और अच्छे हैं और हमें इन कामों से रोकने और मनाअ़ करने वाले और समझाने वाले लोग बेवकूफ़ हैं और हम सबसे ज़्यादा अ़क्ल मंद हैं मगर मुअ़ामला इसके बरअ़क्स है दर हक़ीक़त वही लोग बेवकूफ़ हैं जो दुनिया को अपनी अस्ल हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझते हैं जबकि इन्होंने कितने लोगों को क़ब्रिस्तान तक पहुँचाया है व टूटी फूटी क़ब्रों में मुर्दों की हड्डियों को देखा है फिर भी वो लोग अपनी बेवकूफ़ी को अ़क्ल मंदी और जहालत को इल्म और नुक़सान को फ़ायदा और अपनी तबाही व बर्बादी को अपनी अ़ाफ़ियत समझते हैं व अपने आख़िरत के अन्जाम व अल्लाह तअ़ाला के सामने हाज़िरी और हश्रो नश्र और क़यामत, क़ब्र और अ़ज़ाब व सबाब और जन्नत व दोज़ख़ और हिसाबो किताब से बेफ़िक्र व बे पर'वाह हैं।

रोज़े क़यामत कुफ़्फ़ार के नेक आअ़माल तौले ही न जायेंगे और मुनाफ़िक़ीन के आअ़माल उनके मुँह पर मार दिये जायेंगे फ़ासिक़ीन के आअ़माल बहुत हल्के होंगे ज़ालिमीन के आअ़माल मज़लूमीन में तक़सीम किये जायेंगे व रियाकारों के आअ़माल

का कोई अज्र न दिया जायेगा और बातिलीन के आअ़माल को ज़िल्लत व रुसवाई मिलेगी और मग़रुरों के आअ़मालों को ठोकरों में फेंक दिया जायेगा और जिन लोगों ने ताअ़ात व इ़बादात में मशक़्क़त उठाई और दुनिया को हक़ीर व ज़लील जाना और आख़िरत को दुनिया पर तरजीह दी और नेक आअ़माल किये उनके लिये जन्नत और जन्नत की बेशुमार दायमी नेअ़मतें होगी जिसमें वो राहत और ऐशो इशरत के साथ हमेशा हमेशा खुशियों व मसर्रतों में होंगे और दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत और लज़्ज़ात व शहबात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात इन्सान को उन मक़ासिद से गाफ़िल कर देती है जिनके लिये उसे तख़लीक़ किया गया है।

नफ़्स की मुख़ालिफ़त से बढ़कर कोई इ़बादत अफ़ज़ल नहीं है इसी तरह दुनियावी मालो मताअ़ की क़िल्लत पर कानेअ़ रहना यानी जो मिल जाये उस पर क़नाअ़त करना अफ़ज़ल इ़बादत है और असबाबे दुनिया की लज़्ज़त से दूर रहना अफ़ज़ल इ़बादत है क्योंकि सबसे बड़ा शर हुब्बे दुनिया है क्योंकि दुनिया शैतान की खेती है और अगर तू माल जमाअ़ कर रहा है तो तू उससे खुश न हो क्योंकि जब तेरी जान भी तेरी नहीं तो तेरा माल तेरा कैसे हो सकता है और अ़ाक़िल के नज़दीक दुनिया कुछ भी नहीं क्योंकि हर रोज़ इसका नया मालिक होता है।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि

थोड़ी सी दुनिया बहुत ज़्यादा आख़िरत को बर्बाद कर देती है और दुनिया की आराइश दायम नहीं रहती और न ही इसकी ख़ुशी हमेशा क़ायम रहती है और बेशक दुनिया अपने मक्रो फ़रेब के साथ आरास्ता है जो अपनी ज़ैबो ज़ीनत के साथ लोगों को धोके में डालती है और बुहत शानो शौकत वालों को दुनिया ने हक़ीर बना दिया और बहुत से इज़्ज़त वालों को दुनिया ने तबाह और ज़लील कर दिया कोशिश करो कि तुम दुनिया में तो रहो लेकिन दुनिया तुम में न रहे क्योंकि कश्ती जब तक पानी में रहती है खूब तैरती है मगर जब पानी कश्ती में आ जाता है तो वो डूब जाती है।

फिर उस शख़्स की हालत पर तअ़ाज्जुब है जो दुनिया को आबाद और आख़िरत को बर्बाद करता है क्योंकि दुनिया की लम्बी उम्मीदें रखने वाला शख़्स दीन से बे पर'वाह हो जाता है और दुनिया पर खुश होना बद बख़्ती की अ़लामत है और दुनिया की हर दौलत दर हक़ीक़त तंग दस्ती और मुफ़लिसी है और जो शख़्स दुनिया व मताये दुनिया की रग़बत छोड़ देता है तो वो अपने दीन को महफूज़ कर लेता है और अपने रब को राज़ी कर लेता है दुनिया की खूबसूरती सबसे बड़ा झूठ है और इसकी ज़ीनत सबसे बड़ा फ़रेब है और जो चीजें ज़ाइल और फ़ना होने वाली हैं उनकी रग़बत छोड़ दो क्योंकि ये चीज़ें ऐसी हैं कि तू न उनके लिये बाक़ी रहेगा और न ही वो तेरे लिये बाक़ी रहेंगी।

दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और दुनियावी ज़िन्दगी (की ऐश व इशरत) खेल व तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं है और यक़ीनन आख़िरत का घर ही उन लोगों के लिये बेहतर है जो तक़्वा इख़्तियार करते हैं (तो) क्या तुम (इस हक़ीक़त) को समझते नहीं। (सू०–अनअ़ाम–6/32)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
दुनिया की ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा है। (सू०–मुहम्मद–47/36)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और ऐ लोगो ये दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं है और हक़ीक़त में आख़िरत का घर ही बेहतर ज़िन्दगी है काश वो लोग ये राज़ जानते। (सू०–अ़नकबूत–29/64)

दुनिया की मुहब्बत व नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर‘वी में गुज़रने वाली ज़िन्दगी गफ़लत की ज़िन्दगी है और ताअ़ात व इ़बादात व दुनिया से बेरग़बती में गुज़रने वाली ज़िन्दगी अ़ाक़िल की ज़िन्दगी है और अ़क़्लमन्द शख़्स दुनिया में तो रहता है मगर दुनिया में रहकर आख़िरत के लिये तोशा जमाअ़ करता और ग़ाफ़िल सिर्फ़ दुनिया के लिये जमाअ़–

करता है और फिर सब कुछ छोड़कर खाली हाथ आख़िरत की तरफ़ कूच करता है ये दुनिया और आख़िरत की हक़ीकत है कि दुनिया पसंद शख़्स दुनिया में इस तरह मगन रहता है जैसे बच्चे खेल कूद में मगन रहते हैं और अ़क़्ल मंद हर वक़्त अपनी आख़िरत बेहतर बनाने में लगा रहता है और उसके ज़हन में आख़िरत की दायमी नेअ़मतों व जन्नत का तसव्वुर रहता है और वो आख़िरत में मिलने वाले सख़्त अ़ज़ाब से भी ख़ौफ़ ज़दा रहता है और ये ख़ौफ़ उसे गुनाहों से इजतिनाब करने में उसकी मदद करता है और ऐसा शख़्स आख़िरत के अ़ज़ाब व मसाइबो आलाम से अमनो अमान में रहता है और जन्नत व उसकी नेअ़मतों का मुस्तहिक़ हो जाता है उस जन्नत में हर वो चीज़ मौजूद होगी जिसकी वो ख़्वाहिश करेगा और क़ल्ब व रुह की हर नेअ़मत व मसर्रत व फ़रहत की कसरत से वो बहरायाब होगा और ये उनके लिये है जो अहकामे इलाही की ताअ़मील और इबादात व नेक आअ़माल में मशक़्क़ते उठाते हैं।

ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर‘वी और ग़फ़लत की ज़िन्दगी महज़ खेलकूद की तरह होती है जिसका ज़ाहिर बड़ा ही हसीन व खूबसूरत है मगर इसकी हक़ीक़त तबाही व बर्बादी और रुसवाई है और जन्नत दायमी ऐशो आराम की जगह है वहाँ किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ नहीं और उसे फ़ना नहीं फिर लोग क्यों इतनी बात नहीं समझते और उस दायमी ऐशो इशरत को हासिल करने की कोशिश

क्यों नही करते जब नेक मोमिन अपनी क़ब्र से उठेगा तो उसके सामने एक खूबसूरत खुश्बूदार चीज़ हाज़िर होगी और वो मोमिन से कहेगी कि क्या तू मुझे पहचानता है मोमिन कहेगा नहीं फिर वो कहेगी कि मैं तेरे नेक आअ़माल हूँ दुनिया में तो मैं तुझ पर सवार रहता था आज तू मुझ पर सवार होगा और आज तेरी मेहमानी का दिन है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

उस दिन (यानी रोज़े क़यामत) हम परहेज़ गारों को अपने हुज़ूर मेहमानों की तरह सवारियों पर लायेंगे। (सू०-मरयम-19/85)

दुनिया की ज़िन्दगी मुत्लक़न मज़मूम नहीं है और इसका मज़मूम होना जब है कि जब इन्सान इस दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और लज़्ज़ात व शहवात और माल की हिर्सो हवस में इस क़दर मुस्तग़रक़ हो जाये कि वो अपनी आख़िरत और यादे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाये और उसके काम और उसकी कोशिश दुनिया व मताअ़े दुनिया के हुसूल के लिये हो और अगर माल को नाजाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करने के लिये हासिल किया जाये और फ़िज़ूल ख़र्च किया जाये तो ये लायक़े मलामत और मज़मूम है और दुनिया के हुसूल को ही मक़सदे हयात समझ कर हासिल किया जाये तो दुनिया क़ाबिले मज़म्मत और हक़ीर व ज़लील और सबसे बुरी शैः है और अगर इन्सान अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये अहकामाते-

इलाही की ताअ़मील और इ़बादत पर अ़मल पैरा रहते हुये दुनिया को आख़िरत को तोशा बनाये तो उसकी दुनिया की ज़िन्दगी बेहतर व कामयाब व आख़िरत में सअ़ादतों का सबब और वसीला है अगर इन्सान अपने लिये और अपने मां बाप व अपने अह्ल व अ़याल के लिये रिज़्क़े हलाल की कोशिश करे और इन्सानियत व दीनी ख़िदमात के लिये माल हासिल करे और माल को कारे ख़ैर में ख़र्च करे और उसके पूरे हुक़ूक़ अदा करे तो वो माल उसके लिये अज्रो सवाब और आख़िरत का सरमाया है।

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपनी दुनिया से मुहब्बत करता है वो अपनी आख़िरत को नुक़सान पहुँचाता और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मुहब्बत करता है वो शख़्स अपनी दुनिया को नुक़सान पहुँचाता है लिहाज़ा तुम फ़ना होने वाली चीज़ पर बाक़ी रहने वाली चीज़ को तरजीह दो हो यानी दुनिया पर आख़िरत को तरजीह दो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/259-ह०–10336)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला से हया करो जिस तरह हया करने का–

हक़ है तो हमने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह अल्लाह का शुक्र है कि हम हया करते हैं तो फिर आपने फ़रमाया उससे हया करने का जो हक़ है वो ये कि तुम सर व उसके निचले हिस्से की हिफ़ाज़त करो यानी आँख, कान व ज़बान और दिल की हिफ़ाज़त करो और पेट की और उसके निचले हिस्से की हिफ़ाज़त करो यानी कम व हलाल गिज़ा खाना और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना और अपनी मौत व अपनी हड्डियों के गल सड़ जाने को याद रखो और फिर जो शख़्स आख़िरत का इरादा करता है तो वो शख़्स दुनिया की ज़ीनत को तर्क करता है और जिसने ऐसा किया उसने अपने रब से इस तरह हया की जिस तरह हया करने का हक़ है (तिर्मिज़ी–सुनन–2/272-ह०–2458)

➡ हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का मक़सूद दुनिया हो तो अल्लाह तआ़ला उसके काम में परेशानी हाइल कर देगा और उसकी मुफ़लिसी दोंनों आँखों के दरमियान कर देगा और दुनिया उसको उतनी ही मिलेगी जितनी उसकी तक़दीर में लिखी होगी और जिसकी नियत आख़िरत की तरफ़ हो तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम दुरस्त कर देगा और उसके दिल में बे पर'वाही डाल देगा और दुनिया उसके पास ज़लील होकर आयेगी। (इब्ने माजा–सुनन–3/348-ह०–4105)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/259-ह०–10338)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सब फ़िक्रों को छोड़कर सिर्फ़ एक फ़िक्र रखे यानी आख़िरत की फ़िक्र तो रब तआ़ला उसकी दुनिया की तमाम फ़िक्रें अपने ज़िम्मे ले लेगा और जो शख़्स तरह तरह की दुनिया की फ़िक्रों में लगा रहेगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी पर'वाह न करेगा वो जिस वादी में चाहे हलाक हो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/348-ह०–4106)

दुनिया की हर वो चीज़ जो इन्सान को अपने अस्ल मक़सद से ग़ाफ़िल कर दे वो लह्व व लाअ़ब है पस बन्दा अपने मालो मताअ़, बीवी, औलाद व हुसूले लज़्ज़ात में मगन होकर ग़ाफ़िल और बे फ़ायदा अ़मल में खेलता रहता है और वो ग़फ़लत व गुनाहों में घिरा रहता है यहां तक कि दुनिया की ज़िन्दगी को मुकम्मल कर लेता है और फिर उसे मौत आ जाती है और ये तमाम चीज़ें बन्दे से मुहँ मोड़कर जुदा हो जाती हैं और बन्दे को उससे कोई फ़ायदा हासिल नहीं होता अल्लाह तबारक व तआ़ला ने दुनिया को ज़ैबो ज़ीनत व आराइश और उन लज़्ज़ात व शहवात से लबरेज़ कर दिया है जो दिलों को खींच लेती हैं व आँखों को खूबसूरत नज़र आती है व नफ़्सों को फ़रहत अ़ता करती हैं फिर दुनिया की ज़ैब व आराइश जल्द ज़ाइल होकर ख़त्म हो जायेगी और दुनिया से मुहब्बत करने वाले को नदामत और ख़सारे के

सिवा कुछ हासिल नहीं होगा दुनिया की ज़िन्दगी को खेल व तमाशे के साथ तशबिया देने की दो वजह हैं एक वजह ये है कि हर खेल व तमाशा बहुत जल्द ख़त्म हो जाता है यानी हर खेल व तमाशे की मुद्दत बहुत कम होती है इसी तरह दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत व आराइश और उसकी बातिल ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात की मुद्दत भी बहुत कम होती है और दूसरी वजह ये कि खेल तमाशे में मशगूल होना कम अ़क्लों, नादानों व ग़ाफ़िलों का काम है इसी तरह दुनिया की मुहब्बत, रग़बत और उसकी ज़ैबो ज़ीनत में वही लोग मुलव्विस होते है जो कम अ़क्ल व ग़ाफ़िल हैं और अ़क्ल वाले दुनिया की रंगीनियों और उसकी लज़्ज़ात से दूर रहते हैं और वो अपनी आख़िरत की तैयारी में मशगूल रहते हैं

यही वो लोग हैं जो आख़िरत के कसीर अज्रो सवाब व जन्नत के मुस्तहिक़ होंगे उस जन्नत के दरख़्त व उसके फल और उसके बाला ख़ाने और उसके बाग़ात और दूध व शहद की नहरें और हुस्नो जमाल की पैकर खूबसूरत हूरें और इनमें से किसी भी चीज़ को फ़ना नहीं है वहाँ न किसी को मौत आयेगी न कभी उसकी जवानी ख़त्म होगी न उसकी खूबसूरती कभी ज़ाइल होगी और न किसी क़िस्म का रंजो ग़म, न कोई ख़ौफ़ होगा, न कोई बीमार होगा, न किसी नेअ़मत के ज़वाल का ख़दशा होगा सो जन्नत बेहतर हयाते हक़ीक़ी है जो कि नेक आअ़माल के सबब अ़ता होगी।

दुनिया की मिसाल बारिश के पानी जैसी जिससे ज़मीन हरी भरी हो जाती

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जान लो दुनिया की ज़िन्दगी महज़ खेल व तमाशा है और ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत और आपस में फ़ख़्र (व गुरुर) और माल व औलाद में एक दूसरे से आगे बढ़ जाने की तलब है इसकी मिसाल बारिश की सी है कि जिसकी पैदावार किसानो को भली लगती है फिर वो खुश्क हो जाती है फिर तुम उसे पक कर ज़र्द होते देखते हो फिर वो रेज़ा रेज़ा हो जाती है। (सू०-हदीद-57/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

ये दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो उस पानी के जैसी है कि जिसे हमने आसमान से उतारा फिर उसकी वजह से ज़मीन की पैदावार खूब घनी होकर उगी जिसमें से इन्सान भी खाते हैं और चौपाये भी यहाँ तक कि जब ज़मीन ने खूबसूरती पकड़ ली और वो खूब आरास्ता हो गई और उस ज़मीन के मालिक समझे कि अब वो उस फ़स्ल पर पूरी कुदरत रखते है तो यकायक रात या दिन को हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुँचा तो हमने उसे यूँ जड़ से कटा हुआ बना दिया कि गोया वो कल यहाँ थी ही नहीं इस तरह हम उन लोगों के लिये निशानियाँ खोल कर बयान करते हैं जो लोग ग़ौर करते हैं। (सू०-यूनुस-10/24)

दुनिया की अस्ल हक़ीक़त ये है कि वो अ़नक़रीब ज़ाइल होने वाली और जल्द ख़त्म होने वाली है और दुनिया बहुत कम नफ़अ़ देने वाली है और दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेलकूद है जो बच्चों का काम है और वो लोग जो खुद को निहायत अ़क्लमंद और होशियार समझते है मगर वो दर-हक़ीक़त कम अ़क्ल और बच्चों की मानिन्द हैं जो दुनिया में ज़्यादा माल की हिर्सो हवस और उसकी तलब के साथ खेल रहे हैं और अपने निहायत क़ीमती वक़्त को दुनिया की लज़्ज़ात व शहवात और मालो मताअ़ को हासिल करने मे ज़ाए कर रहे हैं और उस चीज़ में मेहनत व मशक़्क़त उठा रहे है जिसे छोड़कर इस दुनिया से जाना पड़ेगा और आखिरत में उसका हिसाबो किताब उन्हें देना पड़ेगा फिर क़ब्र व क़यामत में अ़ज़ाब की सख़्ती और तकलीफ़ों व मुसीबतों से दो चार होना पड़ेगा

इस दुनिया का ये हाल है इसलिये अल्लाह व रसूल ने इसकी मज़म्मत फ़रमाई है और अल्लाह तआ़ला के मख़सूस बन्दे हमेशा इससे दूर रहे हैं और इस दुनिया से उन्होंने सिर्फ़ अपनी हाजत के मुताबिक़ लिया और बाक़ी सब छोड़ दिया उस पर मज़ीद ये कि उन्होंने थोड़े से माल के भी हुक़ूक़ अदा किये और ऐसी दुनिया की तलब व ख़्वाहिश जो इन्सान को ग़ाफ़िल कर दे व उसकी आख़िरत तबाह व बर्बाद कर दे और जो सख़्त अ़ज़ाब का बाइस बने तो ऐसी दुनिया और उसकी लज़्ज़ात और उसके माल व मताअ़ से दिल लगाना सिर्फ़-

कम अक़्ल लोगों का काम है जो अपनी हलाकत अपने ही हाथों से कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला ने दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल बयान फ़रमाई कि दुनिया की ज़िन्दगी ऐसी है जैसे बारिश के पानी से उगने वाले अनाज और सब्ज़ियाँ किसानों को अच्छी लगती हैं फिर वो खुश्क हो जाती हैं फिर पक कर ज़र्द हो जाती हैं फिर वो रेज़ा रेज़ा हो जाती हैं यही हाल दुनिया की ज़िन्दगी का है कि दुनिया का तलबगार इसे पाकर बहुत खुश होता है और बहुत सी उम्मीदें रखता है मगर जब मौत का फ़रिश्ता आता और उसकी रुह क़ब्ज़ करता तो उसकी सारी उम्मीदें रेज़ा रेज़ा हो जाती हैं और जो शख़्स दुनिया में रहकर आख़िरत का तलबगार हो व दुनियावी मालो मताअ़ से अपनी आख़िरत को बेहतर बनाये तो ये दुनिया उसकी आख़िरत की कामयाबी का ज़रिया है।

दुनिया से मुहब्बत व रग़बत रखने वाले और उसमें मुतमइन रहने वाले लोग दुनिया के तमाम मुआ़मलात में लागों से सबक़त लेना चाहतें हैं ताकि वो उन पर फ़ख़्र करें और उनकी शौहरत हो और उनके दिलों की ये ख़्वाहिश होती है कि मालो मताअ़ में उन्हें सब पर सबक़त हासिल हो पस हलाकत है उस शख़्स के लिये जिसकी आ़रजू की इन्तिहां दुनिया हो और उसके आअ़माल और उसकी कोशिश सिर्फ इस फ़ानी दुनिया के लिये हो तो ऐसी दुनिया क़ाबिले मज़म्मत है सिवाय उन चीज़ों के जो अल्लाह तआ़ला के लिये हैं और वो

चीज़ें क़ाबिले मज़म्मत नहीं जिसे इन्सान अपनी आख़िरत के लिये जमाअ़ करे यानी वो दुनिया को अपनी आख़िरत बेहतर बनाने और निजात का ज़रिया बनाने के लिये जमाअ़ करे और दुनिया सिर्फ इस एतबार से बुरी व मज़मूम है कि इसकी मुहब्बत व रग़बत और लज़्ज़त व तलब में इन्सान इस तरह मुश्तग़रक़ हो जाये कि अल्लाह तआ़ला की इताअ़त की बजाये अपने नफ़्स और शैतान की इताअ़त करे और अपनी आख़िरत और यादे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाये और जो चीज़ दुनिया की तरफ़ राग़िब करे व आख़िरत से ग़ाफ़िल करे तो वो शैः क़ाबिले मज़म्मत और बाइसे हलाकत है

सू०-युनूस की आयत न०-24 में अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की मिसाल बयान फ़रमाई कि बारिश के सबब से ज़मीन की पैदावार बहुत घनी, खूबसूरत और हरी भरी हो जाती है जमीन से रंग बिरंगे फूल, खूबसूरत बेलें, ख़ुश ज़ायक़ा फल और इनके अ़लावा तरह तरह के अनाज व सब्ज़ियां बग़ैराह पैदा होती हैं हत्ता कि जब बाग़ात और खेतों का मालिक फलों से लदे हुये दरख़्तों और हरी भरी लहलहाती फ़स्लों को देखता है तो बहुत खुश होता है फिर वो उस पैदावार से बड़े बड़े मन्सूबे और बहुत उम्मीदें रखता है और उनका दिल मन्सूबों और उम्मीदों में मशगूल रहता है इस हालत में अल्लाह तआ़ला दिन या रात में उन बाग़ों और खेतियों पर आंधी तूफ़ान या कोई बड़ी आफ़त नाज़िल फ़रमां देता है जिससे बाग़ात और खेतियां

ऐसे तबाह व बर्बाद हो जाती जैसे कभी वो थी ही नहीं और उनका मालिक शदीद ग़म में मुब्तिला होकर बस हाथ मलता रह जाता है इसी तरह से इन्सान दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और मालो मताअ़ की हिर्स व हवस में अपनी आख़िरत व यादे इलाही से ग़ाफ़िल रहता और ज़्यादा माल की तलब में वो कसीर मेहनत व मशक़्क़त उठाता है और कसीर मालो मताअ़ जमाअ़ कर लेता और उम्मीदों के सब्ज़ बाग़ में बेफ़िक्र और बेपर'वाह घूमता फिरता है कि अचानक मौत आ पहुँचती और वो दुनियावी तमाम नेअ़मतों व लज्जतों से जुदा हो जाता है और सिर्फ़ हसरत व नदामत और अपने गुनाहों के साथ क़ब्र में पहुँच जाता।

ये मिसालें दुनिया की अस्ल हालत से मुताबिक़त रखती हैं क्योंकि दुनिया की लज़्ज़ात व शहवात और मालो मताअ़ दुनिया के हरीस बन्दे के लिये बहुत पुर कशिश होती है हालांकि इसकी ज़ैब व ज़ीनत व आराइश बहुत थोड़े वक़्त के लिये होती है क्योंकि हर जान को मौत का मज़ा चखना है और दुनिया को छोड़कर खाली हाथ जाना है और इन्न्सान के पास जो कुछ भी मालो मताअ़ है वो उसका अ़ारज़ी मालिक है दर हक़ीकत कयानत की हर शैः का मालिक अल्लाह तअ़ाला है इन्सान तो फ़क़त मालो असबाब का इस्तेअ़माल करता और दूसरों के लिये छोड़ता है और जो शख़्स खुद को दुनियावी चीज़ों का हक़ीक़ी मालिक समझता है तो वो अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ व नादान है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और आप उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल बयान फ़रमां दें जो उस पानी जैसी है जिसे हमने आसमान से उतारा जिसके सबब से ज़मीन का सब्ज़ा खूब घना हो गया फिर वो सूखी घास का चूरा बन गया जिसे हवायें उड़ा ले जाती हैं और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरत वाला है।
(सू०-कह्फ़-18/45)

इस आयत में भी दुनिया की मिसाल बयान फ़रमाई गई है कि ऐ हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) आप लोगों के सामने दुनिया की हक़ीक़त को बयान फ़रमादें ताकि वो इस दुनियावी ज़िन्दगी का अच्छी तरह से तसव्वुर कर लें और इसके ज़ाहिर व बातिन की माअ़रिफ़त हासिल कर लें और वो दुनियावी फ़ानी ज़िन्दगी और आख़िरत की दायमी ज़िन्दगी के दरमियान तक़ाबुल कर लें फिर जो तरजीह दिये जाने की मुस्तहिक़ हो उसे तरजीह दें दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे ज़मीन की हरियाली, शादाबी जो रब तआ़ला के नाज़िल किये हुये पानी के सबब होती है और ज़मीन पर हर क़िस्म के खुश मंजर नबातात उग आते हैं तो उस वक़्त ज़मीन हरी भरी सर सब्ज़ हो जाती है और बाग़ात फलों व फूलों से लबरेज़ हो जाते हैं और फिर उसकी खूबसूरती व सजावट देखने वालों को खुशकुन नज़र आती है और लोग उससे फ़रहत हासिल करते हैं और ज़मीन का ये हुस्न ग़ाफ़िल लोगों को अपनी तरफ़ मुतव्वजे कर

लेता है लेकिन कुछ ही अ़रसे के बाद वो फ़ना और सूखी घास में तब्दील हो जाती हैं जिसे हवायें इधर उधर उड़ाये फिरती हैं और फिर उसकी कोई क़द्र व क़ीमत नहीं रहती इसी तरह दुनिया की मिसाल है कि दुनिया की मुहब्बत व रग़बत में मुब्तिला शख़्स को दुनिया बहुत ही अच्छी और खुश मंजर नज़र आती है और इस फ़ानी दुनिया में मगन शख़्स दुनिया की लज़्ज़ात व शहवात से खूब फ़ायदा व फ़रहत हासिल करता कि अचानक उसे मौत आ जाती और उसकी लज़्ज़तें उससे छीन ली जातीं और उसका मालो मताअ़ उसका साथ छोड़ देते हैं और वो नेक या बुरे आअ़माल के साथ अकेला बाक़ी रह जाता है

फ़ानी दुनिया की हर चीज़ अपने वक़्त मुक़र्ररा तक ही क़ायम रहती है और जैसे ही उसका वक़्त पूरा हो जाता है वो ज़ाइल व फ़ना हो जाती है और दुनिया के मालो मताअ़ और औलाद जिस पर फ़ख़्र किया जाता है वो भी कुछ वक़्त के लिये होता है यहाँ तक कि हर चीज़ अपने अपने वक़्त पर ख़त्म और फ़ना हो जाती है दुनिया में हर चीज़ का तग़य्युर व तबद्दुल होना ये दुनिया का निज़ाम है और इस आयत में दुनिया को पानी के साथ तशबिया देने की चन्द वजह है जैसे पानी एक कैफ़ियत व एक हालत पर कभी बरक़रार नहीं रहता इसी तरह दुनिया भी एक कैफ़ियत व एक हालत पर बरक़रार नहीं रहती दूसरी वजह कोई भी शख़्स इस पर क़ादिर नहीं कि वो पानी-

में दाख़िल हो और भीगने से बच जाये इसी तरह कोई भी शख़्स इस पर क़ादिर नहीं कि वो दुनिया में दाख़िल हो और दुनिया के फ़ित्नों व उसकी आफ़तों से महफ़ूज़ रह सके तीसरी वजह जब पानी को बक़दरे ज़रुरत बाग़ात व खेतों में डाला जाये तो वो उनके लिये नफ़ा बख़्श होता है और अगर ज़रुरत से ज़्यादा पानी डाला जाये तो वो उनको तबाह व बर्बाद कर देता है इसी तरह से दुनिया के मालो मताअ़ को बक़दरे ज़रुरत लिया जाये तो इन्सान के लिये दुनिया मुफ़ीद व नफ़ा बख़्श होती है और अगर दुनिया को ज़रुरत से ज़्यादा लिया जाये तो वो उसके लिये फ़ित्ना और आफ़त बन जाती है।

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि दुनिया को ख़रीदना बेवकूफ़ लोगों की तिजारत है क्योंकि वो दुनिया में मसरुफ़ होकर अपनी आख़िरत को बर्बाद कर लेते हैं और मौत फ़ानी घर से हमेशा रहने वाले घर की तरफ़ सफ़र करने का नाम है और इन्सान उस उ़म्र पर किस तरह खुश होता है जो घण्टो के गुज़रने से घटती है और जिस शख़्स ने अपने माल से आख़िरत को बेहतर न बनाया तो गोया उसने कोई माल कमाया ही नहीं और जो शख़्स ख्वाहिशे नफ़्स की इताअ़त इख़्तियार करता है वो दुनिया के ऐ़वज़ अपनी आख़िरत को बेच डालता है और जो शख़्स दुनियावी माल व मताअ़ से मुहब्बत करता हो वो अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का दाअ़वा कैसे कर सकता है।

आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया एक हक़ीर चीज़ के सिवा कुछ भी नहीं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो दुनियावी ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक हक़ीर चीज़ के सिवा कुछ भी नहीं है।
(सू०–राअ़द–13/26)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और यक़ीनन आख़िरत (दुनिया के मुक़ाबले में) दरजात के लिहाज़ से भी बहुत बड़ी है फ़ज़ीलत के लिहाज़ से भी बहुत बड़ी है।
(सू०–बनी इसराईल–17/21)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या तुम आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी से राज़ी हो गये हो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ो सामान कुछ भी नहीं मगर बहुत ही कम हैसियत रखता है।
(सू०–तौबा–9/38)

दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और कसरते मालो मताअ़ के सबब इन्सान में बुरे असरात व औसाफ़ का ख़तरा ज़्यादा बढ़ जाता है जैसे कुफ़्र मुनाफ़िक़त, झूठ, फ़रेब, धोका, बुख़्ल, अमानत में ख़्यानत, हिर्सो हवस लालच बद अख़लाक़ी वाअ़दा

ख़िलाफ़ी, तकब्बुर, खुदपसंदी, रिया, क़तअ़ रहमी, फ़ित्ना फ़साद, जुल्म व तशद्दुद, हराम हलाल से बेपर'वाही, राहे खुदा में ख़र्च न करना, लोगों को हक़ीर जानना और अपनी मौत और आख़िरत के अ़ज़ाब से बेफ़िक्री और यादे इलाही से ग़फ़लत और नफ़्स की इताअ़त व ख़्वाहिशात की पैर'वी वग़ैराह इसलिये ये दुनिया हक़ीर व ज़लील और मलऊ़न है।

अगर इसके बरअ़क्स औसाफ़ इन्सान में हों तो दुनिया उसके लिये हक़ीर नहीं बल्कि ये दुनिया उसकी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये बेहतरीन ज़रिया व वसीला है जैसे सिद्क़ व ईमान की तौफीक़, हलाल की तरफ़ रग़बत, सख़ावत की अ़ादत, इ़बादत में लज़्ज़त उ़म्दाह अख़लाक़ दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत की तैयारी का शौक़, रहम दिल तबीअ़त, नेक बन्दो की तरफ़ मैलाने क़ल्बी, अल्लाह व रसूल की इताअ़त व अहकामे इलाही की ताअ़मील और रब तअ़ाला का ख़ौफ़ और क़ब्र, क़यामत व दोज़ख़ के अ़ज़ाब से ख़ौफ़ ज़दा दिल व अल्लाह तअ़ाला से रहमत व फ़ज़्ल की उम्मीद और तवक्कुल व अ़ाजिज़ी व इन्किसारी वग़ैराह और अह्ले दुनिया इस दुनिया से दुनिया ही बनाते और संवारते हैं मगर अहले आख़िरत इस दुनिया से सामाने आख़िरत व नेक आअ़माल व अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी कमाते हैं

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे तुम में से कोई अपनी उंगली समुन्दर में डाले फिर देखे कि कितना पानी उसकी उंगली में लगता है तो उसे चाहिये कि ग़ौर करे कि उंगली जो कुछ समुन्दर में से लेकर निकली है पस वही दुनिया है यानी जितना पानी उंगली में लगा रहता है गोया वो दुनिया है और जो समुन्दर में बाक़ी रहता है वो आख़िरत है। (इब्ने माजा–सुनन–3/349-ह०–4108)
(मुस्लिम–सहीह–6/393-ह०–7197)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/289-ह०–10459)

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक सवार एक दरख़्त के नीचे साये के लिये उतरे फिर थोड़ी देर के बाअ़द वहाँ से चला जाये यानी जो कोई किसी दरख़्त तले साया हासिल करता है फिर उसको वहीं छोड़कर चला जाता है। (इब्ने माजा–सुनन–3/349-4109)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2377)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/278-ह०–10415)

दुनिया के मुक़ाबले में उख़र‘वी नेअ़मतें व लज़्ज़तें ला ज़वाल व अब्दी और ला महदूद हैं जो इन्सान के ख़्याल व गुमान से बाहर हैं उख़र‘वी ज़िन्दगी हर ऐब व नक़्स से पाक एक बेहतरीन पाकीज़ा ज़िन्दगी है और दुनिया में इन्सान की उ़म्र

बहुत थोड़ी है और उसकी उ़म्र इतनी नहीं कि उसी को अपनी ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद बना लिया जाये और इसके अ़लावा उसका कोई मक़सद न रहे जबकि दुनिया कसीर मुसीबतों व परेशानी और आफ़ात व ख़तरात से घिरी है और जन्नत कसीर नेअ़मतों व लज़्ज़तों का जामेअ़ है और दुनिया कितनी भी ज़्यादा हो पर थोड़ी है।

हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि ऐ बन्दे दुनिया के मुआ़मले में तेरी कोई हैसियत नहीं तुझसे पहले भी इसके घर वाले थे और तेरे बाद भी इसके घर वाले बनते रहेंगे और इस दुनिया में तेरे फ़ायदे की चीज़ वही है जो तू अपनी आख़िरत के लिये आगे भेज दे और तू मरकर ऐसी ज़ात की तरफ़ जाने वाला है जहाँ तेरा कोई भी उज्र क़ाबिले कुबूल नहीं होगा क्या तुम इस दुनिया में ऐसी औलाद के लिये जमाअ़ करते हो जो तेरे मरने के बाद तुझे भूल जायेगी अगर इन्सान की ताक़त व कुदरत में हो तो वो ज़्यादा कमाने के लिये रात को भी दिन में शमिल कर ले मगर हलाकत है उस शख़्स के लिये जो सख़्त हिसाब व शदीद अ़ज़ाब से बेख़ौफ़ है और इन्सान दुनिया को नया करने में लगा है जबकि अल्लाह तआ़ाला इसको ख़राब और वीरान करने पर तुला हुआ है और बेशक अल्लाह तआ़ाला का इरादा हर शैः पर ग़ालिब है।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि

ऐ बन्दे अगर अल्लाह तअ़ाला और आख़िरत के साथ तेरा यक़ीन ठीक व दुरस्त होता तो आख़िरत की बाक़ी रहने वाली नेअ़मतों के ऐवज़ तू दुनिया की फ़ानी चीज़ों को कभी इख़्तियार न करता और जो शख़्स आख़िरत का यक़ीन रखता है वो कभी दुनिया की हिर्स नहीं करता बल्कि वो दुनिया से मुँह फेर लेता है और जो शख़्स मौत का यक़ीन रखता है तो उसकी उम्मीदें छोटी हो जाती हैं और जिस शख़्स की उम्मीदें छोटी होती हैं उसके आअ़माल दुरस्त हो जाते हैं

इसलिये इन्सान को चाहिये कि अपनी उम्मीदें छोटी रखे क्योंकि उसकी उ़म्र बहुत छोटी और मौत निहायत ही नज़दीक है और कोई भी शख़्स आख़िरत की इ़ज़्ज़त और मरातिब को तीन चीज़ों के बग़ैर हासिल नहीं कर सकता इख़लासे अ़मल व दुनिया की उम्मीदों को छोटा रखना और तक़्वे को लाज़िम पकड़ना और मुझे उस शख़्स पर तअ़ाज्जुब है जो ये जानता है कि उसे दुनिया से एक दिन ज़रुर जाना है फिर भी वो आख़िरत के लिये तोशा तैयार नहीं करता और मुझे उस शख़्स पर तअ़ाज्जुब है जो दुनिया में पेश आने वाली तकलीफ़ो मुसीबत के दिफ़ाअ़ करने पर वो अ़ाजिज़ है फिर वो क़ब्र व क़यामत में पेश आने वाले मसाइबो आलाम और सख़्त तरीन अ़ज़ाब से किस तरह बे फ़िक्र है और वो क़ब्र व क़यामत में पेश आने वाले मसाइबो आलाम व अ़ज़ाब से खुद को कैसे बचायेगा और उसका दिफ़ाअ़ कैसे करेगा

आप फ़रमाते हैं कि हर शख़्स की सवारी दिन व रात है मगर वो ये समझता है कि वो एक जगह ठहरा है जबकि वो हर लम्हा सफ़र तैः कर रहा है और वो ये ख़्याल करता है कि वो अपने घर में मुक़ीम है मगर वो हर लम्हा मुसाफ़िर है और तअ़ाज्जुब है उस शख़्स की हालत पर जो जिस्म के थोड़े से दुख व तकलीफ़ से बचने के लिये वो ज़रर (नुक़सान) पहुँचाने वाली चीज़ों से परहेज़ करता है मगर आख़िरत के शदीद तर अ़ज़ाब से बचने के लिये गुनाहों से परहेज़ नहीं करता।

इसलिये हर इन्सान को चाहिये कि दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करे और अपनी आख़िरत संवारने के लिये हत्तल इमकान कोशिश करे और अपनी ग़फ़लत का मुक़ाबला बेदारी से करे और माल की हिर्स का मुक़ाबला क़नाअ़त से करे।

ईमान की तीन अ़लामतें हैं कसरते तक़वा और शहवतों को दबाकर रखना और नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आना और थोड़े से माल पर कनाअ़त करना ये ईमान का सुतून है और जब तक बन्दा उन चीज़ों को महबूब न रखे जो अल्लाह तअ़ाला को पसंद हैं और उन चीज़ों को बुरा न जाने जो अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक बुरी व ना पंसदीदा हैं तब तक उसका ईमान कामिल नहीं हो सकता।

आख़िरत में उसका कोई हिस्सा न होगा जो सिर्फ़ दुनिया का तालिब है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जो शख़्स सिर्फ़ दुनिया की खुशहाली चाहता है तो हम जिसे जितना चाहते हैं उसे दुनिया में ही उसे दे देते हैं फिर हमने उसके लिये जहन्नम तैयार कर रखी है जिसमें वो मलामत सुनता हुआ रब की रहमत से धुतकारा हुआ दाख़िल होगा और जो शख़्स आख़िरत का ख़्वाहिश मंद हो और वो उस (आख़िरत) के लिये कोशिश भी करे तो ऐसे लोगों की कोशिश कुबूल की जायेगी।
(सू०-बनी इसराईल-17/18,19)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जो लोग (फ़क़त) दुन्यावी ज़िन्दगी व उसकी ज़ीनत (व अराइश) के तालिब हैं हम उनके आअ़माल का पूरा पूरा बदला इसी दुनिया में ही दे देते हैं और उन्हें इस (दुनिया के सिले) में कोई कमी नहीं की जाती (और) ये वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कुछ (हिस्सा) नहीं सिवाये आतिशे दोज़ख़ के और वो सब (आअ़माल अपने उख़रवी अज्र के हिसाब से) अकारत हो गये जो उन्होंने दुनिया में अन्जाम दिये थे और वो (सब कुछ) बातिल और बेकार हो गये जो वो (अ़मल) किया करते थे। (सू०-हूद-11/15,16)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जो शख़्स आख़िरत के खेती चाहता है हम उसकी खेती में मज़ीद इज़ाफ़ा कर देते हैं और जो दुनिया की खेती चाहता है तो हम उसे उसमें से कुछ दे देते है और दुनिया के तालिब का आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा। (सू०-शूरा-42/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो शख़्स दुनिया का इनआ़म चाहता है तो हम उसमें से दे देते है और जो आख़िरत का इनआ़म चाहता है तो हम उसे उसमें से दे देते हैं और हम शुक्र गुज़ारों को अ़नकरीब खूब सिला देंगे। (सू०-आले इमरान-3/145)

हर इन्सान को दुनिया उतनी ही मिलेगी जितनी उसके नसीब में होगी ख़्वाह उसे फ़िक्र से हासिल करे या फ़राग़त से लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपनी दुनिया को बेहतर बनाने के लिये अपनी आख़िरत बर्बाद न करें और दिल में दुनिया के बजाये दीन रखें अगर दिल में दीन के बजाये दुनिया रखी तो उसके लिये हलाकत ही हलाकत है जैसे कश्ती जब पानी में हो तो वो तैरती रहती है लेकिन जब पानी कश्ती में आ जाये तो कश्ती डूब जाती है।

➡ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया लोगों में सबसे बद तरीन शख़्स वो है जो दुनिया की ख़ातिर अपनी आख़िरत बर्बाद कर ले। (इब्ने माजा-सुनन-3/285-ह०-3966)

जो शख़्स सिर्फ़ दुनिया का ख़्वाहिश मंद हो यानी दुनिया का मालो मताअ़ और ऐशो इशरत चाहता हो और उसी के लिये कोशिश करे तो अल्लाह तआ़ला दुनिया में उसे उसका हिस्सा अ़ता कर देता है जो उसके नसीब में लिख दिया गया था मगर वो मालो मताअ़ व ऐशो आराम उसके पास हमेशा रहने वाला नहीं है फिर आख़िरत में उसके लिये दोज़ख़ है जिसमें वो दाख़िल किया जायेगा और उसे निहायत सख़्त अ़ज़ाब दिया जायेगा और जो आख़िरत चाहता है और उसके लिये कोशिश करता है तो मोमिन की कोशिश बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल होगी और उसे जन्नत में दाख़िल किया जायेगा और इसके साथ साथ वो दुनिया के उस हिस्से से भी महरुम नहीं रहेगा जो उसके नसीब में होगा।

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और ये कि इन्सान को वही कुछ मिलेगा जिसके लिये उसने कोशिश की होगी और ये कि उसकी हर कोशिश उसे दिखा दी जायेगी यानी ज़ाहिर कर दी जायेगी फिर उसकी हर कोशिश का उसे पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और ये कि (बिल आख़िर सबको) आप के रब की तरफ़ ही लौटना है। (सू०-नज्म-53/39 ता 42)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस क़दर हो

सके दुनिया की फ़िक्र से खाली रहो क्योंकि जिस शख़्स की सबसे बड़ी फ़िक्र दुनिया बन जाये तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम ज़ाए कर देता है और फ़िक्र व फ़ाक़ा का ख़ौफ़ हर वक़्त उसके सर पर मुसल्लत कर देता है और जिस शख़्स ने अपनी सबसे बड़ी फ़िक्र फ़िक्रे आख़िरत बना ली तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम बना देता है और उसके दिल में इस्तग़फ़ार रख देता है।
(हिल्यातुल औलिया–1/198-ह०–766)
(कंजुल उ़म्माल–2/103-ह०–6077)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि कोई इन्सान तुम्हें ज़्यादा अच्छा न लगे अगर वो नमाज़ पढ़ता हो और रोज़े रखता हो बल्कि ये देखो कि वो दुनिया से किस क़दर दूर भागता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/3041-ह०–10513)

➡ हज़रत जारुद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने आख़िरत वाले अ़मल के ज़रिये दुनिया तलब की तो उसका चेहरा बिगाड़ दिया जायेगा और उसका ज़िक्र मिटा दिया जायेगा और उसका नाम जहन्नुम वालों में लिख दिया जायेगा।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/137-ह०–2085)

सिर्फ़ दुनिया ही जिसका मक़सूद व मतलूब हो

और उसे आख़िरत के अज्रो सवाब की उम्मीद न हो और न अ़ज़ाब का डर हो तो अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स को उसका मुक़र्रर हिस्सा दुनिया में ही दे देता है और उस के लिये आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा इसलिये दुनिया में रहकर आख़िरत के लिये इस तरह नेक अ़मल करो कि गोया कल तुम मर जाओगे क्योंकि मौत के बाअ़द अ़मल का मौक़ा नहीं मिलेगा फिर सिर्फ़ तुम्हारे आअ़मालों का हिसाबो किताब और अज्रो सवाब या अ़ज़ाब का वक़्त शुरु होगा

और रहा सवाल दुनियावी ज़िन्दगी के हालात व मुआ़मलात का जिसमें कि खुशी व ग़म, ऐश व तकलीफ़, मालदारी व मुफ़लिसी, रिज़्क़ में तंगी या फ़राख़ी यानी इन्सान के जो कुछ मुक़द्दर में होगा वो उसे दुनिया में मिल ही जायेगा तो फिर दुनिया के लिये कोशिश करना फिजूल और अपने वक़्त को बर्बाद करना है इसलिये दुनिया में रहकर आख़िरत का तोशा तैयार करने में ही अ़क़्ल मंदी है और इन्सान अपनी तक़दीर के हाथों मजबूर है और तक़दीर में वही कुछ लिखा गया है जो कि इन्सान अपने इख़्तियार व अपने इरादे से करना था अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है और उसको अज़ल में ही इ़ल्म था कि कौन सा शख़्स पैदा होने के बाद क्या क्या करेगा व जो कुछ इन्सान को अपने इख़्तियार व इरादे से करना था वो उसने लिख दिया इसी का नाम तक़दीर है और जिस पर लिखा गया उस का नाम लौहे महफ़ूज़ है

और अगर इन्सान नेक नियत व नेक इरादे से अपनी आख़िरत के लिये तैयारी करे और अल्लाह तअ़ाला से सिदक़ दिल से अपनी इस्लाह और हिदायत की दुअ़ा करे तो उसकी तक़दीर बदल सकती है।

➡ हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुअ़ा के सिवा कोई चीज़ तक़दीर को बदल नहीं सकती।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/45-ह०–2139)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/198-ह०–6038)
(इब्ने अबी शैबा–8/743-ह०–30487)

दुनिया ज़वाल व फ़ना से और जवानी बुढ़ापे से निहायत नज़दीक है तो ये कितनी अ़जीब बात है कि लोग दुनिया की थोड़ी सी चीज़ हासिल होने पर खुशियाँ मनाते हैं और आख़िरत की बेशुमार चीजें ज़ाए़ होने पर ग़म नहीं करते कि दुनिया के तलबगार से आख़िरत की नेअ़मतें व लज़्ज़तें फ़ौत हो जाती है पस ऐ इब्ने आदम दीन से ग़ाफ़िल और दुनिया का हरीस न बन और न ही दुनिया की फ़ानी चीज़ों को जमाअ़ करने वाला बन वरना ये काम तुझे सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले जायेगा।

-: दुनिया आज़माइश का घर है :-

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और बेशक उन तमाम चीज़ों को जो ज़मीन पर हैं हमने उनको ज़ीनत (व आराइश) बनाया ताकि हम लोगों को आज़मायें कि उनमें से कौन अच्छे अ़मल करता है और बेशक हम उन तमाम चीज़ों को जो ज़मीन पर हैं हम उसे (नेस्त व नाबूद करके) चटयल मैदान बनाने वाले हैं।
(सू०-कह्फ़-18/7,8)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

मगर इन्सान (ऐसा है) कि जब उसका रब उसे (राहत व आराइश देकर) आज़माता है और उसे इज़्ज़त से नवाज़ता है और उसे नेअ़मतें बख़्शता है तो वो कहता है कि मेरे रब ने मुझ पर करम फ़रमाया है लेकिन जब अल्लाह उसे (तकलीफ़ व मुसीबत देकर) आज़माता है और उस पर उसका रिज्क़ तंग कर देता है तो वो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया ये बात नहीं है बल्कि (हक़ीक़त ये है कि इज़्ज़त और मालो दौलत के मिलने पर) तुम यतीमो की क़दर व इकराम नहीं करते और ना ही तुम मिस्कीनो (यानी ग़रीबो व मुहताजों) को खाना खिलाने की (मुआ़शरे में) एक दूसरे को तरग़ीब देते हो और विरासत का सारा माल समेट कर (खुद ही) खा जाते हो (उस

में से मुफ़लिस व तंगदस्त व ग़रीब का हक़ नहीं निकालते हो) यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश करके रेज़ा रेज़ा कर दी जायेगी और आपका रब जलबा फ़रमां होगा और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके हुज़ूर) हाज़िर होंगे और उस दिन दोज़ख़ पेश की जायेगी तो फिर उस दिन इन्सान की समझ में आ जायेगा मगर (तब) उसे नसीहत फ़ायदा मंद न होगी और वो कहेगा काश हमने अपनी अस्ल ज़िन्दगी के लिये कुछ आगे भेज दिया होता (जो आज हमारे काम आता) सो उस दिन न उसके अ़ज़ाब की तरह कोई अ़ज़ाब दे सकेगा और न उसके जकड़ने की तरह कोई जकड़ सकेगा ऐ इत्मीनान पा जाने वाले नफ़्स तू अपने रब की तरफ़ इस हाल में लौट आ कि तू उसका रिज़ा का तालिब भी हो और उसकी रिज़ा का मतलूब भी हो पस तू मेरे (कामिल) बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।
(सू०–फ़ज्र–89/15-30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हम ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हें आज़मायेंगे कुछ ख़ौफ़ से और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़सान से और ऐ हबीब आप उन सब्र करने वालों को खुश ख़बरी सुनादें जिन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वो कहते है बेशक हम अल्लाह तआ़ला ही का (माल) हैं और उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं।
(सू०–बक़राह–2/155,156)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हमने उन्हें गिरोह दर गिरोह तक्सीम कर दिया (और) उनमें से बाअ़ज़ नेकोकार भी हैं और उनमें से बाअ़ज़ बदकार भी हैं और हमने उनकी आज़माइश इनाअ़मात व मुश्किलात (दोंनों तरीक़ों) से की ताकि वो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करें। (सू०–आअ़राफ़–7/168)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(और ऐ मुसलमानो) तुम्हें ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी जानों में आज़माया जायेगा। (सू०–आले इमरान–3/186)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन पर मौजूद तमाम चीज़ों को ज़ीनत और आराइश दी और उसके ज़ीनत देने में हिकमत और मक्सूद ये है कि इसके ज़रिये लोगों की आज़माइश की जाये कि कौन अच्छा अ़मल करता है और कौन बुरा अ़मल करता है ताकि उनके आअ़माल का पूरा पूरा बदला दिया जाये और अच्छे आअ़माल का बदला अच्छा व बेहतर होगा व बुरे आअ़माल का बदला सज़ा व अ़ज़ाब होगा और बिल आख़िर रोज़े क्यामत जो कुछ ज़मीन पर मौजूद है ये सब लपेट दिया जायेगा व दुनिया वीरान कर दी जायेगी और कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा और एक हमवार चटमल मैदान में सब इन्सानों को हिसाबो किताब के लिये जमाअ़ किया जायेगा तो फिर ऐसी फ़ानी दुनिया से दिल लगाना और इसे मुहब्बत व रग़बत

रखना और इसके सबब आख़िरत को भूल जाना व आख़िरत के लिये तैयारी न करना बहुत बड़ी हिमाकत व हलाकत और आफ़त और तबाही व बर्बादी है।

दुनिया की मुहब्बत दूर करने का सबसे उ़म्दाह तरीक़ा ये है कि इस दुनिया की फ़नाय्यत पर ग़ौर करते रहना चाहिये और इन्सान जितना इसमें ग़ौर करता जायेगा उतना ही दुनिया से मुहब्बत कम होती जायेगी और दुनिया की ज़ीनत व आराइश की तरफ़ रग़बत भी कम होती जायेगी और वो जान लेगा कि ज़मीन पर पाई जाने वाली खूबसूरत हसीनो जमील अ़ौरतें व लज़ीज़ अशया, दिल कश मनाज़िर, हरे भरे पेड़ पौधे, खुश मंजर बाग़ात व सोना चांदी और बहती नहरें व झरने, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के दिल खुश मंज़र व दरिया और उसकी मौजें व खूबसूरत मकान और दीगर अशया जो दुनिया की ज़ीनत हैं ये सब फ़ानी और फ़ित्ना हैं और इन्सान की आज़माइश के लिये हैं और ये सब एक दिन ज़ाइल हो जायेंगी व इसकी लज़्ज़तें ना पैद हो जायेंगी तमाम दरिया ख़ुश्क हो जायेंगे और दुनिया की ज़ीनत के तमाम आसार मिट जायेंगे और इसकी नेअ़मतें ज़ाइल हो जायेंगी ये दुनिया की हक़ीक़त है।

जिन लोगों का बातिन दुनिया की मुहब्बत और गुनाहों के मैल कुचैल से आलूदा है तो वो दुनिया की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत की तरफ़ राग़िब होते हैं–

और धोका खाते हैं और वो दुनिया से मवेशियों की तरह फ़ायदा उठाते हैं मगर जब उन्हें मौत आती है तो उन्हें दुनिया की लज़्ज़तों व नेअ़मतों के छूट जाने पर निहायत ग़म व तकलीफ़ होती है

और जो इस दुनिया के बातिन व इसकी हक़ीक़त पर ग़ौर करता है तो वो दुनिया में रहकर अपनी आख़िरत को संवारता है और वो दुनिया से इस तरह फ़ायदा उठाता है कि वो अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के अस्ल मक़सद को हासिल कर लेता है जिसके लिये उसे पैदा किया गया और वो दुनिया को ऐशो आराम की मन्ज़िल नहीं बल्कि दुनिया को राह गुज़र समझता है कि जिस तरह मुसाफ़िर को हालते सफ़र में मेहनतो मशक़्क़त व तकलीफ़ो से दो चार होना पड़ता है इसी तरह वो सफ़रे दुनिया की मेहनतो मशक़्क़त व तकलीफ़ों को बा आसानी उठाता है और उस पर साबिर व शाकिर रहकर अपनी ऐशो आराम वाली आख़िरत की तैयारी में हमा वक़्त लगा रहता है और अपने रब की इताअ़त पर गामज़न रहता है और अपने रब की माअ़रिफ़त के हुसूल के लिये जद्दो जहद करता रहता है ऐसा शख़्स रब की बारगाह में बुलन्द तरीन मक़ाम व बेहतरीन मन्ज़िल में क़याम पज़ीर होगा और हर क़िस्म के ऐशो आराम और दायमी नेअ़मतों व लज़्ज़तों और मसर्रतों में होगा।

➡ हज़रत अबू सईद (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया सर सब्ज़ व शीरी है और अल्लाह तआ़ला तुम्हें दुनिया में हाकिम बनाने वाला है फिर देखेगा कि तुम कैसे अ़मल करते हो पस ग़ौर से सुनो दुनिया से बचते रहना और औ़रतों से बचते रहना क्योंकि बनी-इसराईल में सबसे पहला फ़ित्ना औ़रतों से शुरु हुआ था। (इब्ने माजा-सुनन-3/297-ह०-4000)
(मुस्लिम-सहीह-6/300-ह०-6948)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक दुनिया मीठी सर सब्ज़ व खुशनुमा है जिहाज़ा तुम लोग दुनिया से बचना व औ़रतों से बचना और जो शख़्स इसको हक़ के मुताबिक़ हासिल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये उसमें बरकत अ़ता फ़रमाता है और बहुत सारे लोग अल्लाह व उसके रसूल के माल में घुसते हैं उसमें जो उनका नफ़्स ख़्वाहिश करता है तो ऐसे लोगों पर क़यामत के दिन आग का अ़ज़ाब होगा।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/250-ह०-10301)
(बैहक़ी-शुअबुल ईमान-7/250-ह०-10304)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे बारे में किसी चीज़ का डर नहीं सिवाये दुनिया की उस ज़ीनत के जो अल्लाह

तआ़ला तुम्हारे लिये ज़ाहिर करेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया क्या ख़ैर भी शर को लाती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़ैर तो ख़ैर ही लाती है लेकिन देखो बरसात जो कुछ उगाती है वो ख़ैर है या नहीं लेकिन वो जानवरों को मार डालती या मौत के क़रीब कर देती है सिवाये उन जानवरों के जो कि सिर्फ़ चारा या सब्ज़ा इस क़दर खाते हैं कि उनकी कोखें फूल जाती हैं फिर वो (मज़ीद खाने के बजाये) सूरज का रुख कर लेते हैं और पाखाना या पेशाब करते है और जब पहला खाना हज़्म हो जाता है तब वो दोबारा खाते हैं इसलिये उसमें बरकत डाल दी जाती है इसी तरह जो शख़्स माल को अपने हक़ के मुताबिक़ लेगा और उसको सही जगह ख़र्च करेगा और तो उसके लिये उस माल में बरकत दी जाती है और जो शख़्स नाहक़ माल लेगा तो उसके माल में बरकत नहीं होती और वो उस जानवर की तरह है जो खाता है लकिन सेर नहीं होता। (इब्ने माजा–सुनन–3/295-ह०–3995)
(मुस्लिम–सहीह–2/385-ह०–2421)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माले दुनिया सर सब्ज़ और मीठा है और मुसलमानो का अच्छा साथी है माल का जो हिस्सा मिस्कीन, यतीम और मुसाफ़िर को दिया वो अच्छा साथी है और जो माल को नाहक़ लेता है वो उस जानवर की तरह

है जो खाता है लेकिन सेर नहीं होता और ये माल उसके ख़िलाफ़ क़यामत के दिन गवाही देगा। (मुस्लिम–सहीह–2/387-ह०–2423)

दुनिया के थोड़े से माल पर कनाअ़त करो क्योंकि मोमिन के लिये दुनिया का थोड़ा सा माल भी काफ़ी है और क़नाअ़त से ज़िन्दगी पुर लुत्फ़ हो जाती है और माल मुसीबत की सवारी है और जो माल राहे खुदा में ख़र्च किया वो क़यामत में तेरे लिये ज़ख़ीरा होगा और जिस माल को दुनिया में तू छोड़ कर मरा उससे दूसरे फ़ायदा उठायेंगे और बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने दोस्तों को माल कम दिया और अपने दुश्मनों को माल देने में कभी बुख़्ल नहीं किया और थोड़ा सा वो माल जो इन्सानी ज़रुरियात के लिये काफ़ी हो वो उस ज़्यादा माल से बेहतर है जो गुनाह और सरकशी का बाइस हो।

जो शख़्स दुनिया के माल से सेर नहीं होता ख़्वाह उसे कितना ही माल मिल जाये और कसीर माल पर भी उसे कनाअ़त नहीं होती बल्कि उसकी कोशिश यही रहती है कि ज़्यादा से ज़्यादा माल जमाअ़ करे ये वो शख़्स है जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नसीहत को नहीं समझा और वो माल के फ़ित्ने में मुब्तिला हो गया है और जिस शख़्स को बाक़दरे ज़रुरत माल मिला और उस माल पर वो कानेअ़ यानी उसे कनाअ़त हासिल हो गयी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि दुनिया में तुम इस तरह रहो जैसे कि तुम मुसाफ़िर हो या रास्ता उ़बूर करने वाले हो और जब तू सुबह करे तो अपने दिल में शाम का यक़ीन न कर और जब शाम करे तो दिल में सुबह का भरोसा न कर यानी हो सकता है सुबह से पहले ही तेरी मौत आ जाये और तुम अपना शुमार मुर्दो में करो और मौत आने से पहले नेक आअ़माल करो और तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा नाम क्या होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/192-ह०–2333)
(बुख़ारी–सहीह–6/42-ह०–6416)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4114)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/752-ह०–698)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6572)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/237-ह०–10245,46,47)

➡ हज़रत काअ़ब बिन इ़याज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़ित्ना होता है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/194-ह०–2336)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/252-ह०–10309)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/305-ह०–3223)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/179-ह०–404)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम कुबूल किया और उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुवाफ़िक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर उसे क़नाअ़त दे दी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।

(मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०–2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2348,2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10345)

अल्लाह तबारक व तआ़ला बन्दों को मालो दौलत और नेअ़मत व इ़ज़्ज़त देकर भी आज़माता है और ये सब चीज़ें न देकर या वापस लेकर भी आज़माता है तो मोमिन व मुख़्लिस और इताअ़त गुज़ार व फ़रमां बरदार बन्दे तो हर हाल मे रब तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहते हैं कि नेअ़मत के वक़्त शुक्र और तंगी व मुसीबत के वक़्त वो सब्र करते हैं मगर ग़ाफिल व जाहिल का तर्ज़े अ़मल इसके बरअ़क्स होता है कि नेअ़मत व इ़ज़्ज़त के वक़्त वो मुताकब्बिर और खुदपसंदी का शिकार हो जाता है और उस नेअ़मत व इ़ज़्ज़त पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने और उसका फ़ज़्ल व एहसान क़रार देने के बजाये उसको अपना ज़ाती हक़ और अपना कमाल समझता है इस तरह वो आज़माइश में फेल हो जाता है और गुनाहों का मुरतकिब व अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ हो जाता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
वो तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी को (ही) जानते हैं और वो लोग आख़िरत की हक़ीक़ी ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल और बेख़बर है। (सू०-रुम-30/7)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो (बिल्कुल दीन के) किनारे पर (खड़े होकर) इबादत करते हैं अगर उन्हें कोई दुनियावी फ़ायदा पहुँचता है तो वो उस (दीन) से मुतमइन हो जाते हैं और अगर उन पर कोई मुसीबत (या आज़माइश) पहुँचती तो वो उसी वक़्त (दीन से) पलट जाते हैं (तो वो) दुनिया में भी नुक़सान उठाते और आख़िरत में भी नुक़सान उठाते हैं और यही वाज़ेह तौर पर बड़ा नुक़सान है। (सू०-हज-22/11)

दुनिया की नेअ़मतें आख़िरत के मुक़ाबले में इस क़दर कम है जैसे एक क़तरा समुन्दर के मुक़ाबले में हो बल्कि ये भी निस्बत नहीं है क्योंकि क़तरे की समुन्दर की तरफ़ निस्बत मुतनाही की मुतनाही की तरफ़ निस्बत है जबकि दुनिया की आख़िरत की तरफ़ निस्बत मुतनाही की ग़ैर मुतनाही की तरफ़ निस्बत है क्योंकि दुनिया की तमाम नेअ़मतें मुतनाही और महदूद है और आख़िरत की नेअ़मतें ग़ैर मुतनाही और ला महदूद हैं पस अगर किसी शख़्स को दुनिया में कसीर नेअ़मतें मिल जायें और वो आख़िरत की नेअ़मतों से महरुम रहे तो ये उसके लिये बहुत ही बड़ा नुक़सान है और जो

दुनिया की नेअमतों से महरुम रहा और मसाइबो आलाम व आफ़ात में मुब्तिला रहा मगर आख़िरत में उसको जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतें मिल गई तो वो शख़्स कामयाब और बा मुराद हुआ।

जब किसी इसान पर कोई मुसीबत या तंगी या उसको दुनियावी नेअ़मतें न मिलें तो उसको ये नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ है या ये उसके किसी अ़मल का नतीजा है या ये उसकी बद क़िस्मती है बल्कि इसमें अल्लाह तआ़ला की हिकमत व आज़माइश होती है और अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिस पर चाहता है रिज़्क़ तंग कर देता है रब तआ़ला इस तरह अपने बन्दो को आज़माता है कि कौन उसकी क़ज़ा पर राज़ी है और कौन उसकी अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार है

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों में बाअ़ज़ बन्दों को चुन लेता है जिन पर मसाइबो आलाम की बारिश होती है अगर वो उस वक़्त सब्र व शुक्र पर क़ायम रहे और रब की रज़ा पर राज़ी रहे तो फिर उसे आख़िरत में बेहिसाब अज्र और बेशुमार इनाअ़मात अ़ता होंगे और अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में जिसे मालो दौलत व इज़्ज़त दी और फिर भी वो यादे इलाही से ग़ाफ़िल रहा और अपनी आख़िरत को भूलकर मुताकब्बिर हो गया तो ऐसे शख़्स को आख़िरत में सख़्त हिसाब व सख़्त अ़ज़ाब से दो चार होना होगा।

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नेक बन्दो को ज़रुर आज़माता है जैसे हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को बेशुमार मसाइबो आलाम में गिरफ़्तार कर आज़माया और अल्लाह तआ़ला बदकारों को भी ऐशो आराम और नेअ़मतें देकर आज़माता है जैसे काफ़िर यज़ीद मलऊ़न को ऐश व इशरत और हुकूमत व दुनियावी कसीर नेअ़मतें दीं तो ये ऐशो इशरत उसके लिये बतौर अल्लाह की अज़माइश व ढील थी और वो दोज़ख़ के सख़्त तरीन अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा और हमेशा नारे दोज़ख़ जलता रहेगा इसलिये मुसलमानों को हर हाल में अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये।

दुनियावी हालात व असबाब चाहे जैसे भी हों उस पर कभी ध्यान नहीं देना चाहिये बल्कि हर वक़्त इस तसव्वुर को ज़हन में रखना चहिये कि दुनिया में हमे कितने दिन रहना है बिल आख़िर हमें मरना है और हक़ीक़ी व दायमी ज़िन्दगी में पहुंचना है और आख़िरत की ऐशो इशरत वाली ज़िन्दगी हमेशा के लिये है और दुनियावी तंगी व परेशानी सिर्फ़ थोड़े दिनों के लिये है फिर तो ऐश ही ऐश है अगर हम दुनियावी फ़िक्र को छोड़ दें और अपनी ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी का मक़सद बना लें और ताअ़त व इ़बादत और नेक आअ़माल में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर दें तो फिर आख़िरत में हमें किसी क़िस्म की कोई परेशानी व तकलीफ़ न होगी और दुनियावी ज़िन्दगी में थोड़ी-

परेशानी उठा लें और सब्र व शुक्र व अहकामाते इलाही की ताअ़मील पर गामज़न रहें ताकि हमारी आख़िरत की दायमी ज़िन्दगी ऐशो इशरत और बेशुमार नेअ़मतों व मसर्रतों में हो इन्सान अपनी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा तो रात को सोने में ही गुज़ार देता है बची आधी ज़िन्दगी तो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी तो फिर कुछ भी नहीं है तो जो शख़्स मालदार व खुशहाल हो तो उसे अपनी ज़िन्दगी के ख़ात्मे से ग़ाफ़िल होना उसके लिये हालाकत व बर्बादी और आफ़त और तबाही है और जो शख़्स तंगदस्त व फ़क़ीर और मुहताज हो तो उसे ये नहीं भूलना चाहिये कि थोड़े दिनों की परेशानी व तकलीफ़ के बाद फिर हमेशा के लिये आराम ही आराम है।

जब इन्सान को अपनी लज़्ज़तों के हुसूल और शहवतों के असबाब मयस्सर होते हैं तो वो अपनी नफ़्सानी तक़ाज़ों को पूरा करने में मशगूल रहता है और उन लज़्ज़तों को तर्क करना और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त की तरफ़ रुजूअ़ करना उसके लिये बहुत मुश्किल हो जाता है और जब इन्सान के पास ऐशो इशरत के सामान न हो और यादे इलाही से ग़ाफ़िल करने वाली चीज़ें न हो तो उसके लिये अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त करना आसान हो जाता है और दुनिया के मसाइबो आलाम व रिज़्क़ की तंगी में मुब्तिला शख़्स और इताअ़त गुज़ार, फ़रमां बरदार शख़्स पर अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो करम होता है

बल्कि मुसीबत के वक़्त अल्लाह तआ़ला की बन्दे पर ऐ़न रहमत होती है जो कि उसे ग़फ़लत से निकाल कर बेदारी की तरफ़ ले जाना चाहती है और रब तआ़ला उसे अपनी आखिरत संवारने का एक मौक़ाअ़ इ़नायत फ़रमाता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ ख़ैरो बरकत और भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे तकलीफ़ व मसाइबो आलाम में मुब्तिला कर देता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/422-ह०–5645)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/64-ह०–2907)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मर्द व औ़रत के जान व माल और औलाद में मुसीबत रहती है यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०–2399)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वालों को जब अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम सवाब और मरातिब

अ़ता फ़रमायेगा तो दुनिया में आ़फ़ियत व ऐशो आराम में रहने वाले लोग जब उनके सवाब और मरातिब को देखेंगें तो वो तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०-10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

इन्सान दुनियावी नेअ़मतों व राहतों में जितना ज़्यादा मुब्तिला होगा उसी क़दर वो ज़्यादा उनकी मुहब्बत में गिरफ़्तार होगा और मौत के वक़्त जब उन चीज़ों से उसकी जुदाई होगी तो उसको उतना ही ज़्यादा ग़म व तकलीफ़ होगी और दुनिया की नेअ़मतों व लज़्ज़तों व ऐशो इशरत से जिस क़दर जिसका तअ़ाल्लुक़ कम होगा तो मौत के वक़्त उन चीज़ों की जुदाई से उसे उसी क़दर कम तकलीफ़ होगी इसलिये ये समझना ग़लत है कि दुनिया की नेअ़मतों का हुसूल इज़्ज़त व रब तअ़ाला की रिज़ा का सबब है और नेअ़मतों व राहतों का दुनिया में न मिलना ज़िल्लत या रब तअ़ाला की नाराज़गी का सबब है ऐसा नहीं है बल्कि इन दोंनों हालतों में बन्दे के लिये बड़ी आज़माइश है और बाअ़ज़ मुसलमान अपनी जहालत व ला इ़ल्मी के सबब ये गुमान करते हैं कि जब उन्हें कोई नेअ़मत मिले तो वो समझते है ये नेअ़मत उन्हें अपने किसी अच्छे अ़मल या अपनी अ़क़्ल के कमाल के सबब से मिली है बल्कि वो नेअ़मत उसके लिये बड़ी आज़माइश है और अल्लाह तअ़ाला मालो दौलत–

व ऐशो इशरत देकर भी आज़माता है और तंगी व परेशानी देकर भी आज़माता है और जिसके पास जितना ज़्यादा माल होगा आख़िरत में उसका हिसाब उतना ही बड़ा व सख़्त होगा और जिसके पास जितना माल कम होगा उसका उतना ही कम और आसान हिसाब होगा।

इन्सान की ज़िन्दगी में क़दम क़दम पर आज़माइशें हैं और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को कभी बीमारी कभी मालो दौलत की कमी और कभी मालो ज़र व जायदाद के नुक़सान और कभी किसी चीज़ के खौफ़ और कभी ऐशो इशरत और कभी कसीर मालो दौलत देकर और कभी किसी की जान लेकर भी आज़माता है अल्लाह तआ़ला ने अपने अम्बिया व औलिया को भी आज़माइश में डाला जैसे हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का आग में डाला जाना और बीवी सय्यदा हाज़रा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) व फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल (अ़लैहिस्सालम) को सफ़ा मर्वाह पहाड़ियों के दरमियान तन्हा छोड़ना और हज़रत इस्माईल (अ़लैहिस्सालम) की कुर्बानी और हज़रत अय्यूब (अ़लैहिस्सालम) को बीमारी में मुब्तिला करना व हज़रत याकूब (अ़लैहिस्सालम) से हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सालम) को जुदा करना व हज़रत आदम (अ़लैहिस्सालम) का जन्नत से निकाला जाना ये सब आज़माइशें और सब्र की मिसालें हैं।

बन्दों की आज़माइश में अल्लाह तआ़ला की

एक हिकमत ये भी होती है कि अहले ख़ैर अहले शर से अ़लैहदा हों और अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों पर आज़माइश उसे हलाक करने की ग़रज़ से नहीं आती बल्कि उसका मक़सद बन्दे के क़ल्ब व बातिन को पाक व साफ़ करना होता है और मसाइबो आलाम के ज़रिये होने वाली आज़माइश पर सब्र व रिज़ाये इलाही पर राज़ी न रहने वाले लोगों को पांच चीज़ों का नुक़सान होता है यानी जिस चीज़ पर उसने सब्र न किया उस चीज़ से उसका महरुम रहना और दूसरा सब्र न करने के सबब मिलने वाले अज्रो सवाब से महरुम रहना और तीसरा उसके तवक्कुल व उसके ईमान में कमी होना और चौथा सब्र के ज़रिये मिलने वाली रब की रिज़ा से महरुम होना पांचवां रब तआ़ला की नाराज़गी जो सबसे बड़ा नुक़सान है।

और वो शख़्स जिस पर अल्लाह तआ़ला मसाइबो आलाम के ज़रिये आज़माइश डाले उस वक़्त वो सब्र और रब की क़ज़ा पर राज़ी रहे और जिसे मालो दौलत और ऐशो इशरत मिली वो अपने रब की अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार रहे और अपने माल के हुक़ूक़ अदा करे और राहे खुदा में ख़र्च करे तो इन दोनों क़िस्म के लोग अपनी अपनी आज़माइश में कामयाब हो जाते हैं और इसके बदले मिलने वाले अज्रो सवाब व अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के मुस्तहिक़ हो जाते हैं और मुसीबत व तकलीफ़ से मुक़ाबला करने का सबसे बेहतरीन ज़रिया सब्र है और सब्र ही बन्दे को रब तआला-

की रिज़ा पर राज़ी रहना आसान बनाता है और हर मुसीबत बन्दे के हक़ में अल्लाह की नेअ़मत और उसके लिये भलाई और फ़ायदे का बाइस है क्योंकि हर मुसीबत परेशानी या बीमारी के सबब उसके गुनाह मिटाये जाते है हत्ता कि किसी के कांटा चुंभने के सबब भी उसके गुनाह मिटते हैं और दुनिया में लोगों को जो हादसात व कुदरती आफ़ात से जानी व माली नुकसान होता है उसकी दो क़िस्में होती हैं एक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ आज़माइश और दूसरी गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है जिसके सबब से उसके गुनाहों में तख़्फ़ीफ़ की जाती है और वो गुनाहों से बिल्कुल पाको साफ़ हो जाता है या अल्लाह तआ़ला जितना चाहता है उस बन्दे के उतने गुनाह मिटा देता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो मुसीबत तुम को पहुँचती है वो तुम्हारी (बद आअ़माली) के सबब पहुंचती है जो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती है जबकि बहुत सी ख़ताओं को वो मुआ़फ़ फ़रमां देता है। (सू०-शूरा-42/30)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि जब ये आयते करीमा उतरी कि जो कोई बुराई करेगा उसको उसका बदला मिलेगा (सू०-निसा-123) तो मुसलमानों पर बहुत सख़्त गुज़री कि हर गुनाह के बदले ज़रुर अ़ज़ाब होगा तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ क्योंकि मुसलमान को जो भी तकलीफ़

पहुँचती है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है यहाँ तक कि जो उसे ठोकर लगती है या उसे कोई काँटा भी चुभता है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है।
(मुस्लिम–सहीह–6/203-ह०–6569)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/595-ह०–6525)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/76-ह०–2923)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1725)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की मिसाल लोहे की तरह है कि जब उसे बुख़ार या दीगर तकलीफ़ पहुँचती है तो उसका मैल (गुनाह) ख़त्म हो जाते हैं और पाकीज़गी बाक़ी रह जाती है यानी जिस तरह लोहे को आग में डालने से मैल कुचैल ख़त्म हो जाता है और असल लोहा बच रहता है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/599-ह०–6544)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि मोमिन की हर बीमारी उसके लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/701-ह०–1286)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब किसी मुसलमान को जब किसी–

बीमारी से तकलीफ़ पहुँचे या किसी और तरह से तकलीफ़ पहुँचे तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को गिरा देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते गिराता है। (मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6559)
(इब्ने अबी शैबा–3/530-ह०-10905)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/593-ह०–6531)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1724)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/79-ह०–2927)

➡ हज़रत उम्मे अ़ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मैं बीमार हो गई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ उम्मे अ़ला तुम्हें खुशख़बरी हो कि बिला शुबा मुसलमान की बीमारी के ज़रिये से अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को ख़त्म कर देता है जैसे कि आग सोने व चाँदी के खोट को निकाल देती है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3092)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक मरीज़ की अ़यादत की (जिसको बुख़ार था) तो आपने फ़रमाया कि खुशख़बरी हो बेशक अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ये (बुख़ार) मेरी आग है जो मैं मोमिन बन्दे पर दुनिया में इसलिये मुसल्लत करता हूँ ताकि वो आख़िरत की आग के बदले में उसका हिस्सा हो जाये।
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०–10907)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी चुभे तो इसके सबब से अल्लाह तआ़ाला उसका दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाह में तख़फ़ीफ़ करता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/539-ह०–965)
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3093)
(मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6561)
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०-10906)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/596-ह०–6541)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/497-ह०–1278)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़ार को बुरा मत कहो क्योंकि वो दूर करता है इन्सान के गुनाहों को जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है। (मुस्लिम–सहीह–6/204-ह०–6570)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/533-ह०-10915)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/605-ह०–6561)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/698-ह०–1279)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/85-ह०–2936)

दुनिया में मुसलमानो को कई क़िस्म की आज़मइशों से गुज़रना पड़ता है जैसे हुकूक़ की अदायगी, जानो माल के नुक़सान और बीमारियाँ,

परेशानियाँ व कई क़िस्म की मुसीबतें व इ़बादात व अ़मलियात और शरई अहकामात की तकमील में मशक़्क़तें और तंगी व फ़राख़ी और मुफ़लिसी व खुशहाली और कारोबार और दीगर नुक़सान वग़ैराह ये सब आज़माइश हैं इन सबके लिये उसे हमेशा तैयार रहना चाहिये और रब की रिज़ा और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहते हुये आख़िरत के अज्रो सवाब पर नज़र रखते हुये इन तमाम आज़माइशों में कामयाब होने की हत्तल इमकान कोशिश करनी चाहिये।

इन्ही आज़माइशों के ज़रिये अच्छे बुरे, नेक और बद व ख़रे खोटे में इम्तियाज़ किया जाता है तो ये दुनिया आज़माइशों का घर है ऐशो आराम की जगह नहीं है और ये दुनिया फ़ानी है हमेशगी का घर नहीं तो फिर इन्सान को चाहिये कि इन आज़माइशों वाले और फ़ानी घर से क़तई मुहब्बत व रग़बत न रखें बल्कि दुनिया में अपनी आख़िरत और हमेशगी के घर के लिये हर वक़्त तैयारी करे और उसके लिये कसरत से नेक आअ़माल जमाअ़ करे और दुनिया को सफ़र की जगह और खुद को मुसाफ़िर ख़्याल करें और इन्सान की मन्ज़िल आख़िरत है वहाँ कभी मौत नहीं आयगी और वो नेक या बद आअ़माल का पूरा पूरा बदला पायेगा अच्छे आअ़माल का बदला बेहतर है और जनन्त है और बुरे आअ़मला का बदला दोज़ख़ है और निहायत सख़्त अ़ज़ाब है।

आख़िरत हर लिहाज़ से बेहतर और अफ़ज़ल व आअ़ला है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो (माल व ज़र) तुम्हारे पास है (वो सब) फ़ना हो जायेगा और जो अल्लाह तआ़ला के पास है (वो) बाक़ी रहने वाला है और हम उन लोगों को जिन्होंने सब्र किया उन्हें ज़रुर उनका अज्र अ़ता फ़रमायेंगे उनके आअ़माल के बदले जो वो अंजाम देते रहे थे। (सू०–नह्ल–16/96)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बल्कि तुम (अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ़ करने की वजाये) दुनियावी ज़िन्दगी (की लज़्ज़तों) को इख़्तियार करते हो हालांकि आख़िरत (की लज़्ज़तें) बेहतर और हमेशा रहने वाली हैं।
(सू०–आअ़ला–87/16,17)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो भी चीज़ तुम्हें अ़ता की गई है सो वो दुनियावी ज़िन्दगी का सामान और उसकी रौनक़ व ज़ीनत है मगर जो अल्लाह तआ़ला के पास है वो ज़्यादा बेहतर और दायमी है तो क्या तुम इस हक़ीक़त को नहीं समझते (और) क्या वो शख़्स जिससे हमने (आख़िरत के इनाअ़मात का) बेहतर वाअ़दा फ़रमाया हो फिर वो उसे पाने वाला हो जाये (तो क्या वो) उस (बदनसीब) की मिस्ल हो–

सकता है जिसे दुनियावी ज़िन्दगी के सामान से नवाज़ा गया हो फिर वो क़यामत के दिन (अ़ज़ाब के लिये) हाज़िर किये जाने वालों में से हो जाये। (सू०–क़सस–28/60,61)

इन्सान के पास ख़्वाह कितना ही माल व मताअ़ हो बिल आख़िर वो ख़त्म होने वाला है और जो अल्लाह तआ़ला के पास है वो उसको फ़ना नहीं बल्कि वो हमेशा बाक़ी रहने वाला है पस वो शख़्स जो अ़क्ल मंद है वो बाक़ी रहने वाली चीज़ को फ़ानी चीज़ पर तरजीह देता है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दो को दुनिया की ज़रर रसां (नुक़सान देने वाली) चीज़ों से बचाना चाहता है और इस फ़ानी दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करने की तरग़ीब देता है कि दुनिया की फ़ानी चीज़ों व लज़्ज़तों का आख़िरत की नेअ़मतों व लज़्ज़तों से तक़ाबुल करके देखो कि इन दोनों में क्या फ़र्क़ है और जब फ़र्क़ माअ़लूम हो जाये तो आख़िरत की नेअ़मतों व लज़्ज़तों के हुसूल के लिये इबादात व नेक आअ़माल करो और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को दिल से निकाल दो और आख़िरत की तैयारी में लग जाओ।

हज़रत इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को इस बात की माअ़रिफ़त हासिल हो जाये कि दुनिया की हर चीज़ के मुक़ाबले में जो कुछ अल्लाह तआ़ला के पास है वो हमेशा बाक़ी रहने वाला और बेहतर–

है तो वो शख़्स कभी भी दुनिया से मुहब्बत व रग़बत नहीं रखेगा जैसे कि बर्फ़ के मुक़ाबले में जवाहर बेहतर और बाक़ी रहने वाले हैं इसी तरह दुनिया और आख़िरत का मुआ़मला है दुनिया उस बर्फ़ की तरह है जो धूप में रखी हुई हो वो ख़त्म होने तक पिघलती रहेगी और आख़िरत उस जौहर की तरह है जो धूप में फ़ना नहीं होता।

अल्लाह तआ़ला के पास जो नेअ़मतें है वो इ़बादात व नेक आअ़माल के सबब से मिलेंगी जन्नत जो कि दुल्हन की तरह आराम करने की बेहतरीन जगह है वहाँ खुशबूदार लज़ीज़ शराब के जाम पिलाये जायेंगे जहाँ अब्दी हयात अ़ता की जायेगी और हद्दे नज़र तक हर जन्नती का महल होगा और ख़िदमत गुज़ार हसीन खुबसूरत खुद्दाम होंगे और निहायत खूबसूरत हसीनो जमील अ़ौरतों से जन्नतीयों का निकाह होगा और जन्नत हर ख़्वाहिश को पूरा करने की जगह है और लज़ीज़ तर खाने और फल और मेवे और जन्नत हर ग़लाज़त व नजासत से पाक होगी और हर तरफ़ खुश्बुओं के खूबसूरत मनाज़िर होंगे और वहाँ न कोई बुराई होगी और न कोई तकलीफ़ और न बीमारी बल्कि ऐ़श व राहत सुकूनो चैन व अमन और मर्सरत और बेफ़िक्री और खुशगवार मौसम होगा न सर्दी न गर्मी न बरसात होगी और वहाँ न कभी रात होगी और हर कोई वहाँ जवान और खूबसूरत होगा व किसी को बुढ़ापा और मौत न आयेगी और उख़रवी नेअ़मतें दुनिया की नेअ़मतों

से हर लिहाज़ से अफ़ज़ल व आअ़ला हैं क्योंकि उख़र‘वी नेअ़मतें दायमी हैं और ग़ैर मुतनाही हैं और फ़ानी चीज़ से बाक़ी रहने वाली चीज़ बेहतर होती है इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि वो दुनिया के ज़ाइल व फ़ना हो जाने और आख़िरत के हमेशा बाक़ी रहने पर खूब ग़ौरो फ़िक्र करे और आख़िरत को दुनिया पर तरजीह दे और दुनिया की फ़ानी नेअ़मतों व लज़्ज़तों से बेरग़बती इख़्तियार करे।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने दुनिया से रग़बत की और उसकी रग़बत दुनिया से ज़्यादा हो गई तो जिस क़दर उसकी दुनिया से रग़बत ज़्यादा होगी तो अल्लाह तआ़ला उसी क़दर उसके दिल को अन्धा करे देगा और जो दुनिया से बेरग़बती इख़्तियार करे और उसकी उम्मीदें कम हों तो रब तआ़ला उसके बग़ैर इ़ल्म सीखे उसे इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है और बग़ैर हुसूले हिदायत के उसे हिदायत अ़ता फ़रमाता है नीज़ फ़रमाया कि ख़बरदार अ़नक़रीब तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आयेगी जिसको बग़ैर क़त्ल और जबर के हुकूमत रास नहीं आयेगी और मालदार बुख़्ल और फ़ख़्र करेंगे और ख़्वाहिशाते नफ़्स की इताअ़त की वजह से दीन से निकल जायेंगे तो तुममें से जो शख़्स इस ज़माने को पाये तो वो अपने फ़क्र (मुहताजी, मुफ़लिसी) पर सब्र

करे जबकि वो मालदार बनने पर क़ादिर हो और वो सब्र करे ज़िल्लत पर जबकि वो क़ादिर हो इज़्ज़त पर और वो सब्र करे लोगों के बुग्ज़ व नफ़रत पर जबकि वो क़ादिर हो मुहब्बत पर और वो ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये बर्दाश्त करे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसको पचास सिद्दीक़ो का सबाव अ़ता फ़रमायेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/317-ह०–10582)
(हिल्यातुल औलिया–8/35)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुमर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ये दुनिया हलाकत का घर है ठहरने की जगह नहीं और ये ग़म का घर है खुशी का घर नहीं तो जिसने दुनिया को पहचान लिया वो दुनिया की कुशादगी से खुश नहीं होगा और ना ही दुनिया की शिद्दत से ग़मगीन होगा अल्लाह तआ़ला ने दुनिया को आज़माइश का घर बनाया और आख़िरत को अन्जाम का घर बनाया पस दुनिया की आज़माइश को आख़िरत का सबाब बना दिया और आख़िरत का सवाब दुनिया की आज़माइश का ऐ़वज़ है पस अल्लाह तबारक व तआ़ला बेहतरीन जज़ा देने के लिये अपने बन्दों की आज़माइश करता है तो तुम दुनिया के मीठे घूँट से आख़िरत के कढ़वे घूंट की वजह से बचो और दुनिया की लज़्ज़तों से आख़िरत की मुसीबतों की वजह से बचो और इस घर को आबाद करने

की कोशिश न करो जिसको वीरान करने का अल्लाह तआ़ला ने फ़ैसला कर लिया है और तुम इस दुनिया से मुहब्बत व रग़बत न रखो जिससे इजतिनाब का अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है वरना तुम रब की नाराज़गी और उसकी सज़ा के मुस्तहिक़ हो जाओगे। (अल फ़िरदौस–ह०-8186)

आख़िरत जिस्मानी व रुहानी सआ़दतों पर मुश्तमिल है जबकि दुनिया में आ़रज़ी लज़्ज़तें हैं जो कि जिस्मानी व रुहानी सआ़दतों पर मुश्तमिल नहीं है और इस दुनिया की लज़्ज़तें तकलीफ़ व परेशानी और मशक़्क़तें उठाने के बाद मिलती हैं जबकि आख़िरत की लज़्ज़तें बग़ैर तकलीफ़ और मशक़्क़त के मिलेंगी और दुनिया की लज़्ज़तों के साथ ये फ़िक्र भी होती है कि ये लज़्जतें ज़ाइल और फ़ना होने वाली हैं जबकि आख़िरत की लज़्ज़तें कभी ज़ाइल व फ़ना न होंगी और हमेशा बाक़ी रहेंगी और अल्लाह तआ़ला हमेशा बन्दों के लिये आख़िरत की सआ़दत और भलाई चाहता है इसलिये कुरान में कई मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की मज़म्मत फ़रमाई और आख़िरत की नेअ़मतों व लज़्ज़तों की तरग़ीब फ़रमाई।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम लोग दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह तआ़ला आख़िरत की भलाई चाहता है और अल्लाह खूब ग़ालिब हिकमत वाला है। (सू०–अनफ़ाल–8/67)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और तू उस (मालो दौलत) में से जो अल्लाह ने तुझे दिया है (उससे) आख़िरत का घर तलब कर और दुनिया से भी अपना हिस्सा न भूल और तू (लोगों पर वैसा ही) एहसान कर जैसा एहसान अल्लाह ने तुझ पर किया है और तू मुल्क में फ़साद अंगेज़ी न कर बेशक अल्लाह फ़साद करने वालो को पसंद नहीं फ़रमाता (सू०-क़सस-28/77)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक दुनिया एक जाल की मानिन्द है जो शख़्स इसकी ख़्वाहिश करता है वो इसके जाल में फंस जाता है और जो इससे एअ़राज़ करता है तो वो इसके जाल से मामून रहता है पस अपने दिल को इसकी तरफ़ माइल न कर और न इसकी तरफ़ मुतावज्जै हो वरना ये तुझे अपने जाल में फंसा लेगी और हलाक कर देगी और इसके तलबगार आख़िरत में ज़िल्लत उठायेंगे जो शख़्स दुनिया को आबाद करता है वो अपनी आख़िरत बर्बाद करता है और वो आख़िरत की नेअ़मतों से महरुम रहेगा और जो शख़्स दुनिया की ख़िदमत करता है तो दुनिया उसे अपना ख़ादिम बना लेती है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करता है तो दुनिया उसकी ख़ादिम हो जाती है दुनिया नुक़सान व ख़सारे का घर है और आख़िरत ऐ़शो इशरत व मसर्रत और अमन का महल है और दुनिया मुक़र्ररा वक़्त तक ही रहेगी और आख़िरत हमेशा रहेगी और कभी ख़त्म न होगी।

ज़िन्दगी एक हसीन खूबसूरत झूठ है और मौत एक कढ़वा सच

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप उन्हें दुन्यावी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कर दें जो उस पानी जैसी है जिसे हमने आसमान की तरफ़ से उतारा तो ज़मीन का सब्ज़ा खूब घना हो गया फिर वो सूखी घास का चूरा बन गया जिसे हवायें उड़ा ले जाती हैं और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर खूब क़ादिर है। (सू०–कह्फ–18-45)

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में दुनिया की मिसाल और उसकी हक़ीक़त बयान फ़रमाई है ताकि लोग इस दुन्यावी ज़िन्दगी का अच्छी तरह तसव्वुर कर लें और इसके ज़ाहिर व बातिन की माअ़रिफ़त हासिल कर लें और फिर वो दुनिया की फ़ानी ज़िन्दगी और हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत की ज़िन्दगी में तक़ाबुल और मुवाज़ना करें और इनमें जो बेहतर और तरजीह दिये जाने की मुस्तहिक़ हो उसे तरजीह दें।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इस दुन्यावी ज़िन्दगी की मिसाल उस बारिश की तरह है कि जब वो ज़मीन पर बरसती है तो ज़मीन हरी भरी हो जाती और उसमें हर क़िस्म की खेतियाँ और खुश मन्ज़र नबातात उग जाते हैं पस उस वक़्त उसकी खूबसूरती और आरास्तगी–

देखने वालो को बहुत अच्छी व खूबसूरत लगती है और लोग उससे फ़रहत हासिल करते हैं और ज़मीन का ये हुस्न ग़ाफ़िल लोगों को अपनी तरफ़ मुतावज्जै कर लेता है कुछ दिनों के बाद उनकी तरो ताज़गी व खूबसूरती और हरियाली ख़त्म हो जाती है और वो खुश्क़ टूटी फूटी घास फूस और भूसे के मानिन्द कूड़ा कचरा हो जातीं जिसे हवायें उड़ा ले जाती हैं।

दुनिया की ज़िन्दगी का भी यही हाल है कि दुनिया की ज़िन्दगी में मगन शख़्स को दुनिया की ज़ीनत बहुत अच्छी लगती है और वो ज़्यादा से ज़्यादा मालो दौलत हासिल करने में मशगूल रहता है और उसकी लज़्ज़त से खूब मज़ा उठाता है और वो हर वक़्त शहवत के समुन्दर में ग़ोताज़न रहता है और वो यही समझता है कि ये लज़्ज़तें व शहवतें कभी ज़ायल न होंगी कि अचानक मौत उसे आ लेती है और उसकी लज़्ज़तें उससे छीन ले जाती है और उसकी ताक़त और उसका माल सब उसका साथ छोड़ देते है और वो नेक या बुरे आअ़माल के साथ अकेला रह जाता है।

कुरान मजीद की इस आयत से मक़सूद ये है कि ऐ महबूब आप उन दुनिया परस्त और दुनिया की ज़िन्दगी को हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझने वालों को दुनिया की हक़ारत व उसकी हक़ीक़त और उसकी बे वफ़ाई और उसकी बेक़यामी और उसके ज़ाइल होने की मिसाल बयान फ़रमां दें।

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस्लाम लाया और फिर उसको बाक़दरे ज़रुरत रिज़्क दिया गया और उस को अल्लाह तआ़ाला ने जो कुछ दिया उसमें उसको कानेअ़ कर दिया तो वो शख़्स कामयाब हो गया।
(मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०–2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138)

यानी उसके पास इतना माल हो कि जिससे वो अपने खाने पीने और पहनने के कपड़ों और रिहायश का बन्दो बस्त कर सके और बीमारी की सूरत में दवा इलाज का इन्तिज़ाम कर सके और आराइश व ज़ैबाइश व ऐशो इशरत के लिये माल व मताअ़ जमाअ़ न करे क्योंकि जब इन्सान के पास ज़रुरत से ज़्यादा माल होता है तो वो उ़मूमन उस माल को नफ़्सानी ख़्वाहिशात और दुनिया की हराम व नाजाइज़ लज़्ज़तों के हुसूल के लिये ख़र्च करता है और मालदार आदमी अपने माल को बढ़ाने के लिये हराम व नाजाइज़ ज़राये इख़्तियार करता है और माल हासिल करने की हिर्स किसी हद पर ख़त्म नहीं होती तमाम दीनी व दुनियावी ख़राबियों की वजह माल व मताअ़ की हिर्स है अगर वो बा क़दरे ज़रुरत माल पर कनाअ़त व इख़्तिफ़ा करे तो वो तमाम ख़राबियों और गुनाहों से बच जायेगा।

ज़ालिम बदकार और दुनिया परस्त गुनाहगार

मुजरिम को मौत के बाद जब हक़ीक़त का इ़ल्म होगा तो वो तमन्ना करेगा कि काश उसे दुनिया में वापस भेजा जाये ताकि वो सिर्फ़ नेक आअ़माल करे और अल्लाह व रसूल की मुकम्मल ताअ़त में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करे और उस वक़्त उस पर यही हालत तारी होगी।

मुजरिमों का दुनिया में दोबारा आने की ख़्वाहिश करना

रोज़े क़यामत हर छोटी बड़ी चीज़ की निसबत सुवाल होगा और लोग अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सख़्तियों और तकलीफ़ व परेशानियों में मुब्तिला होंगे और बाअ़ज़ लोग उस वक़्त ये तमन्ना करेंगे कि हमारे आअ़माल अल्लाह के हुज़ूर पेश न हों और हमारे गुनाह और बुराईयाँ लोगों के सामने ज़ाहिर न हों ताकि हम ज़लील व नादिम और रुसवा होने से बच जायें और बाअ़ज़ लोग यूँ कहेंगे ऐ मेरे रब हमें दुनियाँ में वापस भेज दे ताकि हम अच्छे काम करें।

इरशादे बारी तअ़ाला है :-
अब ये (काफ़िर) उस आख़िरी अन्जाम के सिवा किस बात के मुन्तज़िर है जिस दिन वो आख़िरी अन्जाम सामने आ जायेगा तो जो लोग इससे क़ब्ल उसे भुला चुके थे वो कहेंगे बेशक हमारे रब के रसूल हक़ (बात) लेकर आये थे सो क्या-

(आज) हमारा कोई सिफ़ारशी है जो हमारे लिये सिफ़ारिश कर दे या हम (फिर दुनिया में) लौटा दिये जायें ताकि हम (इस मर्तबा) उन (आअ़्माल) से मुख़्तलिफ़ अ़मल करें जो (पहले) करते रहे थे बेशक उन्होंने अपने आप को नुक़सान पहुँचाया। (सू०-आअ़राफ़-7/53)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

और अगर आप देखें (तो उन पर तअ़ाज्जुब करें) कि जब मुजरिम लोग अपने रब के हुज़ूर सर झुकाये होंगे (और कहेंगे) ऐ हमारे रब हमने देख लिया और हमने सुन लिया पस अब हमें (दुनिया में) वापस लौटा दे ताकि हम नेक अ़मल कर लें बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं और अगर हम चाहते तो हम हर नफ़्स को हिदायत अ़ता कर देते लेकिन मेरी तरफ़ से ये फ़रमान साबित हो चुका है कि मैं ज़रुर सब (सरकश) इन्सानों और जिन्नों से दोज़ख़ को भर दूँगा पस अब तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने इस दिन की पेशी को भुला रखा था बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आअ़्माल के बदले जो तुम करते रहे (अब) दायमी अ़ज़ाब चखते रहो।
(सू०-सज्दा-32/12 ता 14)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखेंगे जब वो आग (के किनारे) पर खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे कि ऐ

काश हम (दुनिया में) पलटा दिये जायें तो (अब) हम अपने रब की आयतों को (कभी) नहीं झुठलायेंगे और ईमान वालों में से हो जायेंगे (इस इक़रार में कोई सच्चाई नहीं) बल्कि उन पर वो (सब कुछ) ज़ाहिर हो गया है जो वो पहले छुपाया करते थे और अगर वो (दुनिया में) लौटा (भी) दिये जायें तो (फिर) वही दोहराऐंगे जिससे वो रोके गये थे और बेशक वो (पक्के) झूठे हैं और वो (यही) कहते रहेंगे (जैसे उन्होंने पहले कहा था) कि हमारी इस दुन्यावी ज़िन्दगी के सिवा (और) कोई (ज़िन्दगी) नहीं और हम (मरने के बाद) उठाये नहीं जायेंगे और अगर आप (उन्हें उस वक़्त) देखें जब वो अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जायेंगे (फिर) रब तअ़ाला फ़रमायेगा क्या ये (ज़िन्दगी) हक़ नहीं है (तो) वो कहेंगे क्यों नहीं हमारे रब की क़सम (ये हक़ है फिर) अल्लाह तअ़ाला फ़रमायेगा पस अब तुम अ़ज़ाब का मज़ा चखो इस वजह से कि तुम कुफ़्र किया करते थे पस ऐसे लोग नुक़सान में रहेंगे जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठला दिया यहाँ तक कि जब उनके पास अचानक क़यामत आ पहुँचेगी तो वो कहेंगे हाय अफ़सोस हम पर जो हमने इस (क़यामत पर ईमान लाने) के बारे में (तकज़ीब) की और वो अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों के) बोझ लादे हुये होंगे सुन लो वो बहुत बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं।

(सू०–अनअ़ाम–6/27 ता 31)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और आप ज़ालिमों को देखेंगे कि जब वो अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे तो कहेंगे क्या (दुनिया में) पलट जाने का कोई रास्ता है और आप उन्हें देखेंगे कि वो दोज़ख़ पर ज़िल्लत व ख़ौफ़ के साथ सर झुकाये हुये पेश किये जायेंगे (और उसे चोरी चोरी) छुपी हुई निगाहों से देखते होंगे और ईमान वाले कहेंगे बेशक नुक़सान उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने अह्ल व अ़याल को क़यामत के दिन ख़सारे में डाल दिया याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे।
(सू०–शूरा–42/44-45)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और अगर ये ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़र'वी) अ़ज़ाब उनकी आँखों के सामने होगा (तो जान लेंगे) कि सारी कुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है (और) जब वो (पेशवायाने कुफ़्र) जिनकी पैरवी की गई अपने पैरोकारों से बेज़ार होंगे और (वो सब अल्लाह का) अ़ज़ाब देख लेंगे और सारे असबाब उनसे मुनक़ताअ़ हो जायेंगे और (ये बेज़ारी देखकर मुशरिक) पैरोकार कहेंगे काश हमें (दुनिया में जाने का) एक मौक़ा मिल जाये तो हम (भी) उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे इन्होंने (आज) हमसे बेज़ारी ज़ाहिर की है यूँ अल्लाह–

उन्हें उनके अपने आअ़्माल उन्हीं पर हसरत बनाकर दिखा देगा और वो (किसी भी सूरत) दोज़ख़ से निकलने न पायेंगे।
(सू०–बक़राह–2/165 ता 167)

इरशादे बारी तआ़ाला है :–
और आप लोगों को उस दिन से डरायें जब उन पर अ़ज़ाब आ पहुँचेगा तो वो लोग जो जुल्म करते रहे होंगे कहेंगे ऐ हमारे रब हमें थोड़ी देर के लिये मुहलत दे दे कि हम तेरी दाअ़वत को कुबूल कर लें और रसूलों की पैर‘वी कर लें (तो उनसे कहा जायेगा) कि क्या तुम्हीं लोग पहले क़समें नहीं खाते रहे कि तुम्हें कभी ज़वाल नहीं आयेगा और तुम (अपनी बारी पर) उन्हीं लोगों के (छोड़े हुये) महल्लात में रहते थे (जिन्होंने अपने अपने दौर में) अपनी जानों पर जुल्म किया था हालाँकि तुम पर अ़याँ हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या मुअ़ामला किया था और हमने तुम्हारे (फ़हम के) लिये मिसालें भी बयान की थीं और उन्होंने (दौलत व इक़्तिदार के नशे में बद–मस्त होकर) अपनी तरफ़ से बड़ी फ़रेब कारियाँ कीं जबकि अल्लाह के पास उनके हर फ़रेब का तोड़ था अगरचा उनकी मक्काराना तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी उखड़ जायें सो अल्लाह को हरगिज़ अपने रसूलों से वाअ़दा ख़िलाफ़ी करने वाला न समझना बेशक अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (सू०–इब्राहीम–14/44 ता 47)

या वो अ़ज़ाब देखते वक़्त कहने लगे कि अगर एक बार मेरा दुनिया में लौटना हो जाये तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँगा। (सू०–जुमर–39/58)

पस फ़र्ज़ करो कि तुम मर चुके हो और मौत एक यक़ीनी अम्र है तो दानों हालतों में से तुम कौन सी हालत को इख़्तियार करते हो इस दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत से धोका खाना और उस से इस तरह फ़ायदा उठाना जैसे चरागाह में मवेशी चरते हैं या ऐसी जन्नत के हुसूल की ख़ातिर अ़मल करना जिसकी नेअ़मतें दायमी, अब्दी हमेशा रहने वाली हैं और वहाँ वो सब कुछ होगा जो तुम्हारा दिल चाहेगा और आँखें लज़्ज़त हासिल करेंगी।

मैदाने हश्र में बदकारों के अहवाल

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर उस दिन गर्द पड़ी होगी (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छायी होगी यही लोग काफ़िर (और) फ़ाजिर (बद किरदार) होंगे। (सू०–अबस–80/40 ता 42)

जिस दिन कई चेहरे सफ़ेद होंगे और कई चेहरे सियाह होंगे तो जिनके चेहरे सियाह हो जायेंगे (उनसे कहा जायेगा) कि तुमने ईमान लाने के बाअ़द कुफ़्र किया तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो आज उसके अ़ज़ाब (का मज़ा) चख्खो। (सू०–आले इमरान–3/106)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
और कितने ही चेहरे उस दिन बिगड़ी हुई हालत में (मायूस और सियाह) होंगे ये गुमान करते होंगे कि उनके साथ ऐसी सख़्ती की जायेगी जो उनकी कमर तोड़ देगी। (सू०-क़ियामाह-75/24,25)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
उस दिन कितने ही चेहरे ज़लील व ख़्वार होंगे (अल्लाह को भूलकर दुनियावी) मेहनत करने वाले (चन्द रोज़ा ऐश व आराम के ख़ातिर सख़्त) मशक़्क़तें उठाने वाले दहकती हुई आग में जा गिरेंगे उन्हें खौलते हुये चश्मे से पानी पिलाया जायेगा उनके लिये ख़ारदार खुश्क ज़हरीली झाड़ियों के सिवा कोई खाना न होगा (ये खाना) न उन्हें फ़रबा करेगा और न ही भूक मिटायेगा। (सू०-ग़ाशिया-88/2 ता 7)

इरशादे बारी तआ़ला है :-
यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश करके रेज़ा रेज़ा कर दी जायेगी और आपका रब जलवा फ़रमां होगा और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके हुज़ूर) हाज़िर होंगे और उस दिन दोज़ख़ पेश की जायेगी उस दिन इन्सान को समझ आ जायेगी मगर अब उसे नसीहत कहाँ (फ़ायदामंद) होगी वो कहेगा ऐ काश मैंने अपनी (इस असल) ज़िन्दगी के लिये (कुछ) आगे भेज दिया होता (जो आज मेरे काम आता) सो उस दिन उसके अ़ज़ाब की तरह कोई-

अ़ज़ाब न दे सकेगा। (सू०–फ़ज्र–89/21 ता 26)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखें है और वो (अ़ज़ाब) उन पर वाक़ेअ़ होकर रहेगा। (सू०–शूरा–42/22)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

बल्कि उनका (असल) वाअ़दा तो क़यामत है और क़यामत की घड़ी बहुत ही सख़्त और बहुत ही तल्ख़ है बेशक मुजरिम लोग गुमराही व दीवानगी (या आग की लपेट) में हैं जिस दिन वो लोग अपने मुँह के बल दोज़ख़ में घसीटे जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) आग में जलने का मज़ा चखो (सू०–क़मर–54/46 ता 48)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

और आप क़यामत के दिन उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला है देखेंगे कि उनके चेहरे सियाह होंगे क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है। (सू०–ज़ुमर–39/60)

इरशादे बारी तआ़ला है :–

तुम में से बाअ़ज़ बाअ़ज़ के दुश्मन होंगे फिर जब मेरी जानिब से तुम्हारे पास कोई हिदायत (वही) आ जाये सो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैर'वी करेगा तो वो न (दुनिया में) गुमराह होगा

और न (आख़िरत में वो) बद नसीब होगा और जिसने मेरे ज़िक्र (यानी मेरी याद और नसीहत) से मुँह फेरा तो उसके लिये दुनियावी मआ़श तंग कर दिया जायेगा और हम उसे क़यामत के दिन अन्धा उठायेंगे तो वो कहेगा ऐ मेरे रब तूने मुझे (आज) अन्धा क्यों उठाया हालाँकि मैं (दुनिया में) बीना था इरशाद होगा ऐसा (इसलिये हुआ कि दुनिया में) तेरे पास हमारी निशानियाँ आयीं पस तूने उन्हें भुला दिया और आज इसी तरह तू (भी) भुला दिया जायेगा और इसी तरह हम उस शख़्स को बदला देते हैं जो (गुनाहों में) हद से निकल जाये और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाये और बेशक आख़िरत का अ़ज़ाब बड़ा ही सख़्त और हमेशा रहने वाला है।
(सू०–ताहा–20/123 ता 127)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
दुनिया में (चन्द रोज़) लुत्फ़ अंदोज़ी के है फिर उन्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है फिर हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखायेंगे उसके बदले में जो वो कुफ़्र किया करते थे। (सू०–यूनुस–10/70)

इरशादे बारी तआ़ला है :–
यही वो लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले में दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद ली है पस न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जायेगा और न ही उनकी मदद दी जायेगी। (सू०–बक़राह–2/86)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

हम उन्हें (दुनिया में) थोड़ा सा फ़ायदा पहुँचायेंगे फिर हम उन्हें बेबस करके फिर सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ ले जायेंगे। (सू०-लुक़मान-31/24)

इरशादे बारी तआ़ला है :-

उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी बर्बादी होगी (अब) तुम उस (अ़ज़ाब) की तरफ़ चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे (अब) तुम (दोज़ख़ के धुँऐं पर मबनी) उस साये की तरफ़ चलो जिसके तीन हिस्से हैं जो न तो ठन्डा साया है और न ही आग की तपिश से बचाने वाला है बेशक वो (जहन्नम) ऊँचे महल की तरह (बड़े-बड़े) शोअ़ले और चिंगारियाँ उड़ाती है (यूँ भी लगता है) गोया वो (चिंगारियाँ) ज़र्द रंग वाले ऊँट हैं उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये ऐसा दिन है कि वो (उसमें) बोल भी न सकेंगे और न ही उन्हें इजाज़त दी जायेगी कि वो माअ़ज़रत कर सकें उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है ये फ़ैसले का दिन है (जिसमें) हम तुम्हें और सब पहले के लोगों को जमाअ़ करेंगे फिर अगर तुम्हारे पास (अ़ज़ाब से बचने का) कोई हीला है तो वो हीला मुझ पर चलाओ उस दिन झुठलाने वालों के लिये बड़ी तबाही है।
(सू०-मुरसलात-77/28 ता 40)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

और बेशक जो लोग अल्लाह के अ़हद और अपनी

क़समों का थोड़ी सी क़ीमत के ऐवज़ सौदा कर देते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा और न ही क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला उनसे कलाम फ़रमायेगा और न उनकी तरफ़ निगाह करेगा और न उन्हें पाकीज़गी देगा और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब होगा।
(सू०-आले इमरान-3/77)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाये फिर वो उनसे मुँह फेर ले बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।
(सू०-सज्दा-32/22)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
मुजरिम लोग अपने चेहरों की सियाही से पहचान लिये जायेंगे पस उन्हें पेशानी के बालों और पैरों से पकड़कर खींचा जायेगा। (सू०-रहमान-55/48)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जिस दिन ज़ालिमों को उन की माअ़ज़रत फ़ायदा न देगी और उनके लिये फटकार होगी और उनके लिये (दोज़ख़ का) बुरा घर होगा।
(सू०-मोमिन/ग़ाफिर-40/52)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और उस दिन आप उन मुजरिमों को ज़ंजीरों में-

जकड़ा हुआ देखेंगे उनके लिबास गन्धक (या ऐसे रोग़न) के होंगे (जो आग को खूब भड़काता है) और उनके चेहरों को आग ढ़ाँप रही होगी ताकि अल्लाह तअ़ाला हर शख़्स को उसके आअ़माल का बदला दे दे जो उसने कमा रखे हैं बेशक अल्लाह हिसाब में जल्दी फ़रमाने वाला है।
(सू०–इब्राहीम–14/49 ता 51)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

और बहुत से चेहरे उस दिन ऐसे होंगे जिन पर गर्द पड़ी होगी (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छाई होगी और यही लोग काफ़िर व फ़ाजिर (बद किरदार) होंगे। (सू०–अबस–80/40 ता 42)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

(और उस दिन) कई चेहरे सियाह होंगे तो जिनके चेहरे सियाह हो जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) क्या तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया तो जो कुफ़्र तुम करते रहे थे सो आज उसके अ़ज़ाब (का मज़ा) चख लो।
(सू०–आले इमरान–3/106)

इरशादे बारी तअ़ाला है :–

उस दिन कितने ही चेहरे ज़लील व ख़्वार होंगे मुसीबत झेलते हुये थकन से चूर होंगे वो धहकती हुई आग में जा गिरेंगे उन्हें खौलते हुये चश्मे से पानी पिलाया जायेगा उनके लिये ख़ारदार खुश्क ज़हरीली झाड़ियों के सिवा कोई खाना न होगा और

(ये खाना) न उन्हें सेर करेगा और न ही भूक मिटायेगा। (सू०–ग़ाशिया–88/2 ता 7)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में ना हक़ सरकशी व फ़साद फैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०–शूरा–42/42)

दुनिया की हुकूमत रोज़े क़यामत नदामत होगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग हुकूमत मिल जाने की तमन्ना करते हो हालाँकि क़यामत के दिन हुकूमत का मिल जाना हसरत व नदामत होगी। (नसाई–सुनन–3/574-ह०–5391)

दुनिया में सेर होकर खाने वाले रोज़े क़यामत भूके रहेंगे

➡हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास एक आदमी ने डकार ली तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपनी डकार को रोको क्योंकि दुनिया

में ज़्यादा सेर होकर खाने वाले क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा भूके रहेंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/159-ह०–2578,369)

रोज़े हश्र मालदार व ग़रीब की आरज़ू

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कोई मालदार व मुहताज ऐसा नहीं जो रोज़े क़यामत ये आरज़ू न करे कि अल्लाह तआ़ला उसको दुनिया में उसकी हाजत के मुताबिक़ रिज़्क़ देता और मालदार कहेंगे अल्लाह तआ़ला दुनिया में बहुत मालदार न करता और वो ऐसा इसलिये कहेंगे क्योंकि वो अल्लाह की तरफ़ से मिलने वाले फुक़रा के मरातिब आ़लिया को देखेंगे। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4140)

–: आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया की ज़िन्दगी एक सुबह या एक शाम :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
जिस दिन सूर फूँका जायेगा और उस दिन हम मुजरिमों को यूँ जमाअ़ करेंगे कि उनके जिस्म और आँखें (शिद्दते ख़ौफ़ व अन्धेपन के बाइस) नीली होंगी वो आपस में चुपके चुपके बातें करते होंगे कि हम दुनिया में मुश्किल से दस दिन ही ठहरे होंगे हालांकि हम खूब जानते हैं वो जो कुछ

भी वो कह रहे होंगे जबकि उनमें से एक अ़क्ल व अ़मल में बेहतरीन शख़्स कहेगा कि तुम तो एक दिन के सिवा (दुनिया में) ठहरे ही नहीं।
(सू०–ताहा–20/102 ता 104)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जिस दिन वो उन्हें जमाअ़ करेगा (तो वो महसूस करेंगे कि) गोया वो दिन की एक घड़ी के सिवा दुनिया में ठहरे ही न थे वो एक दूसरे को पहचानेंगे बेशक वो लोग ख़सारे में रहे जिन्होंने अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात को झुठलाया था और वो हिदायत याफ़्ता न हुये।
(सू०–यूनुस–10/45)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
इरशाद होगा कि तुम दुनिया में कितनी मुद्दत ठहरे रहे (हो) वो कहेंगे हम एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा ठहरे (होंगे) आप ताअ़दाद शुमार करने वालों से पूछ लें इरशाद होगा तुम (वहाँ) नहीं ठहरे मगर बहुत ही थोड़ा अ़रसा काश कि तुम (ये बात वहीं) जानते होते।
(सू०–मुमिनून–23/112 ता 114)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वो जिस दिन उसे देख लेंगे तो (ये ख़्याल करेंगे कि) वो (दुनिया में) एक शाम या उसकी सुबह के सिवा ठहरे ही न थे (सू०–नाज़िआ़त–79/46)

काफ़िरों के लिये दुनियावी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
काफ़िरों के लिये दुनिया की ज़िन्दगी खूब आरास्ता कर दी गई है और वो ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते हैं हालांकि जिन्होंने तक़्वा इख़्तियार किया वो क़यामत के दिन उन (काफ़िरों) से बहुत बुलन्द मक़ाम पर होंगे और अल्लाह जिसे चाहता है बे-हिसाब नवाज़ता है। (सू०-बक़राह-2/212)

सो आपको न तो उनके अमवाल तआ़ज्जुब में डालें और न ही उनकी औलाद बस अल्लाह तो यही चाहता है कि उन्हें (इन्हीं) चीज़ों की वजह से दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे और उनकी जाने इस हालत में निकलें कि वो काफ़िर हों।
(सू०-तौबा-9/55)

दुनिया की ज़िन्दगी वो है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो और जो तोशा आख़िरत जमाअ़ करने में सर्फ़ हो वो दीनी ज़िन्दगी है और काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों की मालदारी और उनकी औलाद को देखकर तआ़ज्जुब और हैरत करना हिमाकत है और ये सोचना कि अल्लाह तआ़ला ने नाफ़रमानों व कुफ़्फ़ारों को दुनिया में कसीर नेअ़मतें और माल क्यों दिया तो इसकी एक वजह ये है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला कुफ़्फ़ारों को

उनकी नेकियों का बदला दुनिया में ही दे देता है-

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

जो लोग (फ़क़त) दुन्यावी ज़िन्दगी व उसकी ज़ीनत (व अराइश) के तालिब हैं तो हम उनके आअ़माल का पूरा पूरा बदला इसी दुनिया में ही दे देते हैं और उन्हें इस (दुनिया के सिले) में कोई कमी नहीं की जाती (और) ये वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कुछ (हिस्सा) नहीं सिवाये आतिशे दोज़ख़ के और वो सब (आअ़माल अपने उख़र'वी अज्र के हिसाब से) अकारत हो गये जो उन्होंने दुनिया में अन्जाम दिये थे और वो (सब कुछ) बातिल और बेकार हो गये जो वो (अ़मल) किया करते थे। (सू०-हूद-11/15,16)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई काफ़िर कोई नेक अ़मल करता है तो उसे उस नेक अ़मल का बदला दुनिया में ही मिल जाता है हत्ता कि जब वो आख़िरत में पहुँचेगा तो उसके पास कोई नेक अ़मल नहीं होगा जिसका अज्र उसे दिया जाये और मोमिन की नेकियों का बदला अल्लाह तआ़ाला आख़िरत के लिये रख छोड़ता है और दुनिया में भी उसको अ़ता फ़रमाता है।
(मुस्लिम-सहीह-6/366-ह०-7089)

दूसरी वजह ये है अल्लाह तआ़ाला काफ़िरों को

वक़्त मुअ़य्यन तक मुहलत व ढील देता है ताकि वो और गुनाहों में ज़्यादा बढ़ जायें और उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है-

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और काफ़िर ये गुमान हरगिज़ न करें कि हम जो उन्हें मुहलत दे रहे है ये उनकी जानों के लिये बेहतर है हम तो ये मुहलत उन्हें इसलिये दे रहे हैं कि वो गुनाह में और बढ़ जाये और उनके लिये बिल आख़िर ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।
(सू०-आले इमरान-3/178)

➡हज़रत उ़क्बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआ़ला बन्दों को उनकी नाफ़रमानी के बाबुजूद उनकी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ अ़ता कर रहा है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ये उनको ढील है (मुस्नद अहमद-6/122-ह०-17313)

और तीसरी वजह ये है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब देता है कि ज़्यादा माल की हिर्स व तलब के सबब उनकी राहत व आराम उनसे छीन लेता है वो माल को मेहनत से जमाअ़ करें और मशक़्क़त से उसकी हिफ़ाज़त करें और हसरत छोड़ कर मरें और जब ये मरेंगे तो इनकी रुह कुफ़्र की हालत में निकलेगी और वो दोज़ख में ज़लील व ख़्वार होंगे और माल व

औलाद की वजह से मेहनत व मशक़्क़त और तकलीफ़ व रंजो ग़म कुफ़्फ़ारों के लिये दुनिया में अ़ज़ाब है और इन्हीं चीज़ों पर मुसलमान अगर सब्र करे तो उसके लिये अज्रो सवाब है और काफ़िरों पर दुनिया में जो मसाइब आते हैं उन मसाइब पर उनको आख़िरत मे कोई अज्र नहीं मिलेगा क्योंकि ये मसाइब उनके लिये अ़ज़ाब हैं।

मुसलमानों को काफ़िरों के माली व अफ़रादी कुव्वत पर तअ़ाज्जुब नहीं करना चाहिये और न ही काफ़िरों की तरह दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और माल की हवस को अपने दिल में जगह देना चााहिये और हमें चाहिये कि हम ज़रा सोचे और ग़ौर करें कि अगर हमारे दुन्यावी मुअ़ामलात और माल की हवस और आख़िरत से ग़फ़लत कुफ़्फ़ारों की मिस्ल हो जाये तो हम मुसलमानों में और उन कुफ़्फ़ारों में क्या फ़र्क़ रह जायेगा।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

(ऐ बन्दे) काफ़िरों का शहरों में (ऐशो इशरत के साथ) घूमना फिरना तुझे धोके में न डाल दे थोड़ी सी (चन्द दिनों की) मताअ़ है फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वो बुहत ही बुरा ठिकाना है। (सू०-आले इमरान-3/196,197)

और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो कि जिसमें अल्लाह तअ़ाला ने तुममें से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी है। (सू०-निसा-4/32)

जो माल व औलाद अल्लाह तअ़ाला की याद से ग़ाफ़िल करे वो बहुत बड़ी आफ़त और वबाल है इससे उन लोगों को नसीहत हासिल करनी चाहिये जो अपने माल की कसरत और औलाद की वजह से अल्लाह तअ़ाला के ज़िक्र व उसकी इबादत व इताअ़त से ग़ाफ़िल हैं।

दुनिया की ज़िन्दगी उनकी आँखों के सामने खुशनुमा बना दी जाती है जो दुनिया के तालिब और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल होते हैं तो रब तअ़ाला उनके सामने दुन्यावी ज़िन्दगी को मुज़य्यन और आरास्ता कर देता है पस वो उस दुनिया में मगन और मुतमइन हो जाते हैं और फिर उनकी ख़्वाहिश और उनके आअ़माल सब कुछ दुनिया के लिये ही होते हैं और माल व मताअ़ के हुसूल में मशगूल रहते हैं ये उनकी कम अ़क्ली और कम नज़री की दलील है क्योंकि ये दुनिया आज़माइश का घर है और ये फ़ना होने वाली शैः है और इसमें रहने वाला मुसाफ़िर है और उसका अस्ल घर और उसकी हक़ीक़ी मन्ज़िल आख़िरत है।

ग़फ़लत के चार दरजे हैं पहला दरजा ये है कि इन्सान गुनाह करके नादिम हो और आइन्दा गुनाह न करने का क़सद करे और दूसरा दर्जा ये है कि इन्सान गुनाह भी करे और नादिम भी न हो और तीसरा दर्जा ये है कि इन्सान गुनाह करे और उस पर खुश हो कि मैंने बहुत अच्छा काम किया है और ये ला इलाज बीमारी है और चौथा

दर्जा ये है कि इन्सान अपने गुनाह पर ख़ुश हो और गुनाहों से बचने वालो को हक़ीर व ज़लील जाने ये दर्जा भी ला इलाज व कुफ़्र की अ़लामत है और सबसे बेहतर मोमिन वो है जो दुनिया में तो रहता है लेकिन दुनिया उसमें नहीं रहती और दुनिया जिसके दिल में उतर जाये वो ग़ाफ़िल है।

नेक मोमिन और ग़ाफ़िल मुसलमान और काफ़िर की ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे कि समुन्दर में मोती भी है और पानी के बुलबुले भी और मछलियाँ भी हैं और जो मोती जब समुन्दर से निकलता है तो शाही ताज में पहुँचता है और मछली पानी से निकलते ही मर जाती है और बुलबुले की ज़िन्दगी ऐ़न पानी है तो नेक मोमिन की ज़िन्दगी पानी के मोती की तरह है कि जब वो दुनिया से कूच करेगा तो हमेशाा बाक़ी रहने वाली नेअ़मतों में होगा और ग़ाफ़िल मुसलमान मछली की तरह है कि जब वो मरेगा तो ग़फ़लत की नींद से बेदार होगा और अपने अन्जाम को देख लेगा और काफ़िर की ज़िन्दगी फ़क़त पानी के बुलबुले की तरह है कि सिर्फ़ उसकी ऐश व इशरत दुनिया तक ही महदूद है और जब वो मरेगा तो उस पर शदीद अ़ज़ाब होगा और बिल आख़िर वो नारे दोज़ख़ में दाख़िल किया जायेगा जिसमें वो हमेशा रहेगा।

अल्लाह तआ़ाला गुमराहों को ऐशो इशरत में ढील देता है

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
जो शख़्स गुमराही में मुब्तिला हो तो अल्लाह उसे उ़म्र व ऐश (व इशरत) में खूब ढील (मुहलत) देता रहता है यहाँ तक कि जब वो लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वाअ़दा किया गया है ख़्वाह वो अ़ज़ाबे इलाही हो या ख़्वाह वो क़यामत हो तब वो उस शख़्स को जान लेंगे जो रिहायश गाह के एतबार से बुरा है और लश्कर के एतबार से भी कमज़ोर तर है और अल्लाह तआ़ाला हिदायत याफ़्ता लोगों की हिदायत में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है और बाक़ी रहने वाले नेक आअ़माल आपके रब के नज़दीक अन्जाम व अज्रो सवाब के एतबार से बेहतर है।
(सू०–मरयम–19/75,76)

जो शख़्स गुमराही में मुस्तग़रक हो जाये और अपनी गुमराही पर खुश व राज़ी हो तो अल्लाह तआ़ाला उसकी गुमराही में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है और उसकी गुमराही को और ज़्यादा बढ़ाने के लिये उसकी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात और उसकी ऐशो इशरत में मज़ीद इज़ाफ़ा करता रहता है और उसको वक़्त मुअ़य्यन तक ढ़ील देता है ये सब उसके लिये बतौर सज़ा होती है क्योंकि उसने हिदायत को छोड़कर गुमराही को इख़्तियार किया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करे इसके बाद कि उस पर हिदायत की राह वाज़ेह हो चुकी थी और वो मुसलमानों की राह से जुदा राह की पैर‘वी करे तो हम उसे उसी (गुमराही) की तरफ़ फेरे रखेंगे जिधर वो (खुद) फिर गया है और बिल आख़िर हम उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है।
(सू०-निसा-4/115)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफ़िर लोग ईमान वालों से कहते हैं (कि इस दुनिया में ही देख लो कि हम) दोनों गिरोहों यानी मुसलमान और काफ़िर में से किस की रिहायश गाह बेहतर है और मजलिस खूब तर है और हमने इनसे पहले कितनी क़ौमो को हलाक कर डाला जो साज़ों समाने ज़िन्दगी के लिहाज़ से (इनसे भी) कहीं बेहतर थे।
(सू०-मरयम-19/73,74)

जब गुमराह लोग देखेंगे जिनका उनसे वाअ़दा किया गया कि दोनो फ़रीक़ो में से कौन बेहतर है और कौन बद तर है तो अ़नक़रीब वो जान लेंगे कि मक़ाम के लिहाज़ से कौन बद तर है और कौन बेहतर है और जमाअ़त के ऐतबार से भी वो जान लेंगे कि कौन ज़्यादा कमज़ोर तर है और उन्हें उस वक़्त हक़ीक़त माअ़लूम हो जायेगी और

यक़ीन हो जायेगा कि वाक़ई वो बदकार लोग थे

कुफ़्फ़ारों ने अहले ईमान से सुवाल किया कि हम तुमसे यानी मोमिनों से अपने मक़ाम व मर्तबे और दरजा-ए-शानो शौक़त व इज़्ज़त और मालो दौलत में बेहतर हैं और हम कुरानो हदीस और दीन व शरीअ़त को नहीं मानते और तुम और तुम्हारे साथी और तुम्हारे नबी जो अल्लाह के महबूब होने का दाअ़वा करते हैं तो ज़रा बताओ मजलिस व जमाअ़त और कुव्वत व ताक़त और ऐ़शो इशरत और मालो दौलत के एतबार से कौन बेहतर है

ऐ मुसलमानों क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं करते कि हम इज़्ज़त व दौलत वाले हैं और तुम गुरबत वाले हो और हम कसरत वाले हैं और तुम क़िल्लत वाले हो और हम ऐ़श व आराम वाले हैं और तुम तंग दस्ती व परेशानी वाले हो क्या तुम इस हालत व कैफ़ियत से अंदाज़ा नहीं लगाते हो कि हम सच्चे हैं और तुम झूठे हो और हम हक़ पर है और तुम बातिल पर हो लेकिन कुफ़्फ़ार जब पुलसिरात पर पहुँचेगे तो वो अपने दर्दनाक और बुरे अन्जाम को जान लेगे और जब नेक मोमिन पुलसिरात से गुज़रेंगे तो उस वक़्त वो नूर के गिलाफ़ों में होंगे और दोज़ख़ उनसे कहेगी ऐ मोमिन तुम जल्दी से गुज़र जाओ क्योंकि तेरे नूर ने मेरी तपिस को कम कर दिया है पुलसिरात पूरे जहन्नम के लम्बाई पर क़ायम है और उस-

पर से हर शख़्स को गुज़रना है जब कुफ़्फ़ार इस पुलसिरात से गुज़रेंगे तो वो दोज़ख़ को देखेंगे तो जान लेगे कि हमारा ठिकाना यही दोज़ख़ है और हमें हमेशा इसी दोज़ख़ में रहना है और तमाम कुफ़्फ़ार नारे दोज़ख़ में घुटनों के बल गिरा दिये जायेंगें।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(क़यामत के दिन) हम ज़रुर जमाअ़ करेंगे फिर हम उन सब को जहन्नम के गिर्द ज़रुर हाज़िर करेंगे इस तरह कि वो घुटनों के बल गिरे पड़े होंगे फिर हम हर गिरोह में से ऐसे शख़्स को ज़रुर चुनकर निकाल लेंगे जो उनमें से (खुदाये) रहमान का सबसे ज़्यादा नाफ़रमान व सरकश था फिर हम उन लोगों को खूब जानते है जो दोज़ख़ में झोंके जाने के ज़्यादा सज़ावार हैं और तुममें से हर एक शख़्स का उस दोज़ख़ के ऊपर से गुज़र होने वाला है ये (वाअ़दा) क़तई तौर पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को घुटनों के बल उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे।
(सू०-मरयम-19/68 ता 72)

नाफ़रामानों व सरकशों को अल्लाह तआ़ला ने दुनियां में ज़्यादा ढील दी है क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी फ़ानी और मुतनाही है और आख़िर ये ज़िन्दगी तो एक दिन ख़त्म हो जायेगी फिर पहले उन्हें मौत की सख़्तियों से दो चार होना पड़ेगा-

फिर अ़ज़ाबे क़ब्र और फिर अ़ज़ाबे हश्र और बिल आख़िर उनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब दिया जायेगा तो फिर दुनिया की ज़िन्दगी की नेअ़मतों पर फ़ख़्र व खुशी कोई माअ़ने नहीं रखती दुनिया में नाफ़रमानों और सरकशो को जो नफ़ा हासिल है वो अ़ारज़ी है और मोमिनों की तंगदस्ती पर सब्र करने वालों व नेक आअ़माल करने वालों का अज्रो सवाब दायमी है

नेक लोगों को अल्लाह तअ़ाला उनके आअ़माले सालिहा और इताअ़ते इलाही व इताअ़ते रसूल और इख़लास के सबब हिदायत में मज़ीद इज़ाफा फ़रमाता है और उसके माअ़रिफ़त के दरजात को बुलन्द किया जाता है पहले उसे एक दर्जे का कुर्ब अ़ता किया जाता है फिर दूसरे दर्जे का और ये सिलसिला यूँही चलता रहता है अल्लाह तअ़ाला उनके ईमान में मज़ीद तक़वीयत और ईमान के दरजात बुलन्द फ़रमाता है उनके इ़ल्म व अ़मले सालेह के रास्ते में मज़ीद आसानी फ़रमाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

ताकि जो लोग ईमान लाये उनके ईमान में इज़ाफ़ा हो। (सू०–मुदस्सिर–74/31)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

जब उनके सामने अल्लाह की आयत तिलावत की जाती है तो उनका ईमान बढ़ जाता।
(सू०–अनफ़ाल–8/2)

गुमराह व सरकश और नाफ़रमान अपने माल व औलाद और अपने मक़ाम और दुनियावी अहवाल को अपने हुस्ने हाल की अ़लामत समझते हैं मगर ऐसा नहीं है बल्कि मुआ़मला इसके बरअ़क्स है कि नेक आअ़माल जिससे आख़िरत में सआ़दत का मक़ाम हासिल हो और अहकामे शरीअ़त की ताअ़मील जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी का सबब बने बन्दे के लिये इसमें ख़ैर व भलाई है और निजात का ज़रिया है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या वो लोग ये गुमान करते है कि दुनिया में हम जो भी उनके माल व औलाद में इज़ाफ़ा करके हम उनकी मदद कर रहे हैं और क्या हम उनके लिये भलाइयों इज़ाफ़ा कर रहे हैं (ऐसा नहीं है) बल्कि उन्हें अस्ल हक़ीक़त का शऊ़र ही नहीं है। (सू०-मु-मिनून-23/55,56)

गुमराहों के पास माल व मताअ़ और औलाद की कसरत अल्लाह तआ़ला की रहमत व उसके राज़ी होने की दलील नहीं बल्कि ये रब तआ़ला की तरफ़ से उन्हें ढील है ताकि वो अपने गुनाहों में और इज़ाफ़ा करें और अपनी आख़िरत के अ़ज़ाब को और ज़्यादा कर लें इमाम राज़ी ने ये रिवायत ज़िक्र की है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबीयों में से किसी नबी की तरफ़ ये वही की कि मेरा बन्दा उस पर खुश होता है कि जब मैं उस पर दुनिया कुशादा कर देता हूँ हालांकि वो मुझसे

बहुत दूर होता जाता है और मेरा वो बन्दा जो अफ़सोस करता है कि जब मैं उससे दुनिया उठा लेता हूँ हालाकि वो मेरे क़रीब होता जाता है।

दुनिया परस्तों की ऐशो आराम उनके लिये मुसीबत व आफ़त है और बुरे अन्जाम का बाइस है क्योंकि दुनियावी चीज़ें निहायत हक़ीर व ज़लील हैं और इन्सान माल व औलाद की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाता है फिर वो दिन रात जाइज़ व नाजाइज़ तरीक़े से मालो दौलत जमाअ़ करने में लगा रहता है और जैसे जैसे उसके दिल में माल की मुहब्बत बढ़ती जाती उसके दिल से आख़िरत और यादे इलाही से ग़फ़लत भी बढ़ती जाती है।

दुनिया की सारी नेअ़मतें आफ़तों व तकलीफ़ों और हसरतों से घिरी हुई हैं व इनके साथ बड़ी आज़माइशें और मुसीबतें भी है और दुनियावी चीज़ों पर हिसाब व इ़ताब (ग़ज़ब) सख़्त है तो ऐसी आ़रज़ी चीज़ें जो इतनी आफ़त का बाइस हों वो दिल लगाने के क़ाबिल कैसे हो सकती है।

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) चारपाई पर आराम फ़रमां रहे थे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) आये तो उन्होंने देखा कि चारपाई के निशानात आपके पहलू में नक़्श हो गये हैं हज़रत अबू बक्र

सिद्दीक़ और हजरत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा या रसूलल्लाह आपकी चारपाई और बिस्तर की सख़्ती से आपको किस क़दर तक़लीफ़ पहुँचती है और क़ैसर व किस्रा रेशम व दीबाज के बिस्तरों पर सोते है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐसा न कहो क़ैसर व किस्रा के बिस्तर दोज़ख़ में है और मेरा ये बिस्तर व मेरी चारपाई का अन्जाम जन्नत है।
(इब्ने हिब्बान सहीह–1/756-ह०–704)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक चटाई पर लेटे हुये थे आपके और चटाई के दरमियान कोई चीज़ न थी और आपके सर मुबारक के नीचे एक चमड़े का तकिया था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी तो मैंने देखा कि चटाई के निशानात आपके पहलू में गड़ गये हैं मैं रोने लगा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम किस वजह से रो रहे हो मैंने अ़र्ज़ किया बेशक क़ैसर व किस्रा किस क़दर ऐशो आराम में हैं और आप अल्लाह के रसूल है फिर आप ने फ़रमाया क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि उनके लिये दुनिया हो और हमारे लिये आख़िरत हो (बुख़ारी–4/836-ह०-4913)
(मुस्लिम–सहीह–3/163-ह०–3691)
(इब्ने माजा–सुनन–3/360-ह०–4153)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–5/225-ह०–4188)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/178-ह०–1449)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि अन्सार की एक औ़रत ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये एक गद्दा भेजा जिसमें ऊन भरा हुआ था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे पूछा ऐ आयशा ये क्या है तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुलां अन्सारी औ़रत आप के आराम के लिये ये गद्दा दे गई है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा इसको वापस कर दो खुदा की क़सम मैं चाहूँ तो अल्लाह तआ़ला मेरे साथ सोने और चाँदी के पहाड़ों को र'वाना कर दे।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/183-ह०–1468)

जिस शख़्स की चाहत व ख़्वाहिश दुनिया की ज़िन्दगी व उसकी रौनक़ और उसकी ज़ैबो ज़ीनत के गिर्द घूमती हो मसलन खूबसूरत औ़रत और बेटों के हुसूल की ख़्वाहिश और सोने चाँदी के ख़ज़ानों की तलब और माल व जायदाद की हिर्स और रग़बत और इन्हीं के हुसूल के लिये कोशिश व अ़मल हों और वो उख़र'वी आअ़ला नेअ़मतों से बेरग़बत और अपने बुरे अन्जाम से बेफ़िक्र हो तो वो मोमिन नहीं हो सकता बल्कि वो काफ़िर या मुनाफ़िक़ है और यही वो लोग हैं जिनके लिये सिर्फ़ दोज़ख़ है और दुनिया में इनका अमीर होना इनकी आख़िरत की बद नसीबी है और निहायत ही दर्दनाक बुरे अन्जाम की अ़लामत है।

कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद दुनियावी नेअ़मतें मिलना अल्लाह की ढील है

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और शैतान ने उनके लिये वो (गुनाह) आरास्ता करके दिखाये थे जो वो किया करते थे फिर जब उन्होंने उन नसीहतों को भुला दिया जो उनसे की गई थीं तो हमने उन पर हर चीज़ के दर‘वाज़े खोल दिये यहाँ तक कि जब वो उन चीज़ों (की लज़्ज़तों व राहतों) से खूब खुश हुये जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उन्हें (अ़ज़ाब के लिये) पकड़ लिया तो उस वक़्त वो मायूस होकर रह गये। । (सू०–अनअ़ाम–6/43-44)

कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद दुनियावी नेअ़मतें व राहतें और ऐशो इशरत का मिलना दर अस्ल अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से ढील होती है जिसे बाअ़ज़ लोग कम इल्मी के सबब अल्लाह तअ़ाला की रहमत तसव्वुर करते हैं ताकि इन्सान और ज़्यादा ग़ाफ़िल होकर मज़ीद गुनाहों का मुरतकिब हो जाये बाअ़ज़ औक़ात वो ये ख़्याल करता है कि जो कुछ मैं कर रहा वो सहीह व दुरस्त कर रहा हूँ वरना मुझे ये नेअ़मतें व राहतें न मिलतीं और इसके अ़लावा शैतान गुनाहों को इन्सान के लिये आरास्ता करके दिखाता तो इन्सान उसे अच्छा व लज़्ज़त आमेज़ समझता है और इस तरह से वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है।

बाअ़ज़ लोग सरकशों व नाफ़रमानों की माली तरक़्क़ी देखकर मायूस हो जाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला उन्हें खूब अ़ता कर रहा है और हमें नहीं दे रहा है बल्कि लोगों से शिकवा शिकायत करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिये दिलों में बदगुमानी पैदा करते हैं तो उन्हें इससे सबक़ व इ़बरत हासिल करना चाहिये कि ये सब अल्लाह तआ़ला की हिकमत के तहत होता है कि अल्लाह तआ़ला नाफ़रमानों के लिये ऐशो इशरत व दुनिया की लज़्ज़तों व मालो मताअ़ और उसकी ग़फ़लतों के दर'वाज़े खोल देता है और दुनिया में उन्हें कसीर नेअ़मतें अ़ता करता है और मआ़श की तंगी को रिज़्क़ की वुसअ़त में बदल देता है ताकि वो अपने शर व गुनाहों में और ज़्यादा बढ़ जायें और उनके लिये रुसवा कुन दर्दनाक अ़ज़ाब है

इरशादे बारी तआ़ला है:-

हमने जब भी किसी बस्ती में कोई नबी भेजा तो उस बस्ती वालों को (नबी की तकज़ीब की वजह से) हमने उन्हें तंगी व तकलीफ़ में गिरफ़्तार कर लिया ताकि वो गिड़गिड़ा कर दुआ़ करें फिर हमने बदहाली को खुशहाली में बदल दिया हत्ता कि वो (माल व औलाद में) बहुत ज़्यादा हो गये और कहने लगे हमारे आबाओ अजदाद को भी इसी तरह तकलीफ़ और राहत पहुँचती रही है फिर हमने अचानक उनको अपनी गिरफ़्त में ले लिया और उन्हें उसकी ख़बर भी न थी।
(सू०-आअ़राफ़-7/94,95)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़बूत है। (सू०–आअ़राफ़–7/183)

आज अक्सर मुसलमानों के हालात ये है कि वो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की मुख़ालिफ़त वाले कामों को करके बहुत खुश व मुतमइन होते हैं और अक्सर लोग ऐसे हैं जो बुराई व गुनाहों के कामों के करने वालों की ताअ़रीफ़ व वाहवाही करते हैं जिसके सबब बद आअ़माल करने वालों को ये लगता है कि मैं बिल्कुल सहीह काम कर रहा हूँ तभी तो लोग मेरी ताअ़रीफ़ और वाहवाही कर रहे हैं मगर वो कभी ये नहीं सोचता और न इस बात बार ग़ौर करता है कि जो काम लोगों के नज़दीक क़ाबिले ताअ़रीफ़ है क्या वो काम अल्लाह व उसके रसूल के नज़दीक भी क़ाबिले ताअ़रीफ़ है या क़ाबिले मज़म्मत है।

शैतान के फ़रेब और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी के सबब इन्सान अपने बद आअ़मालों पर कभी ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता कि उसके बुरे आअ़माल उसे दोज़ख़ में ले जाने के लिये काफ़ी हैं और इन्सान जिस बातिल और शैतान की राह पर गामज़न होता है उसी को हक़ समझता है और खुद को निहायत अ़क्लमंद समझता है जबकि उसकी अ़क्ल शैतान और दुनिया और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ताबेअ़ व मुक़ीद होती है और ऐसे लोगों के लिये सख़्त–

अ़ज़ाब और निहायत बड़ी मुसीबत है जो उन पर अ़नक़रीब आने वाली है और उनके अ़ज़ाब की नौअ़इयत सख़्त तरीन होगी और ऐसे लोग खुद अपनी हलाकत का सबब बनते हैं।

हालांकि हर वो काम जो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल नज़दीक अच्छा है तो वो अच्छा है और जो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बुरा व ना पसंदीदा और क़ाबिले मज़म्मत है तो वो काम हर सूरत बुरा और मज़मूम है ख़्वाह दुनिया के तमाम लोगों के नज़दीक वो अच्छा हो मगर वो काम बुरा और मज़मूम है।

आज अक्सर लोग आँख वाले होकर अन्धे हैं कान वाले होकर बहरे हैं अ़क़्ल के बावुजूद वो बेवक़ूफ़ हैं व सीने में दिल की हरकत के बावुजूद मुर्दा है और जिस्मी आज़ा के बावुजूद अपाहिज हैं क्योंकि वो हक़ को जानते है मगर वो शैतान और नफ़्स पैरोकार हैं वो बुरे कामों की तरफ़ राग़िब और मुतावज्जे हैं कानों से हक़ को सुनते है मगर काम शैताननियत के करते हैं और अपनी अ़क़्ल से अच्छे व बुरे कामों में फ़र्क़ करना जानते हैं फिर भी वो ख़िलाफ़े शरअ़ व शैतान के मुवाफ़िक़ कामों को अन्जाम देते हैं और उन्होंने अपने दिलों को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की मुहब्बत से मुज़य्यन करने के बजाये अपने दिलों को शर व गुनाह और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और दुनिया की लज़्ज़तों व शहवतों की गन्दगी व मैल-

कुचैल से आलूदा कर रखा है और उनके जिस्मी आज़ा भलाई कामों के बजाए अल्लाह व रसूल की मुख़ालिफ़त में काम करते हैं और फिर अल्लाह तआ़ला से ख़ैर व भलाई और जन्नत की उम्मीद रखते हैं तो ऐ मुसलमानो ज़रा ग़ौर करो कि आअ़माल के एतबार से तुममें और ग़ैर मुस्लिमों में क्या फ़र्क़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(ऐ महबूब आप उनसे) फ़रमां दीजिये कि बताओ अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखे ले ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह तआ़ला के सिवा कौन माअ़बूद ऐसा है जो ये नेअ़मतें दोबारा तुम्हें दिला सके देखो हम कैसे कैसे मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से आयात बयान करते हैं फिर भी ये लोग मुँह फेर लेते है।
(सू०–अनअ़ाम–6/46)

पस ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आंखे छीन ले व तुम्हारे कान छीन ले और तुहारे दिलों पर मुहर लगा दे तो न तुम्हारी बसारत बाक़ी रहे और न तुम्हारी समाअ़त बाक़ी रहे और न सोचने समझने की कुव्वत बाक़ी रहे तो अल्लाह के सिवा कौन है जो ये चीज़ें तुम्हें दिला सके तो इसका जवाब ये है कि अल्लाह के सिवा कोई नहीं तो फिर तुम क्यों अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी करते हो और ख़्वाहिशे नफ़्स और शैतान की पैर‘वी करते हो–

क्या तुम्हें मरना नहीं है क्या तुम्हें अंधेरी क़ब्र में जाना नहीं है क्या तुम्हें अल्लाह तआ़ला के सामने अपने आअ़मालों का हिसाब देना नहीं है क्या तुम को क़ब्र के अ़ज़ाब से डर नहीं लगता क्या तुम दोज़ख़ की तीन हज़ार साल तक दहकने वाली आग को बर्दाश्त कर सकते हो क्या तुम्हें क़यामत की हौलनाकियों से डर नहीं लगता जब गुनाहगारों का निहायत ही सख़्त तरीन बुरा हाल होगा जब प्यास की शिद्दत से ज़बाने मुँह को आयेंगी जब सूरज तुम्हारे सरों के ऊपर कर दिया जायेगा और उस पर चटयल मैदान जो निहायत सख़्त तेज़ धूप से आग की तरह जल रहा होगा जिस पर नंगे पाव नंगे बदन भूके प्यासे खड़ा होना होगा।

अब भी वक़्त है अपने पर'वर दिगार से अपने गुनाहों की तौबा करो और उससे मग़फ़िरत तलब करते रहो जब तक कि दम न निकल जाये और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के अहकामात पर गामज़न हो जाओ व दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को तीन तलाक़ दे दो और कसरते नेक आअ़माल में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो और तमाम बुराइयों व गुनाहों से इजतिनाब करो।

अल्लाह तआ़ला तुम्हें कभी अपनी नेअ़मतें याद दिलाता है कभी साबिक़ा उम्मतों पर आने वाले अ़ज़ाब याद दिलाता है और कभी क़ब्र के अ़ज़ाब से डराता है और कभी क़यामत की हौलनाकियों और कभी दोज़ख़ की दहकती हुई आग से डराता

है व कभी नेक आअ़माल के सबब मिलने वाली नेअ़मतों व लज़्ज़तों की खुश ख़बरी सुनाता ताकि मेरे बन्दे मेरे रास्ते पर आ जायें और शैतान का रास्ता छोड़ दें और क्या हमारी नसीहत के लिये अल्लाह तअ़ाला का कुरान काफ़ी नहीं क्या हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की लाखों हदीसें सिराते मुस्तक़ीम की राह दिखाने के लिये काफ़ी नहीं हैं और क्या तुम्हारे गुनाहों व बातिल रास्तों से हक़ के रास्ते पर लगाने के लिये क्या औलिया-ए-किराम की कुतुब और उनकी अ़मली ज़िन्दगी काफ़ी नहीं फिर क्यों तुम अपनी आख़िरत बर्बाद करने और खुद को हलाक करने व दोज़ख़ का ईधन बनने के लिये अल्लाह तअ़ाला की ना-फ़रमानी और बुरे आअ़माल क्यों कर रहे हो।

अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल की नाफ़रमानी से आख़िर तुम्हें क्या हासिल होगा सिर्फ़ गिनती के चन्द दिनों की लज़्ज़त फिर दायमी अ़ज़ाब क्या तुम इस बात को पसंद करते हो कि तुम्हें दुनिया में चन्द दिनों ऐशो आराम मिले फिर लाखों साल तुम्हें आग का अ़ज़ाब दिया जाये अब तुम खुद फ़ैसला कर लो कि दुनिया की चन्द दिनों की ऐशो इशरत चाहते हो या फिर लाखों साल तक दोज़ख़ में रहना चाहते हो जहाँ चारों तरफ़ सिर्फ आग ही आग है और पीने को खौलता हुआ पानी व पीप और खाने को कांटेदार फल या फिर दुनिया में अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल के अहकामात पर अ़मल पैरा होकर चन्द दिनों मशक़्क़त व तकलीफ़

और फिर हमेशा के लिये जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों में अमन व सुकून और ऐशो आराम में रहना चाहते हो।

जब कोई शख़्स बुरा अ़मल करता है तो शैतान उसकी नज़र को वो अ़मल अच्छा करके दिखाता है और वसवसा डालता है कि यही हक़ का सहीह रास्ता है तो जब बन्दा अपनी बुराईयों को भलाई समझने लगे तो फिर समझ लो कि वो गुमराही व शैतान के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा है और रब तआ़ला जिस शख़्स पर माल व मताअ़ व असबाबे दुनिया को वसीअ़ कर दे और उसके अक्सर काम अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के खिलाफ़ हों तो उसको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ढील दी जाती है और वो ये समझता है कि अल्लाह तआ़ला हमसे राज़ी है इसलिये अल्लाह तआला हमें कसीर नेअ़मतें अ़ता कर रहा हैं और हम ऐशो इशरत में रह रहे हैं और हमारे काम अच्छे हैं तभी तो ये नेअ़मतें हमको बतौर इनआ़म मिल रही हैं और इस तरह वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब होने के बावुजुद भी ये समझता है कि उसका मुवाख़िज़ा नहीं किया जायेगा और न ही उसको सज़ा दी जायेगी।

पस वो कुफ़्र व सरकशी और गुमराही और गुनाहों में बढ़ता चला जाता है व इस तरह उसके गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाता है और साथ साथ उसको मिलने वाली सज़ा में भी इज़ाफ़ा

होता चला जाता है और उसे इस बात का इल्म भी नहीं होता फिर जब वो किसी भी गुनाह का इरतिकाब करता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर नेअ़मतों के दर'वाज़े खोल देता है जिससे वो बहुत खुश होता है फिर वो सरकशी और गुमराही में मज़ीद मुनहमिक और मुस्तग़रक़ हो जाता है और जूँ जूँ उस पर नेअ़मतें ज़्यादा होती जाती हैं तूँ तूँ वो ज़्यादा गुनाह करता है फिर अल्लाह तआ़ला ऐ़न ग़फ़लत में उसको अपनी गिरफ़्त में ले लेता है और अल्लाह तआ़ला सरकश व नाफ़रमानों की सज़ा में इसीलिये जल्दी नहीं करता कि वो जानता है कि वो मुझसे बच कर कहीं नहीं जा सकते।

अक्सर लोग मालो दुनिया की मुहब्बत व रग़बत व नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी के सबब शैतान की राह इख़्तियार किये हुये हैं और वो अपने बातिल गुमान से ये समझते हैं कि वो जिस राह पर चले रहे है यही रास्ता सही व दुरस्त और निजात देने वाला है जबकि उनका रास्ता अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के रास्ते से बरअ़क्स है और शैतान ने उनके सामने उनके बुरे आअ़माल मुज़य्यन कर दिये जिसमें वो मसरुफ़ हैं और वो शैतान और अपने नफ़्स की इताअ़त कर रहे हैं और शैतान को अपना दोस्त बना लिया है जबकि वो इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन है तो उनके लिये आख़िरत में दर्दनाक ज़िल्लत आमेज़ अ़ज़ाब है क्योंकि वो रहमान की दोस्ती से मुँह मोड़कर शैतान की दोस्ती पर राज़ी हो गये हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और वो (शयातीन) उन्हें (हिदायत के) रास्ते से रोकते है और वो यही गुमान किये रहते हैं कि वो हिदायत याफ़्ता हैं यहाँ तक कि जब वो हमारे पास आयेगा तो (अपने साथी शैतान से) से कहेगा ऐ काश मेरे व तेरे दरमियान मशरिक से मग़रिब का फ़ासला होता पस तू बहुत बुरा साथी था।
(सू०-ज़ुख़रुफ़-43/36-38)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने जब ऐअ़लाने नबूवत फ़रमाया तो शैतान के पास उसके हीले आये और कहने लगे कि अल्लाह के रसूल ने ऐअ़लाने नबूवत कर दिया है और उनकी उम्मत भी पैदा हो गयी है तो शैतान ने कहा क्या वो लोग दुनिया से मुहब्बत करते हैं शैतान के शागिर्दों ने कहा जी हां फिर शैतान ने कहा अगर वाक़ई वो दुनिया से मुहब्बत करते हैं तो मुझे कोई पर'वाह नहीं कि बुतों की इ़बादत नहीं करेंगे मगर ये लोग मुझसे बच नहीं सकते मैं उन पर तीन चीज़ों के साथ सुबह और शाम करुँगा ये नाहक़ माल लेंगे व उसको नाहक़ राह में ख़र्च करेंगे और उसको हक़ के रास्ते से रोक कर रखेंगे और तमाम बुराईयाँ इन्हीं तीन चीज़ों के ताबेअ़ हैं।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-6/332-ह०-7918)

दुनिया की रग़बत व ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी करने वाले कुत्ते की मानिन्द

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

(ऐ महबूब) और आप उन्हें उस शख़्स का हाल सुनादें जिसे हमने अपनी आयात इ़नायत की थीं लेकिन वो उन (के इ़ल्म व नसीहत) से निकल गया और शैतान उसके पीछे लग गया तो वो गुमराहों में से हो गया और अगर हम चाहते तो उसे इन (आयतों के इ़ल्म व अ़मल) के ज़रिये से सर बुलन्द करते मगर वो दुनिया की तरफ़ माइल (व राग़िब) हो गया और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैर'वी करने लगा सो उसकी हालत कुत्ते जैसी है अगर तुम उसको धुतकारो जब भी वो ज़बान निकाले रहता है या तुम उसे छोड़ दो (तब भी) ज़बान निकाले रहता है ये ऐसे लोगों की मिसाल है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया सो आप ये वाक़्यात (लोगों सें) बयान करें ताकि वो ग़ौरो फ़िक्र करें। (सू०-आअ़राफ़-7/175,176)

मज़कूरा आयात में हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को जिस शख़्स का क़िस्सा बयान करने का हुक्म फ़रमाया है कुरान व अहादीस में उसके नाम की तसरीह नहीं है मुफ़स्सिरीने किराम के इसके मुताअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़बाल हैं और मुख़्तलिफ़ नामों का ज़िक्र है उनमें से एक नाम बुलअ़म है वो एक बहुत बड़ा अ़ालिम था और वो

जो भी दुआ़ करता था वो कुबूल हो जाती थी और ये शख़्स फ़ज़्ल व कमाल के आअ़ला मन्सब पर फ़ाइज़ था और गुज़िश्ता किताबों का अ़ालिम था अल्लाह तआ़ला का इस्मे आज़म इसे माअ़लूम था और ये अपनी जगह पर बैठे बैठे अ़र्श को देख लेता था और ये बुलन्द तरीन मर्तबा और आअ़ला तरीन दरजात पर फ़ाइज़ था।

फ़ज़्ल व कमाल का इतना बड़ा मर्तबा पाने वाला शख़्स जब नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने लगा और दुनिया के माल व असबाब और उसकी नेअ़मतों की तरफ़ राग़िब हो गया और दुनिया और उसकी लज़्ज़तों को आख़िरत और उसकी नेअ़मतों पर तरजीह देने लगा तो अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ उसे अ़ता किया था सब छीन लिया और उसका ईमान बर्बाद हो गया इस वाक़्ये में हम मुसलमानों के लिये इबरत है कि नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने वाले और दुनिया का माल और उसकी नेअ़मतों से मुहब्बत व रग़बत रखने वाले लोगों की मिसाल कुत्तों जैसी है।

हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के ज़माने में ये अ़ालमे दीन जब्बारैन की बस्ती में रहता था जो मुल्के शाम में वाक़ैअ़ थी जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब्बारैन से जंग करने का इरादा किया तो उस अ़ालिम की क़ौम उसके पास आयी और फिर उससे कहा कि हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बहुत बड़ा लश्कर है जो

हमें हमारे शहरों से निकाल देगा और वो बनी इसराईल को इस सर ज़मीन पर आबाद कर देगा और तुम्हारे पास इस्मे आज़म है और तुम ऐसे शख़्स हो कि तुम्हारी हर दुअ़ा कुबूल होती है तुम अल्लाह तअ़ाला से दुअ़ा करो कि वो हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) और उनके लश्कर को यहाँ से भगा दे क़ौम की बात सुनकर उसने मनाअ़ कर दिया लेकिन क़ौम ने जब ज़्यादा इसरार किया व हदिये व नज़राने दिये तो उस पर माल व मताअ़ की मुहब्बत व रग़बत व ख़्वाहिशे नफ़्स उस पर ग़ालिब आ गई और वो मूसा (अ़लैहिस्सालम) के लिये बद्दुअ़ा करने के लिये पहाड़ पर चढ़ गया।

फिर जब वो बद्दुअ़ा करने लगा तो अल्लाह तअ़ाला ने उसकी ज़बान को उस क़ौम की तरफ़ फेर दिया और वो अपनी क़ौम के लिये जो दुअ़ाऐ ख़ैर करता तो बजाये उस क़ौम के बनी ईसराईल का नाम उसकी ज़बान पर आता था ये देखकर उसकी क़ौम ने कहा कि ये तू क्या कर रहा है तू बनी ईसराईल के लिये दुअ़ा और हमारे लिये बद् दुअ़ा क्यों कर रहा है उसने कहा कि मेरी ज़बान मेरे क़ब्ज़े व मेरे इख़्तियार में नहीं है रब तअ़ाला की कुदरत मुझ पर ग़ालिब आ गई है और मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बर्बाद हो गई हैं फिर उसकी ज़बान निकलकर उसके सीने पर लटक गई और उससे उसका इ़ल्म और इस्मे आज़म और उसका आअ़ला तरीन दरजा और बुलन्द तरीन मर्तबा सब कुछ उससे छीन लिया गया।

इस वाक़्ये से हमें नसीहत व इ़बरत हासिल करना चाहिये कि दुनिया की फ़ानी चीज़ों की रग़बत व हिर्सो लालच इन्सान की दुनिया व आख़िरत दोनों तबाह व बर्बाद कर देती हैं इसलिये हमें चााहिये कि दुनिया की मुहब्बत व रग़बत को अपने दिल से कुल्ली तौर पर बाहर निकाल दें और इस दिल में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह व रसूल और अल्लाह तआ़ला के मक़बूल व मख़्सूस बन्दो की मुहब्बत से दिल को मुज़य्यन करें और ताअ़त व कसरते नेक अ़मल में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ करें और माल दुनिया के लिये जमाअ़ न करें बल्कि आख़िरत के लिये जमाअ़ करें यानी माल के हुकूक़ अदा करें उसकी पूरी ज़कात अदा करें और राहे खुदा में सद्क़ा व ख़ैरात करें और जो उसके मुस्तहिक़ व अह्ल हों उन पर भी ख़र्च करें ताकि तेरा माल पाक और आख़िरत के लिये जमाअ़ हो जाये जो तेरे मरने के बाद तेरे काम आयेगा और तू उससे नफ़ा उठायेगा अ़ज़ाबे क़ब्र व अ़ज़ाबे क़यामत में तेरा माल और तेरे नेक आअ़माल तेरे लिये ढाल होंगे जो तुझे अल्लाह तआ़ला के शदीद अ़ज़ाब से बचायेंगे और तुझे जन्नत तक ले जायेंगे याद रहे कि माल व जाह की हिर्स दीन के लिये इन्तिहाई नुक़सान देह है।

➡हज़रत काअ़ब बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो भूके भेड़िये बकरियों के रेबड़ में छोड़ दिये जाये तो वो उसको

इतना बर्बाद न करेंगे जितना कि माल इन्सान के दीन को बर्बाद करता है माल व जाह की हिर्स के वजह से। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/216-ह०–2376)

➡हज़रत हकीम बिल हिज़ाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) फ़रमाते है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया ऐ हकीम दुनिया का माल शीरी (मीठा) व हरा भरा तरो ताज़ा है जो इसे नेक नीयत से ले तो उस माल में उसे बरकत दी जाती है और जो इसको लालच से लेगा तो उस माल में बरकत नहीं दी जाती है और वो उस शख़्स की तरह हो जाता है जो खाये मगर शिकम सेर न हो और याद रखो ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। (बुख़ारी–सहीह–6/56-ह०–6441)

जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला इ़ल्मे दीन की लज़्ज़त से सरफराज़ फरमाये फिर वो दुनिया के माल व मताअ़ और जाह व मन्सब की तरफ़ माइल हो और दीन के ज़रिये दुनिया को हासिल करना उसका मक़सद बन जाये और वो दीन की बजाये दुनिया के माल और उसकी नेअ़मतों की तरफ़ राग़िब हो और ख़्वाहिशाते नफ़्स के पीछे लग जाये और वो अल्लाह व रसूल की इताअ़त को छोड़ दे तो ऐसा अ़ालिम कुत्ते के मानिन्द है और जो अपने इ़ल्म पर अ़मल नहीं करते तो अल्लाह तआ़ला उन पर शैतान मुसल्लत कर देता है और ये आयात उन तमाम लोगों के लिये अ़ाम

है जिनको हिदायत दी गई और उन्होंने हिदायत से इअ़राज़ किया फिर उनसे हिदायत छीन ली गई

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) बयान करते है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का इल्म ज़्यादा हो और उसकी दुनिया से बे रग़बती ज़्यादा न हो तो वो अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा दूर हो जाता है। (कंजुल उ़म्माल–5/431-ह०–29016) (देलमी–अल फ़िरदौस–4/254-ह०–6298)

तलबे इ़ल्म लोगों की तीन क़िस्में है एक वो शख़्स जो इ़ल्म को सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह के लिये तलब करता है और वो उस इ़ल्म से सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने का इरादा करता है ये कामयाब लोगों में से है दूसरा वो शख़्स जो इ़ल्म को दुनिया के माल व मताअ़ के लिये तलब करता है अगर तौबा से पहले मौत आ गई तो उसके बुरे ख़ात्मे का अंदेशा है और तीसरा वो शख़्स जिस पर शैतान का ग़लबा हो जाये और वो अपने इ़ल्म को माल की कसरत का ज़रिया बनाये और अपने माल पर तकब्बुर करे और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी करने के बावुजूद खुद को नेकोकारों में शुमार करे तो ये शख़्स हलाक होने वालों में से है मौला अ़ली फ़रमाते हैं जिस शख़्स का इ़ल्म ज़्यादा हो फिर उसके दिल में दुनिया की मुहब्बत ज़्यादा हो तो उस पर रब तआ़ला का ग़ज़ब ज़्यादा होगा।

सूफ़िया किराम में से किसी का क़ौल है तहक़ीक़ तू उसका बन्दा है जिसके हाथ में तेरी लगाम है पस अगर तेरी लगाम दुनिया के हाथ में है तो तू दुनिया का बन्दा है और अगर तेरी लगाम खुदा के हाथ में है तो फिर तू खुदा का बन्दा है और अगर तेरी लगाम तेरे नफ़्स के हाथ में है तो फिर तू नफ़्स का बन्दा है और तेरी लगाम ख़्वाहिश के हाथ में है तो फिर तू अपनी ख़्वाहिश का बन्दा है और अगर तेरी लगाम मख़लूक़ के हाथ में है तो फिर तू मख़लूक़ का बन्दा है इसलिये तुझे नज़र करनी चाहिये और तुझे ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि तूने अपनी लगाम किसके सपुर्द की है।

हालांकि तुममें से ज़्यादातर वही लोग हैं जो कि दुनिया के ख़्वाहिश मन्द हैं और तुममें से वो भी हैं जो दुनिया व आख़िरत के मालिक अल्लाह तआ़ला के ख़्वाहिश मन्द हैं तो तुम ऐसे लोगों की सुहबत हुस्ने अदब के साथ इख़्तियार करो और उन्हीं के मशरब को इख़्तियार करो और उन्हीं के तर्ज़े अ़मल को अपना तर्ज़े अ़मल बनाओ और दुनिया के मालो मताअ़ की मुहब्बत व रग़बत को अपने दिलों से निकाल फेंको और अपनी अब्दी आख़िरत की बेहतरी के लिये कसरत से नेक आअ़माल करो ताकि तुम्हारी आख़िरत संवर जाये और तुम जन्नत के मुस्तहिक़ बन जाओ।

नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाले चौपायों की मानिन्द

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लिया तो क्या आप उस पर निगेहबान हैं क्या आप ये ख़्याल करते हैं कि उनमें से अक्सर लोग सुनते या समझते हैं (नहीं बल्कि) तो वो चौपायों की मानिन्द है बल्कि उससे भी बद तर गुमराह हैं। (सू०–फुरक़ान–25/43,44)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को माअ़बूद बना रखा है और अल्लाह ने उसे इल्म के बावुजूद गुमराह ठहरा दिया है और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया फिर उसे अल्लाह के बाद कौन हिदायत कर सकता है सो क्या तुम नसीहत कुबूल नहीं करते हो। (सू०–जासिया–45/23)

नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करने वाला भी एक क़िस्म के शिर्क में मुब्तिला होता है और इस फ़ानी दुनिया की किसी भी शैः से इश्क़ कर लेना भी शिर्क है और नफ़्स की इताअ़त तमाम गुनाहों व आफ़तों की जड़ और बुनियाद है नफ़्स

की ख़बासत व जहालत का अ़ालम ये है कि जब ये किसी गुनाह का क़सद करे या शहवत पर उठ खड़ा हो तो अल्लाह व रसूल या कुरान का वास्ता पेश करो या क़ब्र, क़यामत व दोज़ख़ का निहायत शदीद अ़ज़ाब उसके सामने पेश करो मगर फिर भी ये गुनाह करने से नहीं रुकता

हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं किसी जानवर को इतनी सख़्त लगाम की ज़रुरत नहीं होती कि जितनी नफ़्स को होती है और ये नफ़्स दिल पर ग़ालिब रहता है और दिल को अपना क़ैदी बनाये रखता है नफ़्स एक महबूब दुश्मन है और महबूब शैः के नक़्स व ऐ़ब नज़र नहीं आते और वो उसकी मुहब्बत में अन्धा रहता है लिहाज़ा नफ़्स के उ़यूब से ना-वाक़िफ़ शख़्स हलाकत के गढ़े में गिरता चला जाता है और अगर नफ़्स का दिल पर ग़लबा हो जाये तो इन्सान मुकम्मल तौर पर नफ़्स का ज़ेरे फ़रमान हो जाता है।

इसलिये इन्सान को चाहिये कि नफ़्स को हर शर व बुराई से रोके और हर फ़िज़ूल चीज़ और गैर ज़रुरी अशया से इज़तिनाब करे और दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत व रग़बत से किनारा कश हो जाये और तमाम अमाविर पर अ़मल पैरा और तमाम नवाही से इजतिनाब करे ऐसा करने से उसके जिस्म के ज़ाहिरी और बातिनी आज़ा सिफ़ते तक़्वा से मौसूफ़ हो जायेंगे।

जिस्म के पांच आज़ा की निगरानी करना निहायत ज़रुरी है 1- आंख 2- कान 3- दिल 4- ज़बान 5- शिकम और जब इन आज़ा की हिफ़ाज़त हो जाये तो उम्मीद है बाक़ी आज़ा भी महफ़ूज़ हो जायेंगे क्योंकि ये आज़ा हर बुराई व शर की तरफ़ माइल करने वाले और गुनाहों की तरफ़ राग़िब करने वाले हैं।

जैसे आंख हर फ़ित्ने की जड़ और बुनियाद व हर आफ़त का सबब है नज़र को नीची रखना दिल को बहुत ज़्यादा पाक करता है ये ताअ़त व ख़ैर में इज़ाफ़े व दुनिया से बे रग़बती का बाइस है और आंख को नज़रे हराम से रोकना शहबात से बचने का बेहतरीन तरीक़ा है अगर तुम अपनी आंख को खुला छोड़ दोगे तो वो दुनिया की ज़ैब व ज़ीनत में तुम्हें मुब्तिला कर देगी और तुम्हारी रग़बत व मुहब्बत में इज़ाफ़ा करती चली जायेगी और तुम दुनिया की मुहब्बत में अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाओगे फिर तुम दुनिया में वो चीज़ें भी देखोगे कि उन चीज़ों पर तुम्हारी कुदरत न होगी और उनमें से बाअ़ज़ चीज़ों पर तुम सब्र न कर सकोगे और जब तुम नज़रे नीची रखोगे और उसे बे फ़ायदा चीज़ पर नहीं डालोगे तो तुम्हारा सीना नफ़्स की ख़्वाहिशात और शैतानी वसवसों से खाली रहेगा और दिल सुकून व राहत और शर के ख़तरात से महफ़ूज़ रहेगा और तुम दुनिया के फ़ित्ने व शर से महफ़ूज़ रहोगे।

इरशादे बारी तआला हैः–
ऐ हबीब आप अह्ले ईमान मर्दों से फ़रमादें कि वो अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें ये उनके लिये बड़ी पाकीज़ा बात है बेशक अल्लाह तआला उनके कामों से खूब आगाह है जो वो अन्जाम दे रहे हैं और आप अह्ले ईमान और्तों से फ़रमादें कि वो अपनी नज़रें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी आराइश व ज़ैबाइश को ज़ाहिर न किया करें।
(सू०–नूर–24/30,31)

इसी तरह दिल की हिफ़ाज़त व उसकी इस्लाह निहायत ज़रुरी है क्योंकि दिल का मुआमला बाक़ी आज़ा से ज़्यादा ख़तरनाक है और इसकी इस्लाह निहायत मुश्किल है दिल एक बादशाह की मानिन्द है जिसकी इताअत की जाती है और बाक़ी आज़ा रिआया की तरह है कि सब इसकी पैर'वी करते हैं

➡ हज़रत नुअमान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है अगर वो दुरस्त हो जाये तो सारा जिस्म दुरस्त हो जाता है और अगर वो ख़राब हो जाये तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है सुन लो कि वो दिल है यानी सारे जिस्म की इस्लाह क़ल्ब की इस्लाह पर मौक़ूफ़ है।
(बुख़ारी–1/109-ह०–52) (मुस्लिम–3/337-ह०–4094)

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली (रह०) फ़रमाते है इन्सान का दिल रब तआ़ला की नज़र का मक़ाम है तो फिर उस शख़्स पर तअ़ाज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का इहतिमाम करे व उसे धोये व मैल कुचैल से साफ़ सुथरा रखे ताकि मख़्लूक़ उसके चेहरे पर कोई ऐ़ब न पाये मगर वो दिल का इहतिमाम न करे जो रब्बुल आ़लमीन की नज़र का मक़ाम है हालांकि उसे चाहिये था कि दिल को दुनिया की मुहब्बत व रग़बत से खाली रखता और अल्लाह व रसूल की मुहब्बत से मुज़य्यन और आरास्ता रखता ताकि उसके दिल में अल्लाह तआ़ला कोई ऐ़ब न पाता लेकिन अफ़सोस दिल गन्दगी, पलीदी और ग़लाज़त से लबरेज़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और अल्लाह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ा हिल्म वाला है। (सू०-अहज़ाब-33/51)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक वो सीनों की छुपी हुई बातों को खूब जानने वाला है। (सू०-अनफ़ाल-8/43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
वो ख़्यानत करने वाली बातों को जानता है और (उन बातों को भी) जो सीने (अपने अन्दर) छुपाये रखते है। (सू०-मोमिन-40/19)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ाला तुम्हारे माल और सूरतों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आअ़मालों को देखता है। (शुअ़बुल ईमान–7/293-ह०–10477) (मुस्लिम–सहीह–5/42-ह०–6543)
(इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4143)

इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि एक दिल वो होता है जो ख़्वाहिश से भरा हुआ और बुरी आ़दात से आलूदा होता है और उसमें ख़बासतें होती हैं और ख़्वाहिशात के ग़लबे के सबब इन्सान की अ़क़्ल मग़लूब हो जाती है और ख़्वाहिशाते नफ़्स इन्सान को अपना गुलाम बना लेती है फिर दिल शर और बुराई का मरकज़ बन जाता है और शैतान की सल्तनत उस दिल पर मुहीत व मज़बूत हो जाती है और उसके दिल से उख़रवी ख़ौफ़ निकल जाता है फिर वो दुनिया व मताअ़े दुनिया के धोके में फंस जाता है और ज़्यादा माल पाने की हिर्स में मुबितला रहता है और दुन्यावी माल व मताअ़ से उसकी मुहब्बत व रग़बत शदीद हो जाती है और वो अपने नफ़्स का गुलाम बन जाता है फिर वो नफ़्स का ज़ेरे फ़रमान हो जाता है और वो अपनी दुनिया को आबाद करता है और अपनी आख़िरत को वीरान कर लेता है जैसा कि सू०–फुरक़ान की आयत में फ़रमाया गया नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करने

वाला चौपायों की मिस्ल है बल्कि उससे भी बदतर है और ये हक़ीक़त है क्योंकि जानवर भी अपने रब की तस्बीह करते हैं और जो उन्हें खाने को दे उसके फ़रमां बरदार रहते हैं और वो एहसान करने वालों को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वालों से घबराते हैं और नफ़अ़ देने वाली चीज़ को तलब करते हैं और नुक़सान देने वाली चीज़ से बचते हैं और चरागाहों की राहें जानते है मगर नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पैरोकार न तो अल्लाह की इताअ़त करते हैं न उसके एहसान को पहचानते है और शैतान जैसे बड़े दुश्मन को दुश्मन नहीं समझते है और न ही आख़िरत में मिलने वाली नेअ़मतो के तालिब हैं और न आख़िरत के शदीद अ़ज़ाब से डरते हैं और बुरे अन्जाम से बे फ़िक्र और बे पर‘वाह रहते हैं और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करना दुनिया व आख़िरत दोंनों के लिये आफ़त व मुसीबत और हलाकत है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और ख़्वाहिश की पैरवी न करना वरना ये पैर‘वी तुम्हें अल्लाह की राह से भटका देगी बेशक जो लोग अल्लाह की राह से भटक जाते हैं तो उनके लिये सख़्त अ़ज़ाब है इस वजह से कि वो योमे हिसाब को भूल गये हैं। (सू०-सॉद-38/26)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें हलाक करने

वाली है 1- नफ़्स की इताअ़त 2- ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ 3- तकब्बुर व खुद पसंदी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/451-ह०–745)

➡ शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क़्ल मंद वो है जो अपने नफ़्स को इ़बादत में लगाये और मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे और बेवक़ूफ़ वो है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करे और रब तआ़ाला की रहमत पर तकब्बुर करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/273-ह०–2459)

अक्सर देखा गया कि इन्सान का दिल जब किसी काम का इरादा करता है तो उस वक़्त वो जानता है कि अल्लाह तआ़ाला ने इस काम को करने से मनाअ़ फ़रमाया है और वो इस काम से नाराज़ होगा लेकिन अल्लाह तआ़ाला के मनाअ़ करने के बावुजूद इन्सान वो काम कर गुज़रता है और वो अल्लाह तआ़ाला के हुक्म पर अ़मल करने की बजाए वो अपनी ख़्वाहिश पर अ़मल करता है और अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त करने की बजाए अपने नफ़्स की इताअ़त करता है और वो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इत्तेबाअ़ करने की बजाए वो ख्वाहिशाते नफ़्स की इत्तेबाअ़ करता है अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत करने की बजाए अपने नफ़्स की इ़बादत करता है और अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत में उसका सर

कम झुकता या कभी कभी झुकता है मगर अपने नफ़्स के आगे वो हर वक़्त सर को झुकाये हुये खड़ा रहता है।

पस जो शख़्स अल्लाह सुबहानहू व तआ़ला को छोड़कर नफ़्स की इताअ़त व इ़बादत करे और ख़्वाहिशात की इत्तेबाअ़ करे तो उसने अपने नफ़्स को अपना माअ़बूद बना लिया है और उसने अपनी लगाम अपने नफ़्स के हाथों में दे दी है और वो अपने नफ़्स का गुलाम और बन्दा हो गया है और ये इसलिये कि दुनिया व मताये दुनिया की मुहब्बत व रग़बत उस पर इस क़दर ग़ालिब हो गई है कि वो उसमें मुस्तग़रक़ हो गया है और अपनी आख़िरत और उसमें पेश आने वाले मसाइबो आलाम और आफ़ात से वो ग़ाफ़िल हो गया व माल की हिर्स व उसकी इन्तिहाई मुहब्बत व रग़बत ने उसकी अ़क़्ल को ज़ाइल कर दिया और आँखों को अन्धा कर दिया और कानों को बहरा और ज़बान को गूँगा कर दिया जिसके सबब वो हक़ को समझ नहीं सकता और न हक़ को देख सकता और न हक़ को सुन सकता है और न हक़ बोल सकता और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उसकी याद के लिये उसके पास वक़्त नहीं क्योंकि माल व मताअ़ कमाने और ज़्यादा से ज़्यादा उसे हासिल करने के सबब उसे फुर्सत नहीं

दुनिया काफ़िरों के लिये जन्नत व उनकी ऐ़शो इ़शरत का मक़ाम है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जिस दिन काफ़िर लोग आतिशे दोज़ख़ के सामने पेश किये जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) तुम अपनी लज़ीज़ व मरगूब चीज़े अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी में ही हासिल कर चुके और उनसे (खूब) नफ़अ़ उठा चुके हो पस आज के दिन तुम्हें सख़्त ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जायेगी इस वजह से तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी किया करते थे। (सू०–अहक़ाफ़–46/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुन्यावी ज़िन्दगी से खुश व उसी पर मुतमइन हो गये हैं और जो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं उन्हीं लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है उन आअ़माल के बदले में जो वो (दुनिया में) कमाते रहे और जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे उन्हें उनका रब उनके ईमान के बाइस (जन्नतों तक) पहुँचा देगा जहाँ उन की रिहायश गाहों के नीचे से नहरें बह रही होंगी ये ठिकाने उख़र‘वी नेअ़मतों के बाग़ात में होंगे उन जन्नतों में उनकी दुआ़ ये होगी कि ऐ अल्लाह तू पाक है व उसमें उनकी आपस में दुआ़ऐ ख़ैर का कलमा सलाम–

होगा और उनकी दुआ़ इन कालिमात पर ख़त्म होगी कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह तआ़ाला के लिये हैं जो तमाम जहानों का पर‘वर दिगार है और अगर अल्लाह तआ़ाला (उन काफ़िर) लोगों को बुराई (यानी अ़ज़ाब) पहुँचाने में जल्द बाज़ी करता जैसे वो तलबे नेअ़मत में जल्द बाज़ी करते हैं तो यक़ीनन उनकी मिआ़दे (उ़म्र) उनके हक़ में जल्द पूरी कर दी गई होती ताकि वो मरकर जल्द ही दोज़ख़ में पहुँच जाते बल्कि हम ऐसे लोगों को जो हमसे मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते हम उन्हें उनकी सरकशी में छोड़े रखते हैं कि वो भटकते रहें। (सू०–युनूस–10/7 ता 11)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

और काफ़िर ये गुमान हरगिज़ न करे कि हम जो उन्हें मुहलत दे रहे है ये (मुहलत) उनकी जानों के लिये बेहतर है बल्कि हम तो ये मुहलत उन्हें सिर्फ़ इसलिये दे रहे हैं कि वो गुनाह में और बढ़ जायें और उनके लिये बिल आख़िर ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है। (सू०–आले इमरान–3/178)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

यही वो लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीदी पस उन पर से न तो अ़ज़ाब हल्का किया जायेगा और न ही उनको मदद दी जायेगी। (सू०–बक़राह–2/86)

बेशक अल्लाह तआला ने दुनिया को कुफ़्फ़ारों

व सरकशों के लिये आरास्ता की है और उन्हें दुनिया में उनकी मन पसंद व लज़ीज़ चीज़ें अ़ता की गईं हैं ताकि वो उनसे सिर्फ़ दुनिया में फ़ायदा और लज़्ज़त हासिल करें ताकि आख़िरत में उनका कोई हिस्सा बाक़ी न रहे और बिल आख़िर तमाम कुफ़्फ़ार नारे दोज़ख़ का ईधन होंगे और उन्हें ज़लील और रुसवा कुन अ़ज़ाब दिया जायेगा और नेक लोग जो दुनिया की ऐश व इशरत व उसकी लज़्ज़तों से किनारा कश रहते हैं और आख़िरत की ज़िन्दगी को दुनिया की ज़िन्दगी पर तरजीह देते हैं उनके लिये बेहतरीन अज्रो सवाब है और उख़र'वी दायमी नेअ़मतें और जन्नत है जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

➡ हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप रब तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि अल्लाह तआ़ला आपकी उम्मत पर वुसअ़त फ़रमाये क्योंकि उसने ईरान व रोम के लिये वुसअ़त करके उन्हें दुनिया अ़ता फ़रमाई है जबकि वो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत भी नहीं करते तो आपने फ़रमाया ऐ ऊ़मर ये वो लोग हैं जिन्हें उनके हिस्से की चीज़ें दुनिया में ही दे गई हैं। (बुख़ारी–सहीह–2/692-ह०–2467)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मोमिन के

लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है
(मुस्लिम–सहीह–6/468-ह०–7417)
(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4113)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/525-ह०–2324)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०–10461)

➡ हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि दुनिया मोमिन के लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है और ये भी फ़रमाते हुये सुना जो लोग दुनिया में बहुत पेट भर कर खाते हैं क़यामत के दिन वो सबसे ज़्यादा भूके होंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/434-ह०–6545)

एक रिवायत में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुन्यावी लज़्ज़ात व शहवात को तर्क करने की वजह से दुनिया मोमिन के लिये क़ैद है (शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०-10463)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर न हो और दुनिया उसका माल है जिसका आख़िरत में कोई माल न हो और दुनिया को वो ही जमाअ़ करता है जिसमें अ़क़्ल न हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/330-ह०–10638)

अल्लाह तबारक व तआ़ला की अ़ता की हुई लज़ीज़ व पसंदीदा हलाल चीज़ों को हासिल करना और उनसे नफ़अ़ उठाना नाजाइज़ नहीं है लेकिन उन चीज़ों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा न करना और उनके हुक़ूक़ अदा न करना या उन चीज़ों को हराम ज़राए से हासिल करना गुनाह है और दुनिया का माल व मताअ़ की शदीद मुहब्बत व रग़बत और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी जो यादे ईलाही और आख़िरत से ग़ाफ़िल कर दे वो माल व मताअ़ और दुन्यावी तमाम चीज़ें इन्सान के लिये बड़ी आफ़त व मुसीबत और हलाकत का सबब हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ लोगो जो कुछ ज़मीन में हलाल व पाकीज़ा है उसमें से खाओ और शैतान के रास्तों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है वो तुम्हें सिर्फ़ बुराई और बेहयाई का हुक्म देगा।
(सू०-बक़राह-2/168,169)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें अ़ता की हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम सिर्फ़ उसी की इ़बादत करते हो। (सू०-बक़राह-2/172)

इन्सान जब ऐश व इशरत की ज़िन्दगी में मशग़ूल होता है तो बसा औक़ात वो अल्लाह तआ़ला की

याद और इताअ़ात व इ़बादात और आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और वो सरकश व नाफ़रमान हो जाता है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में लज़्ज़ात व ऐश व इशरत के हुसूल की मज़म्मत फ़रमाई है और इस बात की काफ़िरों पर मलामत की कि तुम अपनी लज़ीज़ व मरग़ूब चीज़ें अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो पस आज के दिन तुम्हें सख़्त ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जायेगी।

आज मुसलमानों में बाअ़ज़ लोग कुफ़्फ़ारों की तरह दुनिया व मताये दुनिया की शदीद मुहब्बत व रग़बत और ज़्यादा माल की हिर्स व हवस और जाह व मन्सब की तलब में मुब्तिला हैं और नफ़्स के ताबेअ़ फ़रमान हैं उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी व उसकी ऐशो इशरत को हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझ रखा है और वो अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं व इसी दुनिया की ज़िन्दगी पर खुश व मुतमइन हैं उनके दिलों में न तो ख़ौफ़े इलाही है न क़ब्र के अ़ज़ाब का डर और न क़यामत के दिन होने वाले हिसाबो किताब व शदीद अ़ज़ाब का ख़ौफ़ और ये दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी मरगूब चीज़ों के लिये कोशिश व दौड़ धूप करते हैं और अल्लाह व रसूल की इताअ़त से इअ़राज़ करते हैं व हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इत्तेबाअ़ करने के बजाए ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी करते हैं और शदीद अ़ज़ाब की वईदें सुनकर भी गुनाहों से बाज़ नहीं आते उन्होंने इस फ़ानी दुनिया को–

अपनी मन्ज़िल व इसी को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बना लिया है और वो आख़िरत की बजाए दुनिया पर राज़ी हो गये और दुनिया की लज़्ज़ात और शहवात पर टूट पड़े हैं और माल व मताअ़ उन्हें जिस तरीक़े से भी हासिल हो वो हासिल करते हैं दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत, चमक दमक, उन्हें जहाँ कहीं भी दिखाई देती है उसकी तरफ़ मानूस हो जाते हैं और उनके आअ़माल व अफ़आ़ल दुनिया के लिये हैं गोया वो दुनिया में हमेशा रहने के लिये पैदा किये गये हों और वो समझते है इस दुनिया में जो खा पी लिया और पहन ओढ़ लिया और ऐशो आराम कर लिया वही हमारा अपना है इसके सिवा कोई ज़िन्दगी नहीं है और उनके दिलों में कामिल यक़ीन नहीं कि दुनिया फ़ानी है और एक दिन हमें इसे छोड़कर हर हाल में जाना है।

बाअ़ज़ लोग ये ख़्याल करते हैं कि अल्लाह तआ़ला काफ़िरो को ज़ुमूमन फ़ौरी तौर पर किसी गुनाह पर गिरफ़्त नहीं फ़रमाता तो इसमें हिकमते इलाही होती है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें मुहलत देता है ताकि ये लोग मज़ीद गुनाहों के मुरतकिब हो जायें जो उनकी तबाही व बर्बादी और हलाकत का सबब बने और लोग इस धोके में रहते हैं कि गुनाहों के सबब अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ाब क्यों नहीं दे रहा इसलिये ईमान वालों ये गुमान नहीं रखना चाहिये अल्लाह तआ़ला इनके कुफ़्र और कसीर गुनाहों के बावुजूद इन्हें लम्बी ज़ुम्र, कसीर माल व औलाद अ़ता करता है और ये उनके लिये

बेहतर नहीं है और न ये इस बात की अ़लामत कि अल्लाह उनसे राज़ी है हरगिज़ नहीं बल्कि ये उनके लिये सख़्त ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब से पहले दी जाने वाली ढील है व कुफ़्फ़ार की ये आ़रज़ी नेअ़मतें व राहतें उन्हें दायमी अ़ज़ाब की तरफ़ ले जाने वाली हैं और यही वो लोग है जो क़यामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाये जायेंगे और उन पर होने वाले अ़ज़ाब को कभी हल्का न किया जायेगा यानी उन पर होने वाले अ़ज़ाब की शिद्दत हमेशा रहेगी और किसी भी वक़्त उन्हें किसी तरह की राहत नसीब न होगी।

हम मुसलमानों को इन बातों पर कसरत के साथ ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि जो शख़्स दुनिया की ऐशो इशरत व ज़्यादा माल व मताअ़ हासिल करने में मशगूल होकर ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैर'वी करता और माल व मताअ़ की मुहब्बत व रग़बत में यादे इलाही और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल हो जाता है और अपनी ज़िन्दगी को इस दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत से मुज़य्यन करता है तो उसे ये बात कभी नहीं भूलना चाहिये कि यही चीज़े उसके लिये वबाले जान व सख़्त मुसीबत और उसकी हलाकत का सबब होंगीं और जो शख़्स इस फ़ानी दुनिया के माल व असबाब को जमाअ़ करने में मशगूल रहता है वो आख़िरत की सआ़दत व उख़रवी नेअ़मतों से महरुम रहेगा।

दुनियावी ज़िन्दगी पसन्द करने वाले कुफ़्फ़ारों को सख़्त अ़ज़ाब की वईद

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और काफ़िरों के लिये सख़्त अ़ज़ाब की वजह से तबाही व बर्बादी है ये वो लोग हैं जो आख़िरत की बजाय दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद करते हैं और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते हैं और इस (दीने हक़) में कजी (टेढ़ापन) तलाश करते हैं ये लोग गुमराही में दूर तक निकल गये हैं। (सू०–इब्राहीम–14/2,3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद किया और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। (सू०–नहल–16/107)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और आप उन लोगों को छोड़े रखिये कि जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा है और इस (कुरान) के ज़रिये उन्हें नसीहत फ़रमाते रहिये ताकि कोई जान अपने किये के बदले सपुर्दे हलाकत न कर दी जाये फिर उसके लिये अल्लाह के सिवा कोई मददगार न होगा न कोई सिफ़ारशी फिर अगर वो (अपने गुनाहों का) पूरा पूरा बदला यानी मुआवज़ा भी दें तो उनसे कुबूल नहीं किया

जायेगा यही वो लोग हैं जो अपने किये के बदले हलाकत में डाल दिये गये उनके लिये खौलते हुये पानी का पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है और इस वजह से कि वो कुफ़्र किया करते थे।
(सू०–अनआ़म–6/70)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो आप उनसे मुँह मोड़ लें जिसने हमारी याद से मुँह मोड़ लिया और वो सिवाय दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई मक़सद नहीं रखता।
(सू०–नज्म–53/29)

जो लोग दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत व आराइश को आख़िरत के मुक़ाबले मरगूब रखते हैं और आख़िरत के बजाए दुनिया में ही रहने को पसंद करते हैं तो ऐसे लोगों को निहायत शदीद अ़ज़ाब दिया जायेगा और वो यक़ीनन गुमराह हैं और लोगों को गुमराह करते हैं और लोगों को दीन व हक़ के रास्ते से रोकते हैं।

अक्सर लोगों के नज़दीक दुनिया की मरगूब चीज़ें और दुनिया की लज़्ज़तें ही अस्ल नेअ़मतें हैं इसलिये वो आख़िरत पर दुनिया को तरजीह देते हैं जबकि अल्लाह तआ़ला ने उसकी इस तरजीह को उसकी गुमराही फ़रमाया क्योंकि दुनिया की मरगूब चीज़ों मे बेशुमार ऐ़ब होते हैं जो दुनिया की शदीद मुहब्बत व रग़बत के सबब दिखाई नहीं देते मसलन इन्सान जब अपनी मन पसंद चीज़ें–

हासिल कर लेता है तो उसे ये फ़िक्र लाहिक़ होती है कि उससे उसकी हासिल की हुई मरगूब चीज़ें कोई छीन न ले या किसी हादसे के सबब मरगूब चीज़ें ज़ाए न हो जायें और बिल फ़र्ज अगर उनकी मरगूब चीज़ें उनके पास बाक़ी भी रहें तब भी उन चीज़ों को छोड़कर वो दुनिया से चला जायेगा

दुनिया की तमाम खाने वाली लज़ीज़ चीज़ें जिससे इन्सान लज़्ज़त पाता है ये लज़्ज़तें सिर्फ़ चन्द लम्हों की होती है हल्क़ से लुक़्मा उतरने के बाद उसकी लज़्ज़त का कोई असर बाक़ी नहीं रहता और हर लज़ीज़ खाने वाली चीज़ हलक़ से उतरने के बाद बदबूदार हो जाती है और सुबह को ग़लाज़त व निहायत बदबूदार बनकर निकलती है और दुनिया की हर लज़्ज़त को फ़ना है और उख़र'वी लज़्ज़त दायमी और ग़ैर फ़ानी है और सबसे बड़ी बद नसीबी दिल की गफ़लत है और सबसे बड़ी खुश नसीबी दिल की बेदारी है और दुनिया पसंद ग़ाफ़िल शख़्स को चन्द रोज़ा ग़फ़लत की ज़िन्दगी तो मिल जाती है मगर आखिरत की बाइज़्ज़त दायमी ज़िन्दगी नहीं मिलेगी।

काफ़िरों को उनके माल व औलाद अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा न सकेंगे

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें उनके माल अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा न सकेगे और न ही उनकी औलाद और वही लोग जहन्नमी है जो उसमें हमेशा हमशो रहेंगे (सू–आले इमरान–3/116)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह के अ़ज़ाब से हरगिज़ न ही उनके माल उन्हें बचा सकेगे न ही उनकी औलाद उन्हें बचा सकेगी यही लोग अहले दोज़ख़ हैं और वो उसमें हमेशा रहने वाले हैं। (सू०–मुजादिला–58/17)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और उसका माल उसके किसी काम नहीं आयेगा जब वो हलाकत (के गढ़े) में गिरेगा।
(सू०–लैल–92/11)

रोज़े क़यामत कुफ़्फ़ार अपने माल व औलाद से किसी क़िस्म का कोई नफ़ा हासिल नहीं कर सकेंगे अगरचा दुनिया में वो आने वाली बाअ़ज़ मुसीबतों का इनके ज़रिये से मुक़ाबला कर लिया करते थे क़यामत के दिन उन्हें ऐसी सूरते हाल का सामना करना पड़ेगा कि जिसकी उन्हें क़तई उम्मीद न होगी और दुनिया में उनके कमाये हुये

बुरे आअ़माल का अन्जाम उनके सामने होगा और उन्हें चारो तरफ़ से अल्लाह का अ़ज़ाब घेर लेगा और वो जहन्नुम का ईधन होंगे और वो हमेशा हमेशा उसमें रहेंगे।

गुज़िश्ता उम्मतों में अल्लाह तआ़ाला का यही कानून जारी था फ़िरऔ़न और उसके पहले और उसके बाद आने वाले सब जाबिर, सरकश मालो दौलत और लश्करों वालों के साथ भी यही हुआ अल्लाह तआ़ाला ने उनके गुनाह और उनकी सरकशी के सबब पकड़ लिया काफ़िर दुनिया की लज़्ज़तों व शहवतों से खूब लुत्फ़ अन्दोज़ हाते हैं और इस दुनिया को अपनी हक़ीक़ी क़याम गाह समझते हैं और इस दुनिया से खूब फ़ायदा उठाते हैं मगर क़यामत के दिन वो जहन्नुम की तरफ़ हांके जायेंगे जो बहुत बुरा ठिकाना है

अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने दीगर आयतों में भी फ़रमाया कि क़यामत के दिन माल व औलाद किसी शख़्स को अल्लाह के अ़ज़ाब से बचा न सकेंगे।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

जिस दिन न कोई माल नफ़अ़ देगा और न ही औलाद। (सू०–शुअ़रा–26/88)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

बेशक जो लोग काफ़िर हुये और हालते कुफ़्र में–

ही मर गये सो उनमें से कोई शख़्स अगर ज़मीन भर सोना भी अपनी निजात के लिये मुआ़वज़े में देना चाहे तो उससे हरगिज़ कूबूल नहीं किया जायेगा और उन्हीं लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और उनका कोई मददगार न होगा।
(सू०–आले इमरान–3/91)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और न तुम्हारे माल इस क़ाबिल हैं और न ही तुम्हारी औलाद कि तुम्हें अल्लाह के हुजूर कुर्ब और नज़दीकी दिला सकें मगर जो ईमान लाया और उसने नेक अ़मल किये ऐसे ही लोगों के लिये दो गुना अज्र है उनके अ़मल के बदले में वो जन्नत के बाला ख़ानो में अमन व अमान से होंगे। (सू०–सबा–34/37)

बेशक उनके माल व उनकी औलाद कुछ काम न आयेगी यानी वो उनसे न तो अ़ज़ाब को हटा सकेंगे और न ही अज्रो सबाब और उख़रवी नफ़अ़ का कुछ हिस्सा हासिल कर सकेंगे और वो आग के अ़ज़ाब में मुब्तिला रहने वाले हैं और जो शख़्स ईमान लाया और अपने माल को अल्लाह की राह में ख़र्च किया और माल के हुकूक़ अदा किये और नेक आअ़माल जो उसने आगे भेज दिये वही उसके नफ़अ़ व अज्रो सवाब के बाइस होंगे।

दूसरा हिस्सा

दुनिया की मज़म्मत अहादीस की रौशनी में

-: दुनिया मलऊ़न है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मलऊ़न है और जो कुछ दुनिया में है वो भी मलऊ़न है सिवाय उसके जो अल्लाह तआ़ला के लिये है वो मलऊ़न नहीं है और अल्लाह का ज़िक्र और वो चीज़ जो अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर दे और वो चीज़ जिससे अल्लाह तआ़ला की रिज़ा तलाश की जाये और वो चीज़ अल्लाह तआ़ला जिसको पसंद फ़रमाता है और आ़लिम और इ़ल्म सीखने वाला। (अगर दुनिया अल्लाह तआ़ला के नज़दीक थोड़ी सी भी अहमियत रखती तो अल्लाह तआ़ला अपने दुश्मनों को नहीं देता और जब ये दुनिया मलऊ़न है तो दुनिया का तालिब कौन होगा जो दुनिया को तलब करे)

(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4112)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/186-ह०–2322)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302-ह०–10512)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/102-ह०–6084,6088)
(हिल्यातुल औलिया–3/157)

-: दुनिया ज़लील है :-

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) एक मर्तबा बाज़ार से गुज़रते हुये मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हो रहे थे और सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) आपके दोंनों तरफ़ थे कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने देखा कि भेड़ का एक मरा हुआ बच्चा पड़ा है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से कौन इस मुर्दा बच्चे को एक दिरहम के बदले में लेना पसंद करेगा सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम में से कोई भी इस मुर्दा बच्चे को किसी चीज़ के बदले में लेना पसंद नहीं करेगा और हम इस मुर्दा बच्चे लेकर क्या करेंगे तो आप ने फ़रमाया जिस तरह तुम्हारे नज़दीक ये मुर्दा बच्चा ज़लील है इसी तरह दुनिया अल्लाह तआ़ाला के नज़दीक इस मुर्दा बच्चे से भी ज़्यादा ज़लील है।
(मुस्लिम–सहीह–6/468-ह०–7418)
(अबू दाऊद–सुनन–1/204-ह०–186)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/291-ह०–10467)
(इब्ने अबी शैबा–10/476-ह०–35532)
(मिश्कात–5/162-ह०–2148)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हम लोग रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ थे कि हमने देखा कि एक मुर्दा बकरी पैर उठाये हुये पड़ी थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो ये मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक कितनी ज़लील है क़सम खुदा की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ये दुनिया अल्लाह के नज़दीक इस मुर्दा बकरी से भी ज़्यादा ज़लील है अगर दुनिया अल्लाह तआ़ला के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो अल्लाह तआ़ला काफ़िर को दुनिया से एक क़तरा पानी भी न देता।

(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4110)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/184-ह०–2320,2321)
(नसाई–सुनन–1/279-ह०–668)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०–10465,10470)
(कंजुल उ़म्माल–2/113-ह०–6210)

–: दुनिया ग़लीज़ है :–

➡ हज़रत ज़ह्हाक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ ज़ह्हाक तुम्हारी खुराक क्या है मैने अ़र्ज़ किया कि गोस्त और दूध फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फिर उसके बाद वो खाना क्या बनकर निकलता है तो मैने अ़र्ज़ किया आप जानते हैं कि जो कुछ भी बनकर निकलता है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने

ने फ़रमाया कि खाना जो कुछ बनकर निकलता है अल्लाह तआला के नज़दीक दुनिया की मिसाल इसी जैसी है यानी ग़लाजात व नजासत।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/291-ह०–10472)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्ररहमान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक अगर दुनिया किसी चीज़ के बराबर होती तो अल्लाह तआ़ला दुनिया में से काफ़िर को मच्छर के पर के बराबर भी न देता और देखो कि इन्सान से क्या निकलता है अगरचा वो उसमें कितना ही अच्छा मसालाह और नमक वग़ैराह डाले तो ग़ौर करो कि फिर वो क्या हो जाता है (यानी लज़ीज़ चीज़ें खाता है और ग़लाज़त ख़ारिज करता है) दुनिया की मिसाल इब्ने आदम के खाने जैसी है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/291-ह०–10469,10473)
(कंजुल उ़म्माल–2/115-ह०–6212)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
पस इन्सान को चाहिये कि अपने खाने की तरफ़ देखे (और ग़ौर करे) (सू०–अबस–80/24)

–: दुनिया मुर्दार की मानिन्द है :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत दाऊद–

(अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ वही फ़रमायी कि दुनिया की मिसाल ऐसे मुर्दार की तरह है जिस पर कुत्ते जमाअ़ हो गये हों और वो उसे घसीट रहे हों। (देलमी–अल फ़िरदोस–1/177-ह०–501) (कंज़ुल उ़म्माल–2/115-ह०–6215)

–: दुनिया कूढ़े के ढेर की मानिन्द है :–

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक मर्तबा एक कूढ़े के ढेर के पास खड़े हुये और फ़रमाया आ जाओ दुनिया की तरफ़ फिर आप ने उस कूढ़े के ढेर से एक बोसीदा गले सड़े कपड़े की धज्जियाँ उठायीं व कुछ हड्डियाँ उठायीं और फिर फ़रमाया कि ऐ लोगो देखो ये दुनिया है (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/292-ह०–10471)

–: दुनिया कमीनी है :–

➡ हज़रत शाअ़बी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं इस कमीनी दुनिया से क्या तवक्को की जा सकती है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ज़हर दिया गया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ज़हर दिया गया हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को शहीद किया गया हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया गया हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) को ज़हर दिया गया, हज़रत हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को शहीद किया गया। (हाकिम–4/295-ह०–4716)

➡ हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जब दिल में दुनिया की मुहब्बत आ जाती तो दिल से आख़िरत की फ़िक्र रुख़सत हो जाती और जब दुनिया दिल में उतर जाती है तो दिल में आख़िरत दाख़िल नहीं होती चूँकि दुनिया कमीनी चीज़ है और आख़िरत इज़्ज़त मंद चीज़ है। (हिल्यातुल औलिया–9/202-13958)

➡ हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि दुनिया अपने से भागने वाले की तलाश में लगी रहती है अगर उसे पाले तो उसे ज़ख़्मी कर देती है अगर उसका तालिब उसे पाले तो उसे क़त्ल कर देती है।
(हिल्यातुल औलिया–9/202-13959)

➡ अ़रब के कुछ लोग वफ़्द की सूरत में बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ गुज़ार हुये कि हम मोमिन है आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तुम्हारे ईमान की निशानी क्या है उन्होंने अ़र्ज़ की कि हम मुसीबत पर सब्र करते है और फ़राख़ी व वुसअ़त पर शुक्र करते है और तक़दीर पर राज़ी रहते हैं ये सुनकर आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अगर तुम लोग वाक़ई ऐसे हो तो फिर तुम इतना माल जमाअ़ न करो जिसे खा न सको और तुम ऐसे मकानात न बनाओ जिनमें रह न सको और जिस दुनिया को छोड़कर तुम्हें जाना है तो इस दुनिया के मुआ़मले में आपस में मुक़ाबला न करो।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–9/209-14032)

-: दुनिया हलाकत का घर है :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ये दुनिया हलाकत का घर है ठहरने की जगह नहीं और ये ग़म का घर है खुशी का घर नहीं तो जिसने दुनिया को पहचान लिया वो दुनिया की कुशादगी से खुश नहीं होगा और ना ही दुनिया की शिद्दत पर ग़मगीन होगा सुनो रब तआ़ला ने दुनिया को आज़माइश का घर बनाया और आख़िरत को अन्जाम का घर बनाया पस दुनिया की आज़माइश को आख़िरत का सबाब बना दिया और आख़िरत का सवाब दुनिया की आज़माइश का ऐ़वज़ है पस अल्लाह तबारक व तआ़ला बेहतरीन जज़ा देने के लिये अपने बन्दों की आज़माइश करता है तो तुम दुनिया के मीठे घूँट से आख़िरत के कढ़वे घूंट की वजह से बचो और दुनिया की लज़्ज़तों से आख़िरत की मुसीबतों की वजह से बचो और इस घर के आबाद करने की कोशिश न करो जिसको वीरान करने का अल्लाह तआ़ला ने फ़ैसला कर लिया है और तुम इस दुनिया से मुहब्बत व रग़बत न रखो जिससे इजतिनाब का अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया है वरना तुम रब की नाराज़गी और उसकी सज़ा के मुस्तहिक़ हो जाओगे (अल फ़िरदौस-ह०-8186)

➡ हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे ऊपर फ़क़्र व गुरबत का ख़ौफ़ नहीं है बल्कि मुझे तुम्हारे ऊपर इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम इस दुनिया की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाओगे जैसे तुमसे पहले के लोग हो गये थे फिर इसकी तरफ़ रग़बत करोगे जैसे तुमसे पहले के लोगों ने रग़बत की थी फिर ये दुनिया तुम्हें ग़ाफ़िल कर देगी जैसे तुमसे पहले के लोगों को ग़ाफ़िल कर दिया था और ये दुनिया तुम्हें इस तरह हलाक कर देगी जैसे इस दुनिया ने उन्हें हलाक किया था।

(बुख़ारी–सहीह–4/197-ह०–4015)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/249-ह०–10291)

➡ हज़रत अम्र बिन औ़फ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम मुझे इस बात का डर है कि दुनिया कहीं तुम पर कुशादा न हो जाये जैसे तुमसे पहले के लोगों पर कुशादा हुई थी फिर तुम एक दूसरे से हसद करने लगो जैसे तुम से पहले के लोगों ने हसद किया था और ये दुनिया तुम्हें हलाक कर देगी जैसे इसने तुम से पहले के लोगों को हलाक कर दिया था।

(मुस्लिम–सहीह–6/470-ह०–7425)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/249-ह०–10292)

दुनिया की मिसाल चन्द पानी की बूँदों की मानिन्द

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया की मिसाल आख़िरत के मुक़ाबले में ऐसी है जैसे तुममें से कोई अपनी उंगली समुन्दर में डाले फिर देखे कि कितना पानी उंगली में लगता है तो उसे चाहिये कि ग़ौर करे कि उंगली जो कुछ समुन्दर से लेकर निकली है पस वही दुनिया है यानी जितना पानी उंगली में लगा रहता है गोया वो दुनिया है और जो समुन्दर में बाक़ी रहता है वो आख़िरत है।

(इब्ने माजा–सुनन–3/349-ह०–4108)
(मुस्लिम–सहीह–6/393-ह०–7197)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/324-ह०–7898)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/289-ह०–10459)

दुनिया दरख़्त तले ठहरने की मिस्ल

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया की मिसाल ऐसी है जैसे कि एक सवार एक दरख़्त के नीचे साये के लिये उतरे फिर थोड़ी देर बाअ़द वो वहां से चला जाये यानी जितनी देर वो दरख़्त तले ठहरा पस दुनिया की ज़िन्दगी इसी के मिस्ल है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2377)(इब्ने माजा–सुनन 3/349-ह०–4109)(शुअ़बुल ईमान-7/278-ह०-10415)

दुनिया सफ़र की जगह मन्ज़िल नहीं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि दुनिया में तुम इस तरह रहो जैसे कि तुम मुसाफ़िर हो या रास्ता उ़बूर करने वाले हो और जब तू सुबह करे तो अपने दिल में शाम का यक़ीन न कर और जब शाम करे तो दिल में सुबह का भरोसा न कर यानी हो सकता है सुबह से पहले ही तेरी मौत आ जाये और तुम अपना शुमार मुर्दों में करो और मौत आने से पहले नेक आअ़माल करो और तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा क्या नाम होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/192-ह०–2333)
(बुख़ारी–सहीह–6/42-ह०–6416)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4114)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/752-ह०–698)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6572)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/237-ह०–10245,46,47)

दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है। (मिश्कात–4/180-ह०–5212)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/300-ह०–10501)

दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर नहीं

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर न हो और दुनिया उसका माल है जिसका आख़िरत में कोई माल न हो और दुनिया को वो ही जमाअ़ करता है जिसमें अ़क्ल न हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/330-ह०–10638)

दुनिया व औ़रतों के फ़ित्नों से बचो

➡ हज़रत अबू सईद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया सर सब्ज़ व शीरीं है और अल्लाह तआ़ला तुम्हें दुनिया में हाकिम बनाने वाला है फिर देखेगा कि तुम कैसे अ़मल करते हो पस ग़ौर से सुनो दुनिया से बचते रहना और औ़रतों से बचते रहना क्योंकि बनी–इसराईल में सबसे पहला फ़ित्ना औ़रतों से शुरु हुआ था। (इब्ने माजा–सुनन–3/297-ह०–4000)
(मुस्लिम–सहीह–6/300-ह०–6948)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु–

तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक दुनिया मीठी सर सब्ज़ व खुशनुमा है लिहाज़ा तुम लोग दुनिया से बचना व औ़रतों से बचना और जो शख़्स इसको हक़ के मुताबिक़ हासिल करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसके लिये उसमें बरकत अ़ता फ़रमाता है और बहुत सारे लोग अल्लाह व उसके रसूल के माल में घुसते हैं उसमें जो उनका नफ़्स ख़्वाहिश करता है तो ऐसे लोगों पर क़यामत के दिन आग का अ़ज़ाब होगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/250-ह०–10301)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/250-ह०–10304)

दुनिया मोमिन के लिये क़ैद खाना और काफ़िर के लिये जन्नत है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मामिन के लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है
(मुस्लिम–सहीह–6/468-ह०–7417)
(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4113)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/525-ह०–2324)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०–10461)

➡ हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि दुनिया मोमिन का क़ैद खाना है व काफ़िर के लिये जन्नत

है और ये भी फ़रमाते हुये सुना जो लोग दुनिया में बहुत पेट भर कर खाते हैं क़यामत के दिन वो सबसे ज़्यादा भूके होंगे। (हाकिम–5/434-ह०–6545)

एक रिवायत में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुन्यावी लज़्ज़ात व शहवात को तर्क करने की वजह से दुनिया मोमिन के लिये क़ैद है (शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०-10463)

दुनिया में गदला पानी बाक़ी है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जितनी दुनिया बाक़ी है वो एक हौज़ की तरह है कि जिसका साफ़ पानी पी लिया गया है और गदला पानी बाक़ी रह गया है।
(बुख़ारी–सहीह–3/300-ह०–2964)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/295-ह०–7816)

दुनिया की रग़बत अन्धा कर देती है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने दुनिया से रग़बत की और उसकी रग़बत दुनिया से ज़्यादा हो गई तो जिस क़दर उसकी दुनिया से रग़बत ज़्यादा होगी तो–

अल्लाह तआला उसी क़दर उसके दिल को अन्धा कर देगा और जो दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करे व उसकी उम्मीदें कम हों तो अल्लाह तआला उसे बग़ैर इल्म सीखे उसे इल्म अता फ़रमाता है और बग़ैर हुसूले हिदायत के उसे हिदायत अता फ़रमाता है नीज़ फ़रमाया कि ख़बरदार अनक़रीब तुम्हारे बाद ऐसी क़ौम आयेगी जिसको बग़ैर क़त्ल और जबर के हुकूमत रास नहीं आयेगी और मालदार बुख़्ल और फ़ख़्र करेंगे और ख़्वाहिशाते नफ़्स की इताअत की वजह से दीन से निकल जायेंगे तो तुममें से जो शख़्स इस ज़माने को पाये तो वो अपने फ़क़्र (मुहताजी, मुफ़लिसी) पर सब्र करे जबकि वो मालदार बनने पर क़ादिर हो और वो सब्र करे ज़िल्लत पर जबकि वो क़ादिर हो इज़्ज़त पर और वो सब्र करे लोगों के बुग्ज़ व नफ़रत पर जबकि वो क़ादिर हो मुहब्बत पर और वो ये सब कुछ अल्लाह तआला की रिज़ा के लिये बर्दाश्त करे तो अल्लाह तबारक व तआला उसको पचास सिद्दीक़ो का सबाव अता फ़रमायेगा।
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–7/317-ह०–10582)
(हिल्यातुल औलिया–8/35)

दुनिया से मुहब्बत आख़िरत का नुक़सान

➡हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपनी दुनिया से मुहब्बत करता है

वो अपनी आख़िरत को नुकसान पहुँचाता और जो शख़्स अपनी आख़िरत से मुहब्बत करता है वो शख़्स अपनी दुनिया को नुक़सान पहुँचाता है लिहाज़ा तुम फ़ना होने वाली पर बाक़ी रहने वाली चीज़ को तरजीह दो यानी आख़िरत को दुनिया पर तरजीह दो। (हाकिम–6/295-ह०–7816) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/259-ह०–10336)

दुनिया की मुहब्बत के सबब दीगर क़ौमों का मुसलमानों पर ग़ालिब आना

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो वक़्त क़रीब है कि जब दीगर अक़वाम तुम्हें मिटाने के लिये (मिलकर साज़िश करेंगी और) एक दूसरे को इस तरह बुलाऐंगी जैसे दस्तर ख़्वान पर खाना खाने वाले (लज़ीज़) खाने की तरफ़ एक दूसरे को बुलाते हैं किसी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या उस वक़्त हमारी ताअ़दाद कम होने की वजह से हमारा ये हाल होगा तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं बल्कि तुम उस वक़्त कसीर ताअ़दाद में होगे अलबत्ता उस वक़्त तुम सैलाब की झाग की तरह नाकारा होगे और अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा रोअ़ब व दबदबा निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में बुज़दिली डाल देगा पस सहाबा–किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह बुज़दिली से क्या मुराद है तो

पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया से मुहब्बत व मौत से बेज़ारी व कराहत। (अबू दाऊद–सुनन–5/295-ह०–4297) (अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–5/278-ह०–2245) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/267-ह०–10372)

इस्लाम और मुसलमानों की हैबत और ग़लबे का राज़ कसरते ताअ़दाद नहीं है बल्कि तक़्वा और परहेज़गारी और अल्लाह व रसूल की इताअ़त गुज़ारी है और दुनिया से मुहब्बत व आख़िरत से बेफ़िक्री बहुत बड़ा फ़ित्ना है और जो शख़्स इसमें मुब्तिला हुआ उसने अपनी दुनिया व आख़िरत दोंनों ख़राब कर लीं और दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और आख़िरत से बे फ़िक्री उसकी हलाकत का सबब बनेगी।

आख़िरत वाले अ़मल के ज़रिये दुनिया तलब करने की मज़म्मत

➡ हज़रत जारुद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने आख़िरत वाले अ़मल के ज़रिये दुनिया तलब की तो उसका चेहरा बिगाड़ दिया जायेगा और उसका ज़िक्र मिटा दिया जायेगा और उसका नाम जहन्नम वालों में लिख दिया जायेगा और उसका आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/137-ह०-2085) (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/295-ह०–7816)

दुनिया से मुहब्बत व रग़बत रखने वाला नमाज़ी भी अच्छा नहीं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि तुम्हें कोई इन्सान ज़्यादा अच्छा न लगे अगर वो नमाज़ पढ़ता हो और रोज़े रखता हो बल्कि ये देखो कि वो दुनिया से किस क़दर दूर भागता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/3041-ह०–10513)

आ़लिमे दीन की दुनिया से मुहब्बत व रग़बत अल्लाह से दूरी का सबब है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का इ़ल्म ज़्यादा हो और उसकी दुनिया से बे रग़बती ज़्यादा न हो तो वो अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा दूर हो जाता है। (कंजुल उ़म्माल–5/431-ह०–29016)
(देलमी–अल फ़िरदौस–4/254-ह०–6298)

दुनिया से बेरग़बती के सबब हिकमत व फ़िरासत अ़ता की जाती है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी–

शख़्स में दुनिया से बेरग़बती और क़िल्लत कलाम देखो यानी कम बोलने वाला देखो तो उसका कुर्ब हसिल करो क्योंकि उसको हिकमत व दानाई अ़ता की गई है। (इब्ने माजा–सुनन–3/346-ह०–4101) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/306-ह०–10529)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते है कि जो शख़्स दुनिया से बे रग़बत हो जाये तो रब तआ़ाला हिकमत व फ़िरासत उसके दिल में सब्त फ़रमा देता है और अल्लाह तआ़ाला उसकी ज़बान को हिकमत व फ़िरासत (दानाई) के साथ बुलवाता व उसकी नज़र को दुनिया के ऊ़यूब व उसकी बुराईयाँ दिखाता है और दुनिया की सब बीमारियाँ व उसका इलाज दिखाता है फिर दुनिया से उसे जन्नत की तरफ़ सहीह व सालिम उठाता है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/306-ह०–10532)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो जाये तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला उसे दानाई व हिकमत अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ाला उसी दानाई व हिकमत के साथ उसकी ज़बान को बुलवाता है और दुनिया के ऐ़ब व बुराई उसकी नज़र को दिखाता है और उस ऐ़ब व बुराई से बचने का तरीक़ा भी बतलाता है और रब तआ़ाला उसको दुनिया से जन्नत की तरफ़ सलामती वाला सहीह व सालिम निकालता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/307-ह०–10531)

ग़ाफ़िल कर देने वाली कसीर चीज़ से क़लील चीज़ बेहतर है

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया हर एक दिन का सूरज जब तुलूअ़ होता तो उसके दोंनों पहलुओं के साथ दो फ़रिश्ते भेजे जाते है वो दोनों फ़रिश्ते जिन्न व इन्सान के सिवाय ज़मीन पर रहने वाली तमाम मख़लूक़ात को ऐअ़लान करते हैं और वो कहते हैं कि ऐ लोगो तुम अपने रब की इताअ़त की तरफ़ आ जाओ बेशक जो चीज़ क़लील हो और किफ़ायत करे वो बेहतर होती है उस कसीर चीज़ से जो तुम्हें ग़ाफ़िल कर दे और हर एक दिन का सूरज जब गुरुब होता है तो उसके दोनों तरफ़ दो फ़रिश्ते भेजे जाते जो ऐअ़लान करते हैं और वो दुअ़ा करते हैं कि ऐ अल्लाह राहे खुदा में ख़र्च करने वालों को ख़र्च करने के बाद मज़ीद अ़ता फ़रमां और रोक कर रखने वालों का माल ज़ाए कर दे (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/267-10373)

दुनिया से बेरग़बती के सबब अल्लाह तअ़ाला की मुहब्बत नसीब होती है

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़–

किया या रसूलल्लाह मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें कि अल्लाह तआ़ला भी मुझसे मुहब्बत करे और लोग भी मुझसे मुहब्बत करें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तू दुनिया से बेरग़बत हो जा अल्लाह तआ़ला तुझसे मुहब्बत करेगा और जो कुछ लोगों के पास है उससे बेरग़बत हो जा लोग भी तुझसे मुहब्बत करेंगे। (इब्ने माजा–सुनन–3/347-ह०–4102)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/314-ह०–7873)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/193-ह०–5972)
(देलमी–अल फ़िरदोस–1/524-ह०–1763)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तू दुनिया से बेरग़बत हो जा अल्लाह तआ़ला तुझे अपना महबूब बना लेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/304-ह०–10522)

दुनिया से बेरग़बती के सबब इ़ल्म व हिदायत अ़ता की जाती है

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे बग़ैर इ़ल्म सीखे इ़ल्म अ़ता फ़रमाता और बग़ैर किसी वास्ते के हिदायत अ़ता फ़रमाता है। (हिल्यातुल औलिया–1/80-225)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/318-ह०–10582)

दुनिया से बेरग़बती क़ल्ब व जिस्म को राहत व सुकून बख़्शती है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया से बेरग़बती क़ल्ब और जिस्म को राहत व सुकून बख़्शती है और दुनिया से रग़बत फ़िक्र व ग़म को तवालत देती है यानी फ़िक्र व ग़म को मज़ीद बढ़ा देती है (तबरानी–मुअ़जम औसत–6/177-ह०-6120)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/347-ह०–10536)
(देलमी–अल फ़िरदोस–2/299-ह०–3364)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/75-ह०–4857)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों में सबसे बेहतरीन शख़्स वो है जो दुनिया से बेरग़बत हो जाये और आख़िरत के लिये सबसे ज़्यादा रग़बत रखने वाला हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/304-ह०–10518)

आख़िरत की फ़िक्र वालों की दुनियावी फ़िक्रें अल्लाह अपने ज़िम्मे ले लेता

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सब फ़िक्रों को छोड़कर सिर्फ़ एक फ़िक्र रखे यानी

आख़िरत की फ़िक्र तो रब तआ़ला उसकी दुनिया की तमाम फ़िक्रें अपने ज़िम्मे ले लेगा और जो शख़्स तरह तरह की दुनिया की फ़िक्रों में लगा रहेगा तो अल्लाह तआ़ला उसकी पर'वाह न करेगा वो जिस वादी में चाहे हलाक हो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/348-ह०–4106)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि इब्ने आदम अगर तू मेरी इ़बादत में मशगूल रहेगा तो मैं तेरा सीना बेनियाज़ी से भर दूँगा और तेरा फ़क्र व मुफ़लिसी दूर करूँगा और मुहताजी तुझसे दूर रखूँगा और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तेरे हाथ काम काज की मसरुफ़ियत से भर दूँगा और तेरी मुहताजी कभी ख़त्म नहीं करूँगा (तिर्मिज़ी–सुनन–2/281-ह०-2466)
(इब्ने माजा–सुनन–3/349-ह०–4107)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/453-ह०–3657)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/258-ह०–10339)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस क़दर हो सके दुनिया की फ़िक्र से खाली रहो क्योंकि जिस शख़्स की सबसे बड़ी फ़िक्र दुनिया बन जाये तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम ज़ाए कर देता है और फ़िक्र व फ़ाक़ा का ख़ौफ़ हर वक़्त उसके

सर पर मुसल्लत कर देता है और जिस शख़्स ने अपनी सबसे बड़ी फ़िक्र फ़िक्रे आख़िरत बना ली तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम बना देता है और उसके दिल में इस्तग़फ़ार रख देता है।
(हिल्यातुल औलिया–1/198-766)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/103-6077)

दुनिया की फ़िक्र वाला फ़क़ीर

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस बन्दे की निगाह का मरकज़ दुनिया हो तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़रुरियात को फैला देता है और उसकी मुहताजी को उसकी आँखों के सामने कर देता है लिहाज़ा वो शख़्स सुबह को भी फ़क़ीर होता है और शाम को भी फ़क़ीर होता है और जिस शख़्स की फ़िक्र फ़िक्रे आख़िरत हो तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल को ग़नी कर देता है लिहाज़ा वो सुबह करता है तो ग़नी होता है और शाम करता है तो भी ग़नी होता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/260-ह०–10341)

आख़िरत की फ़िक्र वालों के पास दुनिया ज़लील होकर आती है

➡ हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का मक़सूद दुनिया हो तो अल्लाह तआ़ला उसके काम में परेशानी हाइल कर देगा और उसकी मुफ़लिसी दोंनों आँखों के दरमियान कर देगा और दुनिया उसको उतनी ही मिलेगी जितनी उसकी तक़दीर में लिखी है और जिसकी नियत आख़िरत की तरफ़ हो तो अल्लाह तआ़ला उसके सब काम दुरस्त कर देगा और उसके दिल में बे पर'वाही डाल देगा और दुनिया उसके पास ज़लील होकर आती है। (इब्ने माजा–सुनन–3/348-ह०–4105)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/259-ह०–10338)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो आख़िरत की फ़िक्र रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसका दिल ग़नी कर देता है और उसके दिल में बेपरवाही डाल देता है और उसके बिखरे हुये कामों को जमाअ़ कर देता है और दुनिया उसके पास ज़लील होकर आती है और जो शख़्स आख़िरत की बजाये दुनिया की फ़िक्र रखता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी दोंनो आँखों के सामने मुहताजी हाइल कर देता है और उसे मशक़्क़तों व परेशानियों में मुब्तिला कर देता है और उसके जमाअ़ किये हुये कामों को मुन्तशिर कर देता है और इस दुनिया का मालो मताअ़ उसे उतना ही मिलता है जितना उसके मुक़द्दर में होता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/280-ह०–2465)

आख़िरत के सिवा कोई ज़िन्दगी नहीं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरत की ज़िन्दगी के अ़लावा कोई ज़िन्दगी नहीं। (बुख़ारी–सहीह–6/41-ह०-6413) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/237-ह०–10245)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि दुनिया पीठ फेरने वाली है और आख़िरत सामने आ रही है इन दोंनों (दुनिया व आख़िरत) में से हर एक के तालिब हैं सो तुम आख़िरत के तलबगार बनो दुनिया के चाहने वाले न बनो बिला शुबा आज अ़मल का मौक़ाअ़ है मगर हिसाब नहीं और कल हिसाब होगा मगर अ़मल का मौक़ाअ़ नहीं मिलेगा।
(बुख़ारी–सही–किताबु र्रिक़ाक़–6/43)

अल्लाह तआ़ाला से हया करो जैसा हया करने का हक़ है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला से हया करो जिस तरह हया करने का हक़ है तो हमने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह अल्लाह का शुक्र है कि हम हया करते है तो फिर आपने

फ़रमाया उससे हया करने का जो हक़ है वो ये है कि तुम सर व उसके निचले हिस्से की हिफ़ाज़त करो यानी आँख, कान व ज़बान और दिल की हिफ़ाज़त करो और पेट की और उसके निचले हिस्से की हिफ़ाज़त करो यानी कम व हलाल गिज़ा खाना और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना और अपनी मौत व अपनी हड्डियों के गल सड़ जाने को याद रखो और फिर जो शख़्स आख़िरत का इरादा करता तो वो शख़्स दुनिया की ज़ीनत को तर्क करता है और जिसने ऐसा किया उसने अपने रब से इस तरह हया की जिस तरह हया करने का हक़ है (तिर्मिज़ी–सुनन–2/272-ह०–2458)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/331-ह०–7915)
(इब्ने अबी शैबा–10/458-ह०–35461)

बद तरीन शख़्स है वो जो दुनिया की ख़ातिर आख़िरत बर्बाद करले

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया लोगों में सबसे बद तरीन शख़्स वो है जो दुनिया की ख़ातिर अपनी आख़िरत बर्बाद कर ले। (इब्ने माजा–सुनन–3/285-ह०–3966)

–: आख़िरत की याद में रोना :–

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरत

की याद करके रोओ और अगर रोना न आये तो रोने जैसी सूरत बनाओ।
(इब्ने माजा–सुनन–3/372-ह०–4196)

जन्नत में एक कमान की जगह दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जन्नत में एक कमान की जगह दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है। (बुख़ारी–सहीह–3/216-ह०–2793) और एक रिवायत में है कि जन्नत में एक कोढ़े की मिक़दार जगह दुनिया और दुनिया की हर चीज़ से बेहतर है।
(बुख़ारी–सहीह–3/474-ह०–3250)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बन्दो के लिये जन्नत में वो सामान और लज़्ज़तें तैयार की है जिनको किसी आंख ने न देखा और न ही किसी कान ने सुना और न ही किसी शख़्स के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा।
(बुख़ारी–सहीह–3/471-ह०–3244)
(इब्ने माजा–सुनन–3/414-ह०–4328)

अ़क़्लमंद शख़्स वो जो मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे

➡ शद्दाद बिन औ़स (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क़्ल मंद वो है जो अपने नफ़्स को इ़बादत में लगाये और मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे और बेवक़ूफ़ वो है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैर'वी करे और रब तआ़ला की रहमत पर तकब्बुर करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/273-ह०–2459)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/588-ह०–6516)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा अ़क़्ल मंद वो शख़्स है जो सबसे ज़्यादा ज़िक्रे इलाही करने वाला हो और वो अपनी मौत के बाअ़द के लिये सबसे ज़्यादा तैयारी करने वाला हो और ऐसे ही लोग सबसे ज़्यादा अ़क़्ल मंद हैं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/311-ह०–10549)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़क़्लमंद वो होता है जो अपने नफ़्स का मुहासिबा करे और मौत के बाअ़द के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ वो है जिसका नफ़्स ख़्वाहिशात के ताबेअ़ हो फिर भी अल्लाह तआ़ला पर उम्मीद क़ायम करे (शुअ़बुल ईमान-ह०-10545)

ख़्वाहिशात की पैर'वी करने वाला बदकार

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो शख़्स बहुत बुरा है जो खुद को दूसरों से अच्छा समझे और तकब्बुर करे और बुलन्द व बाला ज़ात यानी खुदाये रहमान को भूल जाये और वो शख़्स बहुत बुरा है जिसने लोगों पर जुल्म व ज़्यादती की और वो जाबिर व ज़ालिम बन गया और जब्बार बरतर को भूल गया वो शख़्स भी बहुत बुरा है जो खेल कूद में मशगूल हो गया और भूल गया वो क़ब्रों को और हड्डियों के गल सड़ जाने को और वो शख़्स भी बहुत बुरा है जिसने सरकशी और रब की ना फ़रमानी की और वो अपनी ख़िलक़त व अपने अन्जाम को भूल गया वो शख़्स बहुत बुरा है जो उमूरे दीन से दुनिया तलब करता है यानी जिसने दीन को दुनिया कमाने का ज़रिया बनाया और वो शख़्स भी बहुत बुरा है जिसने हिर्स व लालच को अपना रहनुमा बना लिया है वो शख़्स बहुत बुरा है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात का पुजारी हो गया और उसको नफ़्सानी ख़्वाहिशात गुमराह करती है वो शख़्स भी बहुत बुरा है जिसको हिर्स ज़लील करती है (तिर्मिज़ी–सुनन–2/268-ह०–2448)

➡ हज़रत सलमा बिन अक़्वाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान अपने नफ़्स की पैर'वी में बराबर लगा रहता है यहाँ तक कि उसे ज़ालिमों में लिख दिया जाता है और उसे वही अन्जाम दिया जायेगा जो ज़ालिमों को दिया जायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1072-ह०–2000)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें हलाक करने वाली है 1- नफ़्स की इताअ़त 2- व ख़्वाहिश की इत्तेबाअ़ 3- और तकब्बुर व खुद पसंदी।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/451-ह०–745)

बेवकूफ़, कम अ़क़्ल दुनिया के लिये जमाअ़ करता है

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर न हो और दुनिया उसका माल है जिसका आख़िरत में कोई माल न हो और दुनिया के लिये वो जमाअ़ करता है कि जिसमें अ़क़्ल न हो। (मिश्कात–4/178-ह०–5211)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/330-ह०–10638)
(देलमी–अल फ़िरदोस–2/353-ह०–2931)

धोके वाले घर के लिये कोशिश करने वाले पर तअ़ाज्जुब

➡ हज़रत अबू जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस शख़्स पर इंतिहाई तअ़ाज्जुब है जो दायमी ज़िन्दगी वाले घर (यानी आख़िरत) की तस्दीक़ तो करता है लेकिन कोशिश वो धोके वाले घर (यानी दुनिया) के लिये करता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/308-ह०–10539)

➡ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं उस ग़ाफ़िल बन्दे पर तअ़ाज्जुब करता हूँ कि जिसका अल्लाह तअ़ाला पूरा पूरा ख़्याल रखता है यानी अल्लाह तअ़ाला उसको मालो असबाब व नेअ़मतें अ़ता करता है फिर भी वो बन्दा अल्लाह तअ़ाला की याद से ग़ाफ़िल व उसका नाफ़रमान रहता है और मैं तअ़ाज्जुब करता हूँ उस बन्दे पर जो कि दुनिया की लम्बी आरज़ूऐं लिये फिरता है और मौत उसकी तलाश में है और मैं उस शख़्स पर तअ़ाज्जुब करता हूँ जो मुँह फाड़ कर हंसता है मगर वो नहीं जानता कि अल्लाह तअ़ाला उससे राज़ी है या नाराज़।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/319-ह०–10587)

दुनिया की हिर्स हलाकत का सबब

➡ हज़रत उ़क़्बा बिन अ़ामिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम मैं अपने बाद तुम्हारे मुताअ़ल्लिक़ शिर्क में मुब्तिला होने का अंदेशा नहीं रखता लेकिन मुझे ख़तरा है कि तुम दुनिया से रग़बत रखते हुये एक दूसरे के आगे बढ़ने की कोशिश करोगे और तुम दुनिया के लालच में एक दूसरे से हसद करने लगोगे और तुम आपस में लड़ोगे और उसी तरह हलाक हो जाओगे जिस तरह तुमसे पहले के लोग हलाक हुये।
(मुस्लिम–सहीह–4/448-ह०–5977,5976)
(बुख़ारी–सहीह–2/110-ह०–1344,3596,4042)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/473-ह०–3198)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे ऊपर फ़क़्र व मुहताजी का ख़ौफ़ नहीं रखता बल्कि मैं तुम्हारे बारे में कसरते माल की हिर्स व तलब में एक दूसरे से सबक़त ले जाने की दौड़ धूप से डरता हूँ और मैं तुम्हारे बारे में ग़लती व गुनाह से नहीं डरता हूँ बल्कि मैं तुम्हारे ऊपर क़सदन गुनाह व ग़लत काम करने से डरता हूँ।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/253-ह०–10313)

आज अ़मल का मौक़ाअ़ है हिसाब नहीं कल हिसाब होगा अ़मल नहीं

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत पर दो बातों का ज़्यादा ख़ौफ़ है ख़्वाहिशात की पैर'वी करना और लम्बी आरज़ुऐं व उम्मीदें रखना और ख़्वाहिशात की पैर'वी हक़ से रोकती और लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुला देती हैं ये दुनिया पीठ फेर कर जाने वाली है और आख़िरत पेश आने वाली है तो तुम दुनिया वाले न बनो बेशक तुम आज दारुल अ़मल में हो जहाँ हिसाब व किताब नहीं है और कल तुम दारुल हिसाब में होगे वहाँ अ़मल न होगा। (इब्ने अबी शैबा–10/507-35636) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/326-ह०–10616)

➡ उम्मुल वलीद बिन्ते उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुमा) से रिवायत है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो तुम हया नहीं करते लोगों ने अ़र्ज़ किया कि किस चीज़ से हया आपने फ़रमाया तुम उन चीज़ों को जमाअ़ करते हो जिनको खा न सकोगे और उन मकानो को बनाते हो जिनमें तुम रह न सकोगे और तुम उन चीज़ों की उम्मीद रखते हो जिनको तुम पा न सकोगे क्या तुम इससे हया नहीं करते।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–25/172-ह०–421)

दुनिया को दीन पर तरजीह देने वाले से अल्लाह नाराज़ होता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बन्दा जब अपनी दुनिया को दीन पर तरजीह देता है फिर अगर वो ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही दे तो अल्लाह तआ़ला उस पर नाराज़ होता है और फ़रमाता है कि तू झूठा है। (शुअ़बुल ईमान–7/300-ह०–10497,10498)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुबह करे और उसकी फ़िक्र व ग़म ग़ैरुल्लाह के लिये हो तो उसका अल्लाह तआ़ला के साथ कोई तआ़ल्लुक़ नहीं (शुअ़बुल ईमान–7/304-ह०–10517) (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/320-ह०–7889)

अगर लोग दुनिया की हक़ीक़त जानते तो दुनिया से दिल से उचाट हो जाते

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम लोग दुनिया की हक़ीक़त जानते जितना कि मैं जानता हूँ तो तुम्हारे दिल दुनिया से उठ जाते और उचाट हो जाते ।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/257-ह०–10330)

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक दुनिया ना पसंदीदा शैः है

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला ने ऐसी कोई मख़्लूक़ पैदा नहीं फ़रमाई जो उसके नज़दीक दुनिया से ज़्यादा ना पसंदीदा हो और बेशक रब तआ़ला ने जब से दुनिया को पैदा फ़रमाया उसकी तरफ़ कभी नज़रे रहमत नहीं फ़रमाई।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/301-ह०–10500)
(कंजुल उम्माल–2/114-ह०–6216)

रोज़े क़यामत इस दुनिया को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि क़यामत के दिन दुनिया को लाया जायेगा और फिर कहा जायेगा अ़लैहदा करो इसमें से जो कुछ इसमें अल्लाह के लिये है (यानी जो कुछ हिस्सा अल्लाह तआ़ला के लिये होगा वो अलग कर दिया जायेगा) और बाक़ी सारी दुनिया को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/3041-ह०–10515)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का खुद को दुनिया से दूर रखना

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के हमराह बैठा हुआ था तो मैंने देखा कि आप किसी चीज़ को अपने आप से हटा रहे हैं और दिफ़ाअ़ कर रहे हैं जबकि मैंने आपके पास किसी शैः को नहीं देखा लिहाज़ा मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप किस चीज़ को अपने आप से हटा रहे हैं तो आप ने फ़रमाया कि ये दुनिया थी जो मेरे पास शक्ल तब्दील करके आयी थी मैंने उससे कहा कि तू मुझसे दूर हो जा और फिर मैं अपनी हालत पर लौट आया और फिर उसने मुझसे कहा कि आप ने मुझसे छुटकारा पा लिया मगर जो लोग आपके बाअ़द होंगे वो मुझसे हरगिज़ छुटकारा व रिहाई न पा सकेंगे (इब्ने अबी शैबा–10/480-ह०–35554) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/303-ह०–10518)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से फ़रमाते हैं कि मिस्कीनों से मुहब्बत रखो क्योंकि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ये दुआ़ फ़रमाते थे ऐ मेरे रब मुझे अपनी तरफ़ हालते फ़क़ीरी व मुहताजी में उठाना मुझे मालदार और ग़नी बनाकर अपनी तरफ़ न उठाना और क़यामत के दिन मुझे मिस्कीनों के गिरोह के साथ उठाना और बेशक बदबख़्तों का बदबख़्त होगा वो शख़्स जिस पर दुनिया का फ़क्र व आख़िरत का अ़ज़ाब जमाअ़ हो जाये (तिर्मिज़ी–2/203-ह०-2352)
(इब्ने माजा–सुनन–3/354-ह०–4126)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/301-ह०–10506,10507)

इब्ने आदम के लिये चन्द चीज़ों के सिवा कोई हक़ नहीं

➡ हज़रत उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इब्ने आदम के लिये इन चीज़ों के सिवा कोई हक़ नहीं है इब्ने आदम के पास सुकूनत के लिये घर हो और इतना कपड़ा हो जिससे वो अपनी शर्मगाह को छुपा सके और रोटी और पानी।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/199-ह०–2341)
(मुस्नद अल बज़्ज़ार– 2/70-ह०–414)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/145-ह०–145)
(कंजुल उ़म्माल–3/637-ह०–16597)

अल्लाह तआ़ला अपने मख़सूस बन्दों को दुनिया से दूर रखता है

➡ हज़रत क़तादा बिन नुअ़मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुनिया से इस तरह बचाता है जैसे तुम अपने किसी बीमार को पानी से बचाते हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1087-ह०–2037)

एक रिवायत में है रब तआ़ला फरमाता है कि मैं अपने दोस्तों को दुनिया की नेअ़मतों से इस तरह दूर रखता हूँ जिस तरह मेहरबान चर‘वाहा अपने ऊँटों को ख़ारिश ज़दा ऊँटों से अलग रखता है। (अहमद बिन हम्बल–अज़्ज़ुहद–99/341,342)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसमें तीन ख़सलतें पैदा करता है 1- दीन की समझ व 2- दुनिया से बेरग़बती और अपने ऐ़बो पर नज़र (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/308-ह०–10535)

दुनिया की तकलीफ़ो मुसीबत में बन्दे की भलाई पोशीदा होती है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे बीमारियों व तकालीफ़ व आज़माइशों में मुब्तिला कर देता है। (बुख़ारी–सहीह–5/422-ह०–5645)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/64-ह०–2907)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मर्द व औ़रत के जान व माल और औलाद में मुसीबत–

रहती है यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०–2399)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वाले को जब अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम सवाब और मरातिब अ़ता फरमायेगा तो दुनिया में आफ़ियत व ऐश व आराम में रहने वाले लोग उनके सवाब व मरातिब को देखकर तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

काफ़िरों को उनके नेक अ़मल का बदला दुनिया में ही दे दिया जाता

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई काफ़िर कोई नेक अ़मल करता है तो उसे उस नेक अ़मल का बदला दुनिया में ही मिल जाता है हत्ता कि जब वो आख़िरत में पहुँचेगा तो उसके पास कोई नेक अ़मल नहीं होगा जिसका अज्र उसे दिया जाये और मोमिन की नेकियों का बदला अल्लाह–

तअ़ाला आख़िरत के लिये रख छोड़ता है और दुनिया में भी उसको अ़ता फ़रमाता है। (मुस्लिम–सहीह–6/366-ह०–7089)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप रब तअ़ाला से दुअ़ा कीजिये कि अल्लाह तअ़ाला आपकी उम्मत पर वुसअ़त फ़रमाये क्योंकि उसने ईरान व रोम के लिये वुसअ़त करके उन्हें दुनिया अ़ता फ़रमाई है जबकि वो अल्लाह तअ़ाला की इ़बादत भी नहीं करते तो आपने फ़रमाया ऐ उ़मर ये वो लोग हैं जिन्हें उनके हिस्से की चीज़ें दुनिया में ही दे गई हैं। (बुख़ारी–सहीह–2/692-ह०–2467)

➡ हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि दुनिया मोमिन के लिये क़ैद ख़ाना है व काफ़िर के लिये जन्नत है और ये भी फ़रमाते हुये सुना जो लोग दुनिया में बहुत पेट भर कर खाते हैं क़यामत के दिन वो सबसे ज़्यादा भूके होंगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/434-ह०–6545)

➡ हज़रत उ़क़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तअ़ाला बन्दों को उनकी नाफ़रमानी–

के बा बुजूद उनकी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ अ़ता कर रहा है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ये उनको ढील है। (मुस्नद अहमद–6/122-ह०-17313)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को ढील देता है लेकिन अल्लाह तआ़ला जब उन ज़ालिमों को अपनी गिरफ़्त में लेता है तो फिर उन्हें नहीं छोड़ता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई ''तेरे पर'वर दिगार की पकड़ का यही तरीक़ा है जब वो बस्तियों के रहने वाले ज़ालिमों को पकड़ता है बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली और निहायत सख़्त है।'' (सू०–हूद–11/102) (इब्ने माजा–सुनन–3/304-ह०–4018)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन दोज़ख़ का सबसे हल्का अ़ज़ाब पाने वाले से पूछेगा कि अगर तुझे रुये ज़मीन की तमाम चीज़ें मयस्सर हों तो क्या तू दोज़ख़ के अ़ज़ाब से निजात पाने के बदले में उन तमाम चीज़ों को दे देगा तो वो कहेगा हाँ। (बुख़ारी–सहीह–6/108-ह०–6557)

-: माल की मज़म्मत :-

माल फ़ित्ना है

➡ हज़रत काअ़ब बिन इ़याज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़ित्ना होता था और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है। (तिर्मिज़ी-सुनन-2/194-ह०-2336)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/252-ह०-10309)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-4/305-ह०-3223)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-19/179-ह०-404)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-6/323-ह०-7896)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक मर्तबा नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे कि हज़रत हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) आये उन दोंनों शहज़ादों ने सुर्ख़ कपड़े पहन रखे थे और गिरते गिराते (यानी बचपन की उ़म्र की वजह से) चले आ रहे थे उन दोंनों शहज़ादों को देखकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने खुत्बा रोक दिया और मिम्बर से उतरकर उन्हें उठा लिया और फिर दोबारा मिम्बर पर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ‘‘बेशक तुम्हारे अमवाल व औलाद बस फ़ित्ना ही हैं’’ कि देखो मैंने इन दोंनों को देखा कि वो अपने कुर्तों में गिरते चले आ रहे हैं तो मैं सब्र न कर सका (यानी मुझे घबराहट-

हुई कि गिरकर इन्हें कहीं चोट न लग जाये और मैंने ख़ुत्बा मौक़ूफ़ करके इन्हें उठा लिया)
(इब्ने माजा–सुनन–3/163-ह०–3600)
(अबू दाऊद–सुनन–1/784-ह०–1109)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1092-ह०–3774)
(नसाई–सुनन–3/456-ह०–4993)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/127-ह०–6039)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मीठी सर सब्ज़ है और अल्लाह तआ़ाला तुम्हारे आअ़माल को जानने वाला है कि तुम कैसे आअ़माल करते हो सो तुम दुनिया व अ़ौरतों के फ़ित्नों से बचो।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6511)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/251-ह०–10301,10304)

दीनार व दिरहम का बन्दा तबाह हो

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दीनार व दिरहम का बन्दा तबाह हो और दोज़ख़ में औंधा गिरे और खुदा करे कि जब उसको कोई काँटा लगे तो वो कभी न निकले। (ये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम की बद्दुआ़ा है माल के हरीस व लालची शख़्स के लिये)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4136)

दीनार व दिरहम का बन्दा मलऊ़न है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दीनार व दिरहम का बन्दा मलऊ़न है (यानी लाअ़नत किया गया, मरदूद) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/216-ह०–2375)

माल वाले नुक़सान उठाने वाले हैं

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पास हाज़िर हुआ उस वक़्त आप बैतुल्लाह के साये में तशरीफ़ फ़रमां थे जब आपने मुझे देखा तो फ़रमाया रब्बे काअ़बा की क़सम वही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं जो बहुत माल वाले हैं मगर जिसने ख़र्च किया इधर उधर और जिधर मुनासिब हुआ और राहे खुदा में दिया आगे से पीछे से और दाँये और बाँये से और ऐसे लोग थोड़े हैं।
(मुस्लिम–सहीह–3/28-ह०–2300)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने आदम जो चीज़ ज़रुरत से ज़्यादा हो उसे राहे खुदा में–

ख़र्च करता रह ये तेरे लिये बेहतर है और ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है।
(मुस्लिम–सहीह–3/60-ह०–2388)
(नसाई–सुनन–2/154-ह०–2336)

दुनिया में मालदार क़यामत में ग़रीब

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा जो लोग दुनिया में मालदार हैं क़यामत के दिन वही लोग नादार (मुफ़लिस, कंगाल, मुहताज) होंगे मगर जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल दिया और वो उसे दाँये बाँये और आगे पीछे और कारे ख़ैर में ख़र्च करे।
(बुख़ारी–सहीह–6/55-ह०–6443)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/282-ह०–10431)

माल का हरीस कभी सेर नहीं होता

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे बारे में किसी चीज़ का डर नहीं सिवाये दुनिया की उस ज़ीनत के जो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये ज़ाहिर करेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया क्या ख़ैर भी शर को लाती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़ैर तो ख़ैर ही लाती है लेकिन देखो बरसात

जो कुछ उगाती है वो ख़ैर है या नहीं लेकिन वो जानवरों को मार डालती या मौत के क़रीब कर देती है सिवाये उन जानवरों के जो कि सिर्फ़ चारा या सब्ज़ा इस क़दर खाते हैं कि उनकी कोखें फूल जाती हैं फिर वो (मज़ीद खाने के बजाए) सूरज का रुख़ कर लेते हैं और पाखाना या पेशाब करते हैं और जब पहला खाना हज़्म हो जाता है तब वो दोबारा खाते हैं इसलिये उसमें बरकत डाल दी जाती है इसी तरह जो शख़्स माल को अपने हक़ के मुताबिक़ लेगा और उसको सही जगह ख़र्च करेगा और तो उसके लिये उस माल में बरकत दी जाती है और जो शख़्स नाहक़ माल लेगा तो उसके माल में बरकत नहीं होती और वो उस जानवर की तरह है जो खाता है लेकिन सेर नहीं होता। (इब्ने माजा–सुनन–3/295-ह०–3995)
(मुस्लिम–सहीह–2/385-ह०–2421)
(इब्ने अबी शैबा–10/473-ह०–35522)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माले दुनिया सर सब्ज़ और मीठा है और मुसलमानो का अच्छा साथी है माल का जो हिस्सा मिस्कीन यतीम और मुसाफ़िर को दिया वो अच्छा साथी है और जो माल को नाहक़ लेता है वो उस जानवर की तरह है जो खाता है लेकिन सेर नहीं होता और ये माल उसके ख़िलाफ़ क़यामत के दिन गवाही देगा। (मुस्लिम–सहीह–2/387-ह०–2423)

➡हज़रत हकीम बिन हिज़ाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) फ़रमाते है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया का माल शीरीं (मीठा) व हरा भरा व तरो ताज़ा है जो इसे नेक नीयत से ले तो उस माल में बरकत दी जाती है और जो इसको लालच से लेगा तो उस माल में बरकत नहीं दी जाती है और वो उस शख़्स की तरह हो जाता है जो खाये मगर शिकम सेर न हो और याद रखो कि ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है। (बुख़ारी–सहीह–6/56-ह०–6441)
(मुस्लिम–सहीह–2/375-ह०–2387)
(नसाई–सुनन–2/153-ह०–2535)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/247-ह०–10288)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/304-ह०–3220)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्निफ़–11/102-ह०–20041)

दुनिया में सेर होकर खाने वाले रोज़े क़यामत भूके रहेंगे

➡हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास एक शख़्स ने डकार ली तो अपने फ़रमाया कि अपनी डकार को रोको दुनिया में ज़्यादा सेर होकर खाने वाले क़यामत के दिन ज़्यादा भूके रहेंगे (इब्ने माजा–3/90-ह०–3350)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/159-ह०–2578,369)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/435-ह०–6545)
(कंजुल उ़म्माल–2/116-ह०–6218)

बूढ़े में दो चीज़ें जवान रहती हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी बूढ़ा होता जाता है और उसमें दो चीज़ें जवान होती जाती हैं एक माल व दूसरी उ़म्र की हिर्स (मुस्लिम–सही–3/66-ह०–2410)
(इब्ने माजा–सुनन–3/382-ह०–4234)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/349-ह०–7931)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/240-ह०–10262)

इन्सान के नफ़्स को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भरती

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर आदमी के पास दो वादियाँ भर कर माल हो तो फिर भी उस की ख़्वाहिश ये होती है कि काश एक वादी माल और होता इन्सान के नफ़्स को क़ब्र की मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती।
(बुख़ारी–सहीह–6/52-ह०–6436)
(इब्ने माजा–सुनन–3/382-ह०–4235)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/244-ह०–10280)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6508)

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान के पास अगर सोने का एक जंगल हो फिर भी उसकी ख़्वाहिश ये होती है कि काश एक सोने का एक जंगल और होता इन्सान के मुँह और पेट को (क़ब्र की) मिट्टी के सिवा कोई भी चीज़ नहीं भर सकती। (बुख़ारी–सहीह–6/52-ह०–6438)
(मुस्लिम–सहीह–3/67-ह०–2445)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/195-ह०–2337)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/243-ह०–10274)

माल की हिर्स दीन को बर्बाद देती है

➡हज़रत काअ़ब बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो भूके भेड़िये बकरियों के रेबड़ में छोड़ दिये जाये तो वो उसको इतना बर्बाद नहीं करेंगे जितना कि माल इन्सान के दीन को बर्बाद करता है माल व जाह की हिर्स के वजह से। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/216-ह०–2376)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/280-ह०–ह०–10428)
(इब्ने अबी शैबा–10/473-ह०–35521)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी का माल के लिये जो हिर्स होता है या दुनियावी शरफ़ व इज़्ज़त का जो हिर्स होता है वो उन दो भूके भेड़ियों से ज़्यादा शदीद होता है जो बकरियों के रेबड़ में छोड़ दिये जायें।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/242-ह०–10264)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दो खूँखार भूके भेड़िये जो बकरियों के रेबड़ में बकरियों को खाते और उन्हें फाड़ते हैं वो भी इस क़दर तबाही और फ़साद नहीं मचाते जिस क़दर माल व शरफ़ और इज़्ज़त की मुहब्बत व तलब आदमी के दीन को तबाह व बर्बाद करती है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/84-ह०–5771)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/242-ह०–10267,10268)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया का माल व शरफ़ और रुतबा तलाश करता है तो उसका फ़साद व तबाही दो खूँखार भूके भेड़ियों की तबाही व फ़साद से ज़्यादा तेज़ होती है जो बकरियों में जा पड़ें (शुअ़बुल ईमान-7/243-10270)

माल के हरीस शैतान की राह पर हैं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया अल्लाह की राह सिर्फ़ यही नहीं जो कि राहे ख़ुदा में क़त्ल हो जाये बल्कि जिसने अपने वालिदैन के लिये सई (दौड़ धूप) की वो भी अल्लाह की राह में है और जिसने अपने नफ़्स के लिये सई की ताकि उसे पाक रखे वो भी अल्लाह की राह में है

और जिसने सई की महज़ माल व दौलत बढ़ाने के लिये वो शैतान की राह में है। (अब्दर्रज़्ज़ाक़–5/271-ह०–39578) (शुअ़बुल ईमान–7/268-10377)

मालदारों के पास आना जाना नापसंदीदा फ़ेअ़्ल

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया– ऐ आयशा अगर तुम मेरे बाअ़द मेरे साथ मिलना चाहती हो तो तुम्हें चाहिये कि दुनिया के असबाब में से एक सवार मुसाफ़िर के ज़ादे सफ़र मिक़्दार तुम्हें काफ़ी रहना चहिये और तुम दौलत मंदों के पास आना जाना न करना (तिर्मिज़ी–सुनन–1/963-ह०–1780) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/274-ह०–10398)

मालदारी ग़फ़लत का बाइस है

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़राबी है बहुत माल वालों की क्योंकि अक्सर मालदार खुदा से ग़ाफ़िल हो जाते हैं मगर जो कोई अपने माल को उसकी तरफ़ लुटादे और इस तरफ़ और उस तरफ़ और इस तरफ़ आप ने चारों तरफ़ इशारा किया दाँये बाँये और आगे और पीछे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/356-ह०–4129)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा अगर तुम जन्नत में मेरा कुर्ब पाना चाहती है तो तुम फुक़रा की ज़िन्दगी गुज़ारना और मालदारों की सुहवत से बचती रहना और पुराने दुपट्टे को पहनना उस वक़्त तक तर्क न करना जब तक कि उसमें पैवन्द न लगा लो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/962-ह०–1780)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/312-ह०–6867)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदारों के पास कम जाया करो क्योंकि ये इस बात के ज़्यादा लायक़ है कि तुम अल्लाह की नेअ़मतों को हक़ीर न जानोगे। (हाकिम–6/312-ह०–7869)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर चीज़ की एक चाबी होती है और जन्नत की चाबी मिस्कीन व फुक़रा से मुहब्बत करना है क्योंकि वो सब्र करते है और रोज़े क़यामत वो अल्लाह तआ़ाला के क़रीब होंगे।
(कंजुल उम्माल–3/641-ह०–16587)
(देलमी–अल फ़िरदोस–3/376-ह०–5029)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फुक़रा के साथ बैठना अफ़ज़ल जिहाद है। (कंजुल उ़म्माल–3/636-ह०–6085)

अस्ल मालदारी दिल का ग़नी होना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माल व असवाब की कसरत से मालदारी नहीं होती बल्कि अस्ल मालदारी तो दिल का ग़नी होना है अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे बारे में मुहताजी का ख़ौफ़ नहीं है लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम माल की हवस में मुब्तिला हो जाओगे।
(बुख़ारी–सहीह–6/58-ह०–6446)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/327-ह०–7929)
(मुस्नद अहमद–4/951-ह०–10971)

रोज़ क़यामत मालदार लोग दरजात में पस्त होंगे

➡ हज़रत अबूज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो लोग बहुत मालदार हैं क़यामत के दिन उन्हीं लोगों के दर्जे पस्त (कम) होंगे मगर जिसे अल्लाह तआ़ला माल अ़ता फ़रमाये और वो अपना माल राहे ख़ुदा में इस तरफ़ और उस तरफ़ लुटाये और अपने माल से नेकियाँ कमाये और वो हलाल तरीक़े माल से कमाये। (इब्ने माजा–सुनन–3/356-ह०–4130)
(मुस्लिम–सहीह–3/31-ह०–2305)

फ़क़ीर मोमिन मालदार से बेहतर

➡ हज़रत सहल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास से गुज़रा तो आपने लोगों से पूछा कि तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहते हो तो उन्होंने कहा कि ये शख़्स शरीफ़ तरीन आदमी है और ये इस क़ाबिल है कि अगर किसी से रिश्ता मांगे तो इसको रिश्ता मिल जाये और अगर ये किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कुबूल की जाये और ये अगर कोई बात कहे तो इसकी बात मानी जाये फिर हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ख़ामोश हो गये फिर दूसरा आदमी गुज़रा तो आपने पूछा कि तुम लोग इसके बारे में क्या कहते हो वो बोले या रसूलल्लाह ये फुक़रा मुसलमानों में से है ये तो इस क़ाबिल है कि ये अगर किसी शख़्स से रिश्ता मांगे तो इसे कोई रिश्ता नहीं देगा और अगर ये किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कोई भी कुबूल नहीं करेगा और अगर ये कुछ भी कहे तो कोई भी इसकी बात को नहीं सुनेगा तो फिर आपने फ़रमाया कि ये फ़क़ीर उस मालदार जैसे तमाम रुये ज़मीन के लोगों से बेहतर है।

(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/294-ह०–10481)
(बुख़ारी–सहीह–6/59-ह०–6447,5091)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/327-ह०–7929)
(इब्ने माजा–सुनन–3/352-ह०–4120)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक मुजरिम लोग ईमान वालों का (दुनिया में) मज़ाक़ उड़ाया करते थे और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आँखों से इशारा बाज़ी करते थे और जब अपने घर वालों की तरफ़ लौटते तो (मोमिनों की तंगदस्ती और अपनी खुशहाली का मुवाज़ना करते) और दिल लगी करते हुये पलटते थे और जब ये (मग़रुर लोग) उन (कमज़ोर हाल मोमिनों) को देखते तो कहते यक़ीनन ये लोग राह से भटक गये हैं। (सू०–मुताफ़िफ़्फ़ीन–83/29 ता-32)

फ़क़ीर होकर माँगने से बचने वालों को अल्लाह पसंद फ़रमाता है

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला पसंद फ़रमाता है अपने उस मोमिन बन्दे को जो फ़क़ीर होने के बावुजूद माँगने से बचने वाला हो और अ़यालदार हो। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/303-ह०–10509)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कौन है जो मुझे ये ज़मानत दे कि वो लोगों से कभी कुछ नहीं मांगेगा तो मैं उसके लिये जन्नत की ज़मानत दूँ। (अबू दाऊद–सुनन–2/309-ह०–1643)
(नसाई–सुनन–2/179-ह०–2594)

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वालों पर रश्क करना मुस्तहसन है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया सिर्फ़ दो आदमियों पर रश्क करना मुस्तहसन है एक वो शख़्स कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया हो और वो उसको हक़ के रास्ते में ख़र्च करे और दूसरा वो शख़्स कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्म दिया हो और फिर वो उस इ़ल्म के मुताबिक़ फ़ैसला करे और लोगों को ताअ़लीम दे। (बुख़ारी–सहीह–1/126-ह०–73)
(मुस्लिम–सहीह–2/149-ह०–1896)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ाबिले रश्क तो वो शख़्स है जिसे अल्लाह तआ़ला माल दे और वो राहे हक़ में ख़र्च करे।
(बुख़ारी–सहीह–2/149-ह०–1409)

➡ हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तुम ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सद रिज़ाये इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जोयगा हत्ता कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक़्मा–

डालते हो उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–1/112-ह०–56)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6555)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मर्द अपने ऊपर व अपनी बीवी पर और अपने बच्चों पर और अपने ख़ादिम पर जो भी ख़र्च करे वो सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–1/112-ह०–55)
(इब्ने माजा–सुनन–2/127-ह०–2138)

➡ हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी का अपने घर वालों पर ख़र्च करना सद्क़ा है।
(मुस्लिम–सहीह–3/39-ह०–2322)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1053-ह०–1965)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे घर वालों का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर हक़ है व तुम्हारी जान (नफ़्स) का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है (मुस्लिम–3/163-ह०–2743)
(अबू दाऊद–सुनन–2/841-ह०–2427,1369)
(नसाई–सुनन–2/106-ह०–2401)

जो अल्लाह के वास्ते से माँगे उसे दो

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह के वास्ते अमान माँगे उसको अमान दो और जो शख़्स अल्लाह के नाम से सुवाल करे तो उसे दो और जो तुम्हारी दाअ़वत करे तो उसकी दाअ़वत कुबूल करो और जो तुम्हारे साथ एहसान करे तो उसका बदला दो और अगर बदला देने के लिये कोई चीज़ न पाओ तो उसके हक़ में दुआ़ करो हत्ता कि तुम समझ लो कि उसके एहसान का बदला दे दिया है (नसाई–2/168-ह०–2571) (अबू दाऊद–सुनन–2/328-ह०–1672,5109)

➡हज़रत इब्ने बुजीद अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम माँगने वाले को कुछ सद्क़ा देकर रुख़सत करो चाहे जला हुआ (घोड़े वग़ैराह का) खुर ही क्यों न हो। (नसाई–सुनन–2/168-ह०–2569)

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह के नज़दीक सबसे बदतरीन शख़्स वो है कि जिससे अल्लाह तआ़ला का वास्ता देकर माँगा जाये फिर भी वो न दे। (नसाई–सुनन–2/169-ह०–2573)

कम माल वाला क़बिले रश्क है

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे अहबाब में से मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा क़ाबिले रश्क वो मोमिन है जो कम माल वाला हो और नमाज़ में उसका हिस्सा ज़्यादा हो और वो अपने रब की अच्छी इ़बादत व इताअ़त करता हो और लोगों में वो गुमनाम हो और उसका रिज़्क़ बा क़दरे ज़रुरत हो और उस पर वो क़नाअ़त करता हो।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/200-ह०–2347)

(इब्ने माजा–सुनन–3/49-ह०–4117)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–8/242-ह०–7829)

बदअ़मल पर रश्क नहीं करना चाहिये

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम किसी बद अ़मल पर किसी नेअ़मत की वजह से रश्क न करना क्योंकि तुम नहीं जानते कि मरने के बाद वो किस चीज़ से मिलने वाला है और अल्लाह तआ़ाला के पास अज़्ज़ियत देने वाली ऐसी चीज़ यानी दोज़ख़ की आग है जो फ़ना न होगी।

(इमाम बग़वी–शरह अस–सुन्ना–7/324)

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक अच्छा और बुरा होने की अ़लामत

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह मुझे ये कैसे माअ़लूम हो कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ मैं किस हालत पर हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि जो चीज़ तुम दुनिया से तलब करते हो अगर वो चीज़ तुम्हें आसानी से मिल जाये और अगर कोई चीज़ आख़िरत की तलब करो और वो तुम्हें मुश्किल से हासिल हो तो समझ लो कि तुम ख़राब हालत पर हो और जिस वक़्त दुनिया की कोई चीज़ हासिल करना तुम्हारे लिये मुश्किल हो और उमूरे आख़िरत में से कोई चीज़ हासिल करना तुम्हारे लिये आसान हो तो समझ लो कि तुम अच्छी हालत पर हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/288-ह०–10454)
(दारमी–सुनन–2/477-ह०–2779)

कामयाब बन्दे की अ़लामत

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम कुबूल किया और–

उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुवाफ़िक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर उसे क़नाअ़त दे दी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।
(मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०–2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2348,2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138,)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10345)

माल की ज़कात अदा न करने वालों पर अल्लाह का अ़ज़ाब

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई सोने और चाँदी का मालिक है और वो उसकी ज़कात अदा नहीं करता तो क़यामत के दिन उसका माल तख़्तियों की शक्ल में दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा फिर उस तपे हुये माल से उसकी पेशानी व उसकी पीठ और उसकी कर‘वटों को दाग़ा जायेगा और जब वो ठन्डी हो जायेंगी तो उन तख़्तियों को दोबारा गर्म किया जायेगा उस दिन ये अ़मल उसके साथ बराबर किया जायेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे और उस दिन की मिक़्दार पचास हज़ार साल है और कोई उँटों वाला ऐसा नहीं जो कि उँटों की ज़कात अदा नहीं करता मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटा दिया–

जायेगा और वो ऊँट अपने खुरों से उसको रौंधेंगे और जब उस पर आख़िरी ऊँट गुज़र जायेगा तो पहले वाला ऊँट आ जायेगा और दोबारा रौंधेंगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ाला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे और कोई बकरियों वाला ऐसा नहीं जो उनकी ज़कात अदा नहीं करता हो मगर ये कि उसको एक हमवार ज़मीन पर औंधा करके लिटाया जायेगा फिर वो बकरियाँ आयेंगी और वो अपने खुरों से उसको रौंधेंगी और सींगों से मारेंगी और जब उस पर आख़िरी बकरी गुज़र जायेगी तो पहले वाली बकरी आ जायेगी और दोबारा रौंधेंगी यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ाला अपने बन्दों का फ़ैसला कर दे (मुस्लिम–सहीह–3/21-ह०–2290)
(अबू दाऊद–सुनन–2/318-ह०–1658)
(बुख़ारी–सहीह–1/145-ह०–1402)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/375-ह०–617)
(नसाई–सुनन–2/120-ह०–2444)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मालदार हो और माल की ज़कात अदा न करे तो वो माल रोज़े कयामत एक गंजे सांप की शक्ल में उसके गले का तौक़ होगा और वो उससे भागेगा और वो साँप उसका पीछा करेगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयते करीमा तिलावत फ़रमाई जो लोग उस (माल व दौलत) में से राहे खुदा में ख़र्च करने से

बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अ़ता फ़रमाया वो हरगिज़ उस बुख़्ल को अपने हक़ में बेहतर ख़्याल न करें बल्कि ये उनके हक़ में बहुत बुरा है अ़नक़रीब रोज़े क़यामत उनके गले में उस माल का तौक़ पहनाया जायेगा जिसमें वो बुख़्ल करते है (सू०–आले इमरान–3/180)
(नसाई–सुनन–72/120-ह०–2445)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने ख़ज़ाना (माल) छोड़ा तो रोज़े कयामत वो माल गंजा सांप बनकर आयेगा जिसकी आँखों के ऊपर दो सियाह नुक़्ते होंगे माल का मालिक उससे भागेगा लेकिन वो सांप उसे पकड़ लेगा और कहेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जो तू अपने बाअ़द वालों के लिये छोड़ आया था अल्लाह की क़सम वो उसका पीछा करता रहेगा यहाँ तक कि ख़ज़ाने का मालिक अपना हाथ लम्बा करेगा तो वो साँप उसे अपने मुँह का लुक़्मा बना लेगा और फिर वो उसके सारे जिस्म को चबायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/321-ह०–6957)
(नसाई–सुनन–2/36-ह०–2485)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/660-ह०–1392)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया

कि जो अपने माल की ज़कात नहीं देता वो माल क़यामत के दिन अज़दहा (बड़ा सांप) बन जायेगा और अपने मालिक के पीछे दोड़ेगा जिधर को वो भागेगा वो सांप भी उसके पीछे भागेगा फिर कहा जायेगा ये वही माल है जिसमें तू बुख़्ल करता था (यानी ज़कात, सद्क़ा ख़ैरात अदा नहीं करता था) फिर जब वो देखेगा कि ये अज़दहा मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा तो वो अज़दहे के मुँह में अपना हाथ डाल देगा फिर वो अज़दहा उस हाथ को ऐसे चबा डालेगा जैसे ऊँट चबाता है। (मुस्लिम–3/27-2297)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो ऊँट बैल और बकरियाँ रखते हों और उनकी ज़कात अदा न करें तो क़यामत के दिन वो एक चटयल मैदान में खड़ा किया जायेगा और उसको जानवर अपने खुरों व सीगों से मारेंगे जो मालदार अपनी दौलत की ज़कात अदा नहीं करेगा तो क़यामत के दिन वो दौलत एक गंजे साँप की शक्ल में आयेगी वो उसको देखकर भागेगा और वो गंजा सांप उसके पीछे पीछे कहता हुआ भागेगा कि मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ जिससे तू दुनिया में कंजूसी करता था जब वो शख़्स देखेगा कि भागने से अब कोई फ़ायदा नहीं तो वो मजबूर होकर अपना हाथ उस गंजे सांप के मुँह में डाल देगा और वो अज़दहा (बड़ा सांप) उसके हाथ को चबायेगा।
(नसाई–सुनन–2/127-ह०–2458)

राहे खुदा में माल ख़र्च न करने वालों को फ़रिश्तों की बद्दुआ़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर रोज़ फ़रिश्ते नाज़िल होकर दुआ़ करते हैं ऐ अल्लाह ख़र्च करने वालों को उसका बदला अ़ता फ़रमां और ख़र्च न करने वालों के माल को ज़ाए कर दे। (बुख़ारी–सहीह–2/170-ह०–1442)

➡ हज़रत उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इब्ने आदम अगर तू ख़र्च करे तो ये तेरे लिये बेहतर है अगर तू बुख़्ल करे तो ये तेरे लिये बदतर है और अपने अह्ल व अ़याल से इब्तिदा कर है और ऊपर वाला हाथ नीचे वाला हाथ से बेहतर है ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला है और नीचे वाला हाथ मांगने वाला है।
(मुस्लिम–सहीह–2/375-ह०–2388)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते है कि हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब तुम सेर हो तो भूके को याद करो और जब तुम ग़नी हो तो फुक़रा को याद करो। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/186-ह०–3393)

हराम माल कमाने वाले से रब तआ़ला सख़्त नाराज़ होता है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया को हलाल तरीक़े पर तलब करे और सुवाल करने व भीक मांगने से बचने के लिये व अपने अह्ल व अ़याल की कफ़ालत और अपने पड़ोसी पर शफ़क़त के लिये सई (दौड़ धूप) करे और हलाल माल हासिल करे तो वो रब तआ़ला से क़यामत दिन इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह रौशन होगा और जिसने दुनिया को हराम तरीक़ से तलब किया ताकि वो मालदार हो जाये और लोगों पर फ़ख़्र करे और उनको अपनी शान दिखाये तो वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि अल्लाह तआ़ला उस पर सख़्त नाराज़ व गज़ब नाक होगा।
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–10/266-ह०–10374,10375)

कौन सा माल जमाअ़ करना बेहतर है

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब ये आयत नाज़िल हुई तो उस वक़्त हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ सफ़र में थे तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या–रसूलल्लाह कि सोने और चांदी की मज़म्मत और

उसका हाल हमें माअ़लूम हो गया लेकिन अगर हम जानते कि कौन सा माल बेहतर है तो हम उसी को जमाअ़ करते तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि बेहतर माल ज़िक्र करने वाली ज़बान है और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीवी जो आदमी के ईमान और आख़िरत के कामों पर मददगार हो (यानी नेक बीवी की सुहबत के सबब आदमी में ताअ़त व इ़बादत का शौक बढ़े)।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/971-ह०–3094)
(कंजुल उ़म्माल–2/128-ह०–4312,4313)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला आया उस काफ़िले में गन्दुम व आटे और खाने से लदे हुये सात सौ ऊँट थे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि–अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने शोर सुना तो इस बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हें बताया गया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला वापस आया है और उसमें गन्दुम, आटे और तुआ़म से लदे हुये सात सौ ऊँट है हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को इरशाद फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ जन्नत में घिसटते हुये दाख़िल होंगे जब ये बात–

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ को माअ़लूम हुई तो आप ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से कहा कि ऐ मेरी मां मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने तमाम ऊँट अपने साज़ो सामान के साथ अल्लाह की राह में सद्क़ा कर दिये। (इब्ने असीर-उसदुल ग़ाबा फी माअ़रिफ़ तुस्सहाबा-अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़-2/438)

हलाल माल में बरकत होती है और हराम माल अफ़सोस का बाइस होगा

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स माल को हक़ के साथ ले और उसको हक़ के साथ रखे तो उसका माल उसके लिये बेहतरीन मददगार है और ऐसे माल में बरकत दी जाती है और जो माल को नाहक़ व नाजाइज़ तरीक़े से हासिल करे तो वो उन जानवरों या इन्सानों की तरह है कि जो खाता है मगर कभी सेर नहीं होता और मालदार वो है जो अपने माल में से मिस्कीन, यतीम और मुसाफ़िर को दे और जो माल को लालची दिल के साथ हासिल करे वो उसके मिस्ल है जो खाये मगर कभी सेर न हो सके और उसको रोज़े क़यामत अपने माल पर हसरत होगी (कि काश मैंने जाइज़ तरीक़े से माल कमाया होता और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया होता)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/248-ह०-10289,10290)

माल जमाअ़ करने से दुनिया की मुहब्बत पैदा होती है

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़ीआ़ को मत जमाअ़ करो कि तुम्हें दुनिया से मुहब्बत व रग़बत हो जायेगी (ज़ीआ़ से मुराद हर क़िस्म का माल बाग़, खेत, ज़मीन, जायदाद वग़ैराह)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/190-ह०–2328)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/271-ह०–10391)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/761-ह०–710)

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे माल व सूरतों को नहीं देखता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे माल और सूरतों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आअ़मालों को देखता है।
(मुस्लिम–सहीह–5/42-ह०–6543)
(इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4143)
(बैहक़ी–शुअ़बल ईमान–7/293-ह०–10477)

रोज़े क़यामत हर मालदार व मुहताज की आरज़ू

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई भी मालदार और मुहताज ऐसा नहीं जो क़यामत में ये आरज़ू न करे कि काश अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया में उसकी हाजत के मुताबिक़ रिज़्क़ देता और बहुत मालदार न करता क्योंकि वो फ़ुक़रा के मरातिब को देखेंगे जो उन्हें अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमायेगा। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4140)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/269-ह०–10378)

क़यामत के दिन नेअ़मतों के बारे में सुवाल होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक तवील हदीस में फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है क़यामत के दिन तुमसे आज की नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जायेगा।
(मुस्लिम–सहीह–4/159-ह०–5313)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/210-ह०–2369)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि–

"तुमसे नेअ़मतों के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल होगा" (सू०–तकासुर–102/8) तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह किस नेअ़मत के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल होगा हमारे पास तो यही दो चीज़ें हैं खजूर और पानी और दुश्मन हमारे सर पर है और तलवारें हमारे कन्धों पर हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये ज़रुर होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/880-ह०–3357)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन एक शख़्स को लाया जायेगा और अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा क्या मैंने तुझे इज़्ज़त व सरदारी और माल व बीवी व औलाद नहीं दिये थे तो वो कहेगा क्यों नहीं फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या तुम ये समझते थे कि तुम मुझसे नहीं मिलोगे वो जवाब में कहेगा जी हाँ फिर अललाह तआ़ला फ़रमायेगा आज मैं उसी तरह तुम्हें भूल जाऊँगा जिस तरह तुम मुझे भूल गये थे।
(मुस्लिम–सहीह–5/486-ह०–7438)
(अबू दाऊद–सुनन–6/590-ह०–4730)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन सबसे पहले बन्दे से जिस नेअ़मत के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया जायेगा वो ये है क्या हमने तुम्हारे–

जिस्म को तन्दरुस्त नहीं बनाया और तुमको ठन्डे पानी से सैराब नहीं किया था।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/880-ह०–3358)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/506-ह०–7364)

➡हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान क़यामत के दिन उस वक़्त तक अपने रब के पास खड़ा रहेगा जब तक कि उससे पाँच बातों के बारे में सुवाल न हो जाये (1) उसने अपनी ज़िन्दगी किस काम में गुज़ारी (2) अपनी जवानी को किन कामों में सर्फ़ किया (3) माल किस तरह कमाया और (4) अपने माल को तूने कहाँ ख़र्च किया (5) और अपने इ़ल्म पर क्या अ़मल किया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/243-ह०–2416)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बारगाहे खुदावन्दी में एक शहीद पेश होगा तो अल्लाह तआ़ाला उसको अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो शहीद उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा कि तुमने कौन सा अ़मल किया यानी इन नेअ़मतों के शुक्र में तो वो कहेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी राह में जिहाद किया यहाँ तक कि मैं शहीद हो गया फिर हुक्म होगा कि तू झूटा है बल्कि तूने जिहाद इस–

वजह से किया था कि तू लोगों में बहादुर मशहूर हो जाये और मख़्लूक़ कहे कि फुलां शख़्स बड़ा बहादुर है और तेरी बहादुरी दुनिया में मशहूर हो गई फिर उस शहीद के लिये हुक्म होगा कि इसे दोज़ख़ में ले जाओ तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे

फिर वो शख़्स पेश होगा जिसने इ़ल्मे दीन सीखा और दूसरों को सिखाया होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर रब तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने इन नेअ़मतों के बदले क्या आअ़माल अंजाम दिये तो वो शख़्स जवाब देगा ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिये इ़ल्म सीखा और सिखाया उस पर हुक्म सुनाया जायेगा कि तू झूठा है बल्कि तूने इ़ल्म इसलिये सीखा और सिखाया ताकि तू दुनिया में आ़लिम मशहूर हो जाये और तूने कु़रान इस वजह से पढ़ा ताकि लोग तुझको क़ारी कहें और बिल आख़िर तू इस नाम से शोहरत हासिल कर चुका फिर उस शख़्स को दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ की आग में डाल देंगे और वो शख़्स दोज़ख़ की आग में जा गिरेगा

फिर वो शख़्स हाज़िर होगा जिसको अल्लाह तबारक तआ़ला ने दुनिया में माल व दौलत अ़ता की होगी तो अल्लाह तआ़ला उस शख़्स को अपनी

नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर हुक्म होगा कि तूने इन नेअ़मतों के बदले क्या अ़मल किये वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी रिज़ा और खुशनूदी हासिल करने के लिये मैंने अपने माल व दौलत को तेरी राह में ख़र्च किया उस पर हुक्म होगा कि तू झूठा है बल्कि तू सख़ी कहलाने की वजह से ख़र्च करता था और तू दुनिया में सख़ी मशहूर हो गया फिर उस शख़्स को दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे।
(नसाई–सुनन–2/349-ह०–3142)

–: ताअ़मीरात वबाल है :–

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर ताअ़मीर (मकानात वग़ैराह) अपने मालिक के लिये वबाल का बाइस हैं सिवाये उसके जिसके बग़ैर चारा न हो। (अबू दाऊद–सुनन–6/892-ह०–5237)

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक गोल मकान के दर'वाज़े की तरफ़ से गुज़रे जो कि एक अन्सारी का था आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये क्या है तो लोगों ने अ़र्ज़

किया कि ये गोल बंगला है जिसको फुलां शख़्स ने बनबाया है फिर आपने फ़रमाया कि जो माल ऐसी चीज़ों में ख़र्च हो वो क़यामत के दिन वबाल होगा (इब्ने माजा–सुनन–3/364-ह०–4161)

मकान की ताअ़मीरात पर कोई अज्र नहीं मिलेगा

➡ हज़रत हारिसा (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे को हर एक जाइज़ ख़र्च करने का सवाब मिलता है मगर इमारत वग़ैराह में ख़र्च करने का सवाब नहीं मिलता। (इब्ने माजा–सुनन–3/365-ह०–4163) (बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/606-ह०–65620)

इन्सान का माल वही जो आगे भेजा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तेरा माल वो है जो नेक आअ़माल की सूरत में तूने आगे भेजा और जो माल तू अपने पीछे छोड़ेगा वो माल तेरा नहीं है बल्कि तेरे वारिसों का होगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/54-ह०–6442)
(नसाई–सुनन–2/558-ह०–3646)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/331-ह०–7913)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6509)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि उन्होंने एक बकरी को ज़िब्हा किया तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा कि उसमें से कुछ बाक़ी है तो आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कहा कि एक शाना बाक़ी है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस शाना के सिवा सब बाक़ी है यानी जो अल्लाह की राह दे दिया वो बाक़ी है और जो अपने लिये रख लिया वो फ़ानी है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/282-ह०–2470)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मरने वाला मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि इसने आगे क्या भेजा और लोग कहते हैं कि इसने पीछे क्या छोड़ा। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/292-ह०–10445)

बन्दे का माल तीन तरह का होता है

➡ हज़रत मुतरफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उस वक़्त आप अल्हाकुमुत्तकासुर की तिलावत फ़रमां रहे थे फिर आप ने फ़रमाया कि बेशक बन्दा कहता है कि मेरा माल मेरा माल मगर उसका माल तीन तरह का होता है कि जो–

उसने खा लिया और हज़्म कर लिया और जो उसने पहन लिया उसे फाड़ लिया या बोसीदा हो गया और जो माल (राहे खुदा में) आगे भेज दिया और इनके अ़लावा जो भी माल है वो सब छोड़ने वाला है और वो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ जाने वाला है। (मुस्लिम–सहीह–5/477-ह०–7420,7422)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/197-ह०–2342)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6510)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/246-ह०–10282)
(इब्ने अबी शैबा–10/463-ह०–35480)

–: बन्दे के तीन दोस्त :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बन्दे के तीन दोस्त होते हैं एक दोस्त कहता है कि जब तक तुम ज़िन्दा रहोगे मैं तुम्हारे साथ हूँ जब तुम मर जाओगे तो मेरा तेरा वास्ता ख़त्म हो जायेगा ये उसका माल है और एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ उस वक़्त तक हूँ जब तक कि तू क़ब्र तक न पहुँचे और जब तू क़ब्र में पहुँच जायेगा तो न तू मेरा न मैं तेरा ये उसके अह्ल व अयाल हैं और एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ हमेशा रहूँगा जहाँ तू जायेगा मै तेरे साथ चलूँगा जहाँ तू दाख़िल होगा मैं भी दाख़िल होऊँगा जहाँ से तू निकलेगा मैं भी निकलूँगा ये उसके आअ़माल हैं (कंजुल उ़म्माल–8/294-42742)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/292-ह०–10476)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/745-ह०–1375)

मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं एक उसके अ़ज़ीज़ व अक़ारिब दूसरा उसका माल और तीसरा उसके आअ़माल फिर दो वापस लौट आती हैं और एक मुर्दे के साथ रह जाती है मुर्दे के साथ उसके घर वाले और माल और आअ़माल जाते हैं तो घर वाले और माल वापस लौट आते हैं और मुर्दा अपने अच्छे और बुरे आअ़माल के साथ क़ब्र में रह जाता है। (नसाई–सुनन–1/630-ह०–1914)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2379)
(बुख़ारी–सही–6/90-ह०–6514)
(मुस्लिम–सही–6/469-ह०–7424)

–: तीन लोगों की आज़माइश :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बनी इसराईल के लोगों में तीन आदमी थे एक कोढ़ी सफ़ेद दाग़ वाला दूसरा गंजा और तीसरा अन्धा था अल्लाह तआ़ला ने चाहा कि उन्हें आज़माये पस अल्लाह तआ़ला ने उन तीनों के पास एक फ़रिश्ता भेजा सो वो सफ़ेद दाग़ वाले के पास आया और कहा–

कि तुझे कौन सी चीज़ बहुत प्यारी है उसने कहा अच्छा रंग व अच्छी खाल और मुझसे ये बीमारी दूर हो जाये क्योंकि इस बीमारी की वजह से लोग मुझसे घिन करते हैं तो फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा तो उसकी सब बीमारी दूर हो गयी और उसे अच्छा रंग व अच्छी खाल दी गई फिर फ़रिश्ते ने कहा कि अब ये बता कि तुझको कौन सा माल सबसे ज़्यादा पसंद है तो उसने कहा कि मुझे ऊँट सबसे ज़्यादा पसंद है तो फिर उसको दस महीने की हामला (गाभन) ऊँटनी दी और कहा अल्लाह तआ़ला तेरे लिये इसमें बरकत अ़ता फ़रमाये।

फिर वो फ़रिश्ता गंजे आदमी के पास गया और उसने कहा कि कौन सी चीज़ तुझको बहुत पसंद है उसने कहा अच्छे बाल और ये बीमारी मुझसे जाती रहे जिसके सबब लोग मुझसे घिनाते हैं फिर उस फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा तो उसकी बीमारी दूर हो गई और उसको अच्छे बाल मिल गये फिर फ़रिश्ते ने कहा कि कौन सा माल तुझे सबसे ज्यादा पसंद है तो उसने कहा कि गाय सो फ़रिश्ते ने उस को हामला (गाभन) गाय दी और कहा अल्लाह तआ़ला तेरे माल में बरकत दे

फिर फ़रिश्ता अन्धे के पास गया और कहा कि तुझे कौन सी चीज़ बहुत पसंद है उसने कहा कि अल्लाह तआ़ला मेरी आंखो में रोशनी दे दे ताकि इसके सबब से मैं लोगों को देख सकूँ फिर फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा सो अल्लाह तआ़ला

ने उसकी आंखो में रोशनी दी फिर उस फ़रिश्ते ने कहा कि कौन सा माल तुझको पसंद है उसने कहा भेड़ बकरी तो उसको हामला (गाभन) बकरी मिली फिर ऊँटनी और गाय और बकरी ने बच्चे दिये फिर होते होते सफ़ेद दाग़ वाले के जंगल भर ऊँट हो गये और गंजे के जंगल भर गाय बैल हो गये और अन्धे के जंगल भर बकरियाँ हो गई।

फिर कुछ वक़्त के बाअ़द वही फ़रिश्ता सफ़ेद दाग़ वाले के पास गया और कहा कि मैं मुहताज आदमी हूँ सफ़र में मेरे तमाम असबाब कट गये (यानी तदबीरें जाती रहीं और माल व असबाब न रहा) सो आज मुझे अपनी मन्जिल पर पहुँचना मुम्किन नहीं सो मैं तुझसे अल्लाह के नाम पर सुवाल करता हूँ कि जिसने तुझे खूबसूरत रंग और खूबसूरत खाल व ऊँट का माल अ़ता किया है सो मुझे सिर्फ़ एक ऊँट दे दे जो मेरे सफ़र में मेरे काम आये तो उस कोढ़ी सफ़ेद दाग़ वाले ने जवाब दिया कि मेरे ऊपर बहुत ज़्यादा हुकूक़ हैं (यानी मैं कर्ज़दार हूँ या घरबार के ख़र्च की वजह से मेरे पास ज़्यादा माल नहीं है जो मैं तुझको दूँ

फिर फ़रिश्ते ने कहा कि मैं तुझे जानता हूँ क्या तू कोढ़ी व मुहताज न था और लोग तुझसे नफ़रत करते थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तुझे ये माल अ़ता फ़रमाया वो कोढ़ी कहने लगा कि ये माल तो मुझे मेरे बाप दादा से विरासत में मिला है फ़रिश्ते ने कहा कि अगर तू झूठ कह रहा है–

तो अल्लाह तआ़ला तुझे फिर से उसी तरह कर दे जिस तरह तू पहले था फिर फ़रिश्ता गंजे के पास आया और उससे भी वही कुछ कहा जो कि कोढ़ी से कहा था फिर उस गंजे ने उस फ़रिश्ते को वही जवाब दिया जो कोढ़ी ने जवाब दिया था और फ़रिश्ते ने उससे भी यही कहा कि अगर तू झूठ बोल रहा है तो अल्लाह तआ़ला तुझे उसी तरह कर दे जिस तरह तू पहले था।

फिर फ़रिश्ता अंधे के पास गया और कहा कि मैं एक मिस्कीन और मुसाफ़िर आदमी हूँ और मेरे सफ़र के तमाम असबाब ख़त्म हो गये और मैं आज सिवाये अल्लाह की मदद के बग़ैर अपनी मंजिले मक़सूद पर नहीं पहुँच सकता सो मैं तुझसे उसी अल्लाह के नाम पर एक बकरी का सुवाल करता हूँ कि जिसने तुझे बीनाई अ़ता की तो वो अन्धा कहने लगा बिला शुबा मैं अन्धा था फिर अल्लाह तआ़ला ने मुझे मेरी बीनाई अ़ता की और तू इन बक़रीयो में से राहे खुदा में जितना चाहे उतना ले जा खुदा की क़सम मैं आज तुम्हारा हाथ न रोकूँगा तेरा जितना जी चाहे उतना ले जा और जितना जी चाहे उतना छोड़ दे सो फ़रिश्ते ने अन्धे से कहा तुम अपना माल रहने दो क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुम तीनों आदमियों को आज़माया था तो अल्लाह तआ़ला तुझसे राज़ी हो गया है और तेरे दोंनों साथियों से नाराज़ हो गया। (मुस्लिम–सहीह–6/471-ह०–7431)

तीसरा हिस्सा

–: क़नाअ़त की फ़ज़ीलत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम कुबूल किया और उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुवाफ़िक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर उसे क़नाअ़त दे दी तो वो शख़्स कामयाब हो गया (मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०-2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2348,2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138,)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10345)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदारी बहुत असबाब रखने से नहीं होती बल्कि मालदारी तो ये है कि दिल बेपर‘वाह हो और जो कुछ अल्लाह तआ़ला दे उस पर कनाअ़त करे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4137)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला से हम कलामी की तो अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब तेरे बन्दों में तेरे नज़दीक कौन सबसे ज़्यादा महबूब है तो अल्लाह–

तअ़ाला ने फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा मेरा ज़िक्र करे फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब तेरे बन्दों मे कौन सबसे ज़्यादा बेहतर फ़ैसला करने वाला है तो अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया जो शख़्स अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ फ़ैसला दे जैसा कि वो दूसरों के ख़िलाफ़ फ़ैसला देता है फिर उन्होंने रब तअ़ाला से अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब तेरे बन्दों में से तेरे नज़दीक कौन शख़्स सबसे ज़्यादा ग़नी है तो अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी अ़ता कर्दा नेअ़मत पर खुश रहे यानी वो क़नाअ़त करे। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10348)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेहतरीन ज़िक्र वो है जो आहिस्ता और मख़्फ़ी हो और बेहतरीन रिज़्क़ वो है जो कि पूरा हो जाये यानी उस पर क़नाअ़त हासिल हो जाये। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/266-ह०–10369)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो जिसमें अल्लाह तअ़ाला ने बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी है। (सू०–निसा–4/32)

अपने से कमतर को देखने से अल्लाह की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया में अपने से कमतर वाले लोगों को देखो और अपने से ज़्यादा वाले लोगों को न देखो इस तरह तुम्हें अल्लाह तआ़ला की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4142)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ कि आले रसूल को बाक़दरे ज़रुरत रिज़्क़ अ़ता हो

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने दुआ़ फ़रमाई कि ऐ मेरे रब आले मुहम्मद को बा क़दरे ज़रुरत रिज़्क़ अ़ता फ़रमां यानी जिसको खाकर बस ज़िन्दा रह सकें।
(बुख़ारी–सहीह–6/65-ह०–6460)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/206-ह०–2361)
(इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4139)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/262-ह०–10349)
(इब्ने अबी शैबा–10/472-ह०–35519)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की ख़्वाहिश कि एक दिन खाऊँ एक दिन भूका रहूँ

➡ हज़रत अबू उ़मामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझ पर ये पेश किया कि वो मक्का की पथरीली ज़मीन को सोना बनादे तो मैंने कहा ‘‘नहीं’’ ऐ मेरे रब–

बल्कि मैं तो ये चाहता हूँ कि मैं एक दिन खाऊँ और एक दिन भूका रहूँ और जब मैं खाऊँ तो मैं तेरी हम्द व तेरा शुक्र अदा करूँ और जब मैं भूका रहूँ तो सब्र करूँ और तेरी याद करूँ।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/200-ह०–2347)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/277-ह०–10410)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की क़नाअ़त

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) चारपाई पर आराम फ़रमां रहे थे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) आये तो उन्होंने देखा कि चारपाई के निशानात आपके पहलू में नक़्श हो गये थे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हजरत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा या रसूलल्लाह आपकी चारपाई और बिस्तर की सख़्ती से आपको किस क़दर तक़लीफ़ पहुँचती है और क़ैसर व किस्रा रेशम व दीबाज के बिस्तरों पर सोते है आपने फ़रमाया ऐसा न कहो क़ैसरो किस्रा के बिस्तर दोज़ख़ में हैं और मेरा ये बिस्तर व मेरी चारपाई का अन्जाम जन्नत है। (इब्ने हिब्बान सहीह–1/756-ह०–704)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक चटाई पर लेटे हुये थे आपके और

चटाई के दरमियान कोई चीज़ न थी और आपके सर मुबारक के नीचे एक चमड़े का तकिया था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी तो मैंने देखा कि चटाई के निशानात आपके पहलू में गड़ गये थे मैं रोने लगा आपने फ़रमाया तुम किस वजह से रो रहे हो मैंने कहा कि बेशक क़ैसर व किस्रा किस क़दर ऐशो आराम में है और आप अल्लाह के रसूल है फिर आपने फ़रमाया क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं कि उनके लिये दुनिया हो और हमारे लिये आख़िरत हो (बुख़ारी–4/836-ह०-4913)
(मुस्लिम–सहीह–3/163-ह०–3691)
(इब्ने माजा–सुनन–3/360-ह०–4153)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–5/225-ह०–4188)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/178-ह०–1449)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि अन्सार की एक औ़रत ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये एक गद्दा भेजा जिसमें ऊन भरा हुआ था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे पूछा ऐ आयशा ये क्या है तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुलां अन्सारी औ़रत आप के आराम के लिये ये गद्दा दे गई है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा इसको वापस कर दो खुदा की क़सम मैं चाहूँ तो अल्लाह तआ़ला मेरे साथ सोने और चाँदी के पहाड़ों को र‘वाना कर दे।
(बैहक़ी–शुअ़बुल–ईमान–2/183-ह०–1468)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने कभी जौ की रोटी पेट भरकर नहीं खाई

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) इस दुनिया से रुख़सत हो गये लेकिन कभी जौ की रोटी पेट भर कर नहीं खाई। (बुख़ारी–सहीह–5/309-ह०–5414)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक दिन में कभी दो मर्तबा रोटी नहीं खाई यहाँ तक कि आप वफ़ात पा गये। (मुस्लिम–सहीह–6/479-ह०–7453)

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को भूक से कर'वटें बदलते और पेट को उलटते हुये देखा और बाअ़ज औक़ात तो आपको खजूर भी नहीं मिलती कि जिससे पेट भर लेते।
(इब्ने माजा–सुनन–3/361-ह०–4146)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का तीन दिन बाद पहला तुआ़म

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हज़रत सय्यदा फ़ातिमा

(रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने एक रोटी पकाई और एक रोटी का टुकड़ा लेकर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास आयीं तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पूछा कि ऐ फ़ातिमा ये रोटी का टुकड़ा कैसा है तो उन्होंने कहा कि मैंने एक रोटी पकाई थी लेकिन अकेले खाने को मेरा दिल नहीं माना इसलिये मैं इसे आपके पास ले आयी हूँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उस रोटी के टुकड़े को खा लिया और फिर फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा ये तीन दिन के बाअ़द पहला तुआ़ाम है जो तेरे बाप के पेट में उतरा है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/281-ह०–10430)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का शिकम मुबारक पर दो पत्थर बाँधना

➡ हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हम लोगों ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में भूक की शिकायत अ़र्ज़ की और हम लोगों ने अपने अपने शिकम से कपड़ा उठाया तो हम लोगों के एक एक पत्थर बंधा हुआ था सो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने शिकम मुबारक से कपड़ा उठाया तो आपके पेट मुबारक पर दो पत्थर बंधे हुये थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/215-ह०–2371)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/280-ह०–10428)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) कल के लिये कुछ भी नहीं छोड़ते थे

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) कल के लिये कुछ भी नहीं रख छोड़ते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/206-ह०–2362)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुझे ये पसंद नहीं कि मुझ पर तीन दिन गुज़र जायें और उसमें से कोई भी चीज़ मेरे पास बाक़ी रहे।
(बुख़ारी–सहीह–1/645-ह०–2389)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/282-ह०–10432)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ कि मेरी वफ़ात हालते फ़क़्र व मुहताजी में हो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ मेरे रब मुझे अपनी तरफ़ हालते फ़क़ीरी व मुहताजी में उठाना यानी मेरी वफ़ात फ़क़ीरी व मुहताजी की हालत में करना और मुझे मालदार और ग़नी बनाकर अपनी तरफ़ न उठाना और क़यामत के

दिन मुझे मिस्कीनों की जमाअ़त के साथ उठाना।
(इब्ने माजा–सुनन–3/354-ह०–4126)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/203-ह०–2352)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302-ह०–10506)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/329-ह०–7911)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का बिस्तर मुबारक

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का बिछौना चमड़े का था जिस पर आप सोते थे और उसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। (मुस्लिम–सहीह–5/292-ह०–5447)
(बुख़ारी–सहीह–6/64-ह०–6456)
(इब्ने माजा–सुनन–3/361-ह०–4151)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का तकिया मुबारक जिस पर आप आराम फ़रमाते थे वो चमड़े का था और उसमें खजूर की छाल भरी हुई थी।
(मुस्लिम–सहीह–5/292-ह०–5446)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/282-ह०–2469)

हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का लिबास मुबारक

➡ हज़रत अबू बुरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि-

अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने मेरे सामने एक तहबन्द और एक पैबन्द लगा हुआ कम्बल निकाला और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात इन्हीं कपड़ों में हुई थी।
(मुस्लिम–सहीह–5/292-ह०–5443)

रसूल व आले रसूल की क़नाअ़त

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है आप फ़रमाती हैं कि हम पर महीना गुज़र जाता कि हमारे घर चूल्हा नहीं जलता था हम सिर्फ़ पानी और खजूरों पर ही गुज़ारा किया करते थे हाँ कभी कभार थोड़ा सा दूध या गोस्त कहीं से आ जाता था।
(बुख़ारी–सहीह–6/64-ह०–6458,6459)
(मुस्लिम–सहीह–6/479-ह०–7452,7449)
(इब्ने माजा–सुनन–1/360-ह०–4144,4145)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/283-ह०–3789)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/280-ह०–2471)
(इब्ने अबी शैबा–10/480-ह०–35544)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है आप फ़रमाती हैं कि जिस वक़्त आले मुहम्मद मदीना मुनव्वरा आये तो कभी तीन दिन लगातार सालन के साथ रोटी नहीं खा सके यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम इस फ़ानी दुनिया से रुख़सत हो गये (बा वुजूद इसके कि दीन व दुनिया की बादशाहत आप

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को हासिल थी और अगर आप चाहते तो दुनिया की तमाम नेअ़मतें आपको मिल जातीं)
(बुख़ारी–सहीह–6/168-ह०–6687)
(मुस्लिम–सहीह–6/478-ह०–7443)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के अह्ल व अ़याल ने तीन दिन मुतवातिर कभी खाना सेर होकर नहीं खाया हत्ता कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की रुह क़ब्ज़ हो गयी (बुख़ारी–सही–5/289-ह०–5374)
(मुस्लिम–सहीह–6/480-ह०–7457)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/280-ह०–10420)

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) मुसलसल कई कई रातें खुद भी भूके रहा करते थे और आपके घर वालों के पास भी खाना मयस्सर नहीं होता था और आपका व आपके घर वालों का खाना जौ की रोटी थी।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/206-ह०–2360)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/279-ह०–10419)

असहाबे रसूल की क़नाअ़त

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि क़सम उस ज़ात की जिसके सिवा–

कोई माअ़बूद नहीं कि बेशक मैं पेट को भूक की वजह से ज़मीन के साथ लगा लेता था यानी पेट के बल ज़मीन पर पड़ा रहता था और मैं भूक की वजह से अपने पेट पर पत्थर बांध लेता था नीज़ फ़रमाया असहाबे सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे न उनका कोई घर था और न उनके पास माल व मताअ़ था जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास कोई सद्क़ा आता तो आप उनके पास भेज देते थे और आप उसमें से कुछ भी न लेते थे और जब आपके पास कोई हद्या आता तो उसमें से थोड़ा खुद लेते और बाक़ी सब उन्हें भेज देते थे। (शुअ़बुल ईमान–7/255-10323)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते थे तो बहुत से लोग भूक की वजह से नमाज़ में खड़े खड़े गिर पड़ते थे उनमें ज़्यादा तर असहाबे सुफ़्फ़ा थे और लोग नमाज़ में खड़े न हो सकने की वजह बयान करते यहाँ तक कि देहात के लोग उनके बारे में कहते थे कि ये मजनून और दीवाने है फिर जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो उनकी तरफ़ मुतावजे हो जाते और फ़रमाते थे कि अगर तुम लोग जान लेते जो कुछ तुम्हारे लिये अल्लाह तआ़ाला के यहाँ अज्र व इनाअ़मात हैं तो तुम ये चाहते कि तुम्हारा फक़्र व फ़ाक़ा इससे भी ज़्यादा हो जाये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/209-ह०–2368)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/254-ह०–10316,10441)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि असहाबे सुफ़्फ़ा 70 आदमी थे जिनके पास ओढ़ने की चादरें तक न थीं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/255-ह०–10320)

➡ हज़रत सहल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुसलमान हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ नमाज़ें पढ़ते थे और उनके तहबन्द छोटे होने की वजह से उनकी गर्दनो से बंधे होते थे इसलिये औ़रतों को हुक्म दिया गया था कि वो अपने सर सज्दे से उस वक़्त तक न उठाया करें यहाँ तक कि मर्द सीधे होकर बैठ जाये।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/254-ह०–10319)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हमराह जिहाद किया करते थे उन दिनों हमारा खाना ख़ारदार दरख़्त की पत्तियाँ हुआ करता थीं जिसकी वजह से हम बकरियों की तरह मेंगनियां करते थे।
(बुख़ारी–सहीह–5/308-ह०–5412)
(मुस्लिम–सहीह–6/474-ह०–7432,7437,)
(इब्ने माजा–सुनन–3/363-ह०–4156)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ चले और हम में से हर

एक को खुराक के लिये हर रोज़ एक ही खजूर मिलती थी हम उसको चूस लेते और हम अपनी कमानों से दरख़्त के पत्ते झाड़ते और उनको खाते यहाँ तक कि हमारे गलफड़े और मसूड़े ज़ख़्मी हो गये थे। (मुस्लिम–सहीह–6/501-ह०–7517)

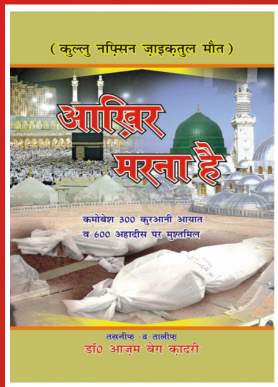
➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि लोग भूके थे और वो सात आदमी थे तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझको सात खजूरें दी हर शख़्स के लिये एक खजूर। (इब्ने माजा–सुनन–3/363-ह०–4157)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हम तीन सौ आदमियों को जिहाद के लिये र'वाना किया हमारा तोशा हमारी गर्दनो पर था और हमारा तौशा ख़त्म हो गया हत्ता कि हर शख़्स को हमसे एक खूजर मिलती थी तो लोगों ने कहा कि ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह भला एक खजूर से आदमी का क्या बनता होगा तो उन्होंने कहा जब वो भी न रही तो उस वक़्त हमें उसकी क़दर माअ़लूम हुई आख़िर हम समुन्दर के किनारे आये वहाँ हमने देखा मछली पड़ी है जिसको दरिया ने फेंक दिया है हम उसमें से अठारह दिन तक खाते रहे। (बुख़ारी–सहीह–3/311-ह०–2983)
(इब्ने माजा–सुनन–3/362-ह०–4159)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/285-ह०–2475)
(नसाई–सुनन–3/251-ह०–4358)

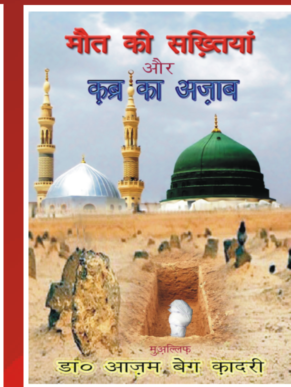
अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इनायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

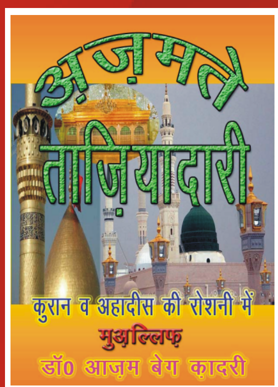
★★★★★

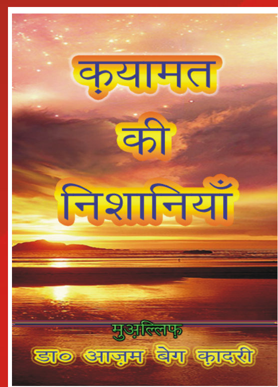




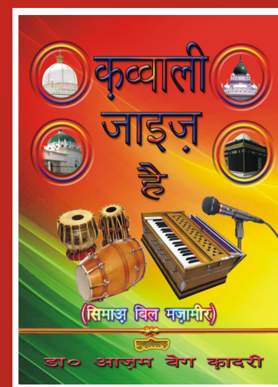


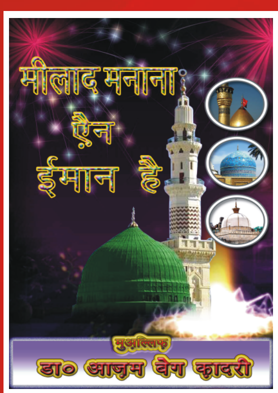










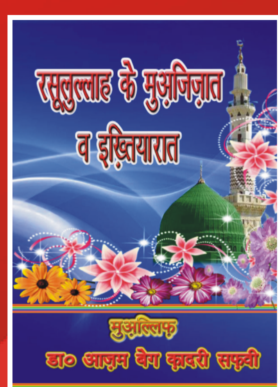




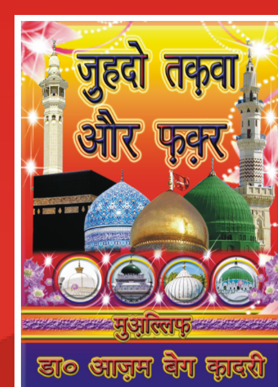












मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)